श्रीराघवगीतगुंजन

# ★ श्री राघव गीत गुंजन ★

रचयिता
सर्वाम्नाय तुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्री रामभद्राचार्य जी महाराज
तुलसीपीठ, आमोदवन श्री चित्रकूटधाम
जनपद, सतना (म० प्र०)
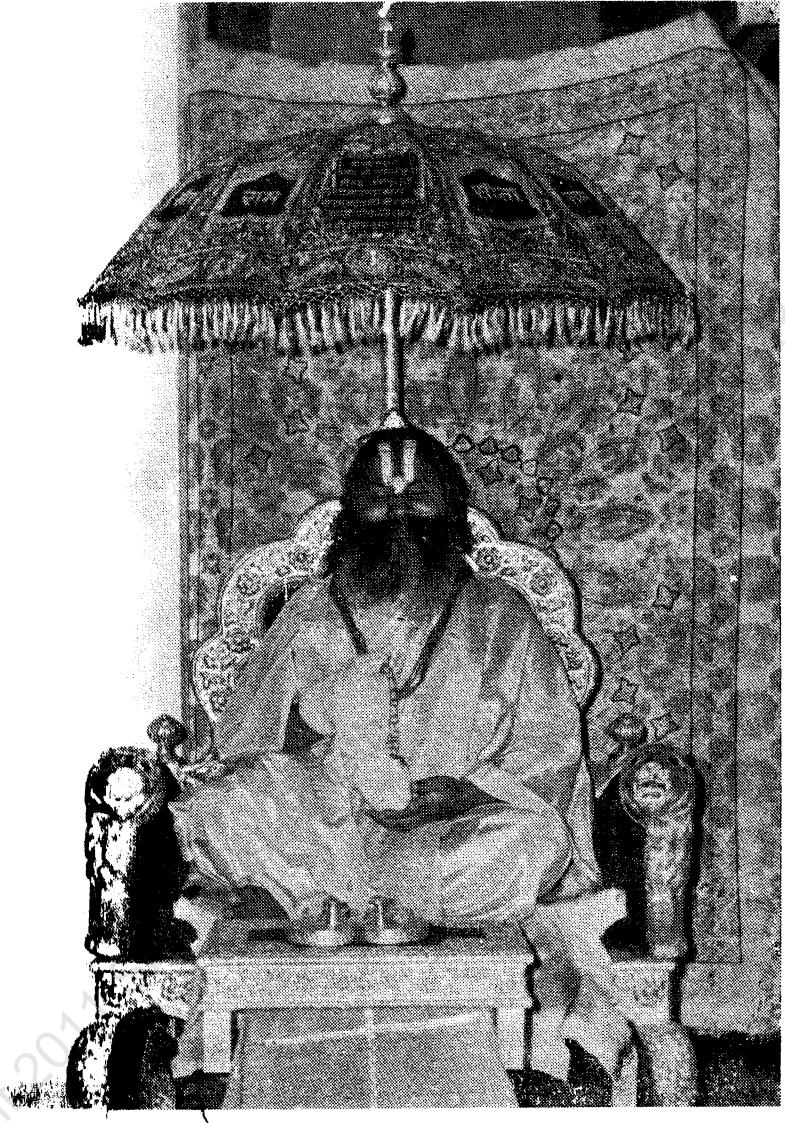
सर्वाम्नाय श्री तुलसी पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य
अनन्त श्री समलङ्कृत १००८ श्री रामभद्राचार्य जी महाराज
तुलसीपीठ - आमोदवन श्री चित्रकूटधाम

## ।। श्री राघवो विजयतेतराम् ।।

## ★ प्रकाशकीय ★

भागवत महापुरूषों के परमात्मा के प्रति भक्तिपूर्ण हृदयोद्‌गार ही घनीभूत होकर गीत का आकार ले लेते हैं, संगीत जिसका अनुगामी बन जाता है। सरगम और स्वर श्रृंगारित होने के लिये स्वतः जिसके पास उपस्थित हो जाते हैं। महर्षि वेदव्यास, जयदेव, सूरदास, तुलसीदास प्रभृति भक्तिरससिद्ध महाकवियों ने साहित्य धरातल पर जिस गीत मन्दाकिनी का अविरल प्रवाह प्रस्तुत किया उसी की एक दिव्यधारा के रूप में प्रस्तुत है जगद्गुरू रामानन्दाचार्य श्री रामभद्राचार्य महाराज द्वारा प्रणीत "श्री राघव गीत गुञ्जन" नामक यह गीत काव्य। इसमें आचार्यचरण के परमाराध्य शिशुराघव के वात्सल्य रस से ओत-प्रोत बालसुलभ झाँकियों का इतना सजीव एवं स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत हुआ है जिसे निहार कर पाठक महात्मा सूरदास के प्रस्तुतीकरण एवं गोस्वामी तुलसीदास जी के संस्तुतिकरण का स्मरण किये बिना नहीं रह पाता।

महाकवि ने अपनी भाव समाधि में अपने नन्हें मुन्ने राघव को ऐसी चातुरी से दुलारा है जिसमें उनके बहु आयामी व्यक्तित्व का दर्शन होता है। कभी वशिष्ठ, कभी अरून्धती, कभी कौशल्या कभी चक्रवर्ती जी कभी सुमित्रा और कभी अन्य वात्सल्य रस के आलम्बनों के रूप में ढ़ले हुए आचार्य चरण के व्यक्तित्व को देखते ही बनता है।

जन्म से ही बन्ध अपनी अन्तर की आँखों से आचार्यवर्यने अपने शिशु राघव के अनुभावों का तथा कौशल्या आदि की मातृसुलभ चेष्टाओं का जितने सलोने एवं मार्मिक दृश्य देखे कदाचित् वे नेत्रवालों को सुलभ नहीं होंगे। जैसे, "रामहि जननी चुराय अचर तर,

जैसे कृपन धना कौशिला के प्यारे ललना।' आदि।

गीतों की रचना में महाराज श्री को कोई प्रयास नहीं करना पड़ा। प्रायशः अपनी प्रातःकालीन दैनिक राघव सेवा के विश्राम काल में प्रार्थना के समय सहज रूप से अपनी नित्यनूतन भावनाओं को गीत का आकार देते हुए आचार्य श्री गाते जाते थे और उन्हीं गीतों को हम उसी समय लिपिबद्ध कर लेते थे पश्चात् लीला के अनुसार उन रचनाओं को हमने काण्डों के अनुसार क्रमबद्ध किया।

इसी तीन सौ इक्यावन पदों के संग्रह को हमने "श्री राघवगीत गुञ्जन" के नाम से प्रकाशित किया है।

हम आचार्य श्री के अत्यन्त आभारी हैं कि जिन्होंने इस अमूल्य ग्रन्थ के प्रकाशन की अनुज्ञा देकर "श्री राघव साहित्य प्रकाशन निधि" को बहुमान पात्र बनाया।

इस ग्रन्थ के मुद्रण में आर्थिक सहयोग के लिये मथुरा निवासी श्री गोपाल प्रसाद अग्रवाल एवं उनके चिरंजीव, पू. महाराज श्री के कृपापात्र श्री अशोक कुमार अग्रवाल को धन्यवाद देते हैं और इस ग्रन्थ के मुद्रण कार्य में उचित भूमिका निभाने के लिये आचार्यचरण के मित्र, मथुरा निवासी श्री चन्द्रप्रकाश आचार्य के हम कृतज्ञ हैं। इस कार्य में योग देने वाले ठा. धर्मपाल का श्रम भी सराहनीय है।

अन्त में हमारा समस्त साहित्यिक विद्वान, संगीत कलाकार, कवि, श्री रामोपासक, संत, वैष्णव, एवं आस्तिकों के प्रति विनम्र निवेदन है कि इस ग्रन्थ रत्न से अपना लौकिक व पारलौकिक मार्ग प्रशस्त करते हुए इसके पदों को गुनगुना कर हमारे शिशु राघव को लाड़ लड़ाते रहें।

जय श्री राघव<br>
विक्रम :- २०४८<br>
वामन द्वादशी<br>
दि. २० / ६ / १९९१

**निवेदिका**<br>
कु. गीता देवी<br>
मैनेजिंग ट्रस्टी<br>
श्रीराघव साहित्य प्रकाशननिधि<br>
"वशिष्ठायनम्"<br>
भूपतवाला, रानीगली हरिद्वार (उ. प्र.)

"श्री राघवो विजयतेतराम्"

## ★ अनुप्रवेश ★

श्री राघवप्रेमसुधा सनाथितम्
साहित्यसंगीतरसं सुगीतकम्
श्री रामभावोपवने निरन्तरम्
गुञ्जात्कलं राघवगीत गुञ्जनम्

वेद वेदान्त वेद्य परिपूर्णतम परात्पर परब्रह्म परमात्मा श्रीसीतारामजी की ललित लीला माधुरी निरन्तर मौन निरत परमहंस परिव्राजकों को भी मुखरित कर दें इसमें कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि शरत्सरोवर प्रसूत विकसित सरसीरूह के मकरन्द को पीकर भ्रमर न गुनगुनायें ऐसा सम्भव ही नहीं यदि अरविन्द मकरन्द का पान भ्रमर का स्वभाव है तो तदनुगुञ्जन भी उसकी प्रकृति है। प्रत्येक प्राणी आनन्द की पराकाष्ठा को पहुँच कर कुछ न कुछ गुनगुनाता ही है पर उसके गुनगुनाहट को कितने लोग समझते हैं यह उसके दायित्व का विषय नहीं होता। यद्यपि "चींटी के पग पायल बाजे मेरा साहेब सुनता है" कबीर की इस अवधारणा के अनुसार सर्वान्तर्यामी भगवान् सबकी गुनगुनाहट आदर के साथ सुनते हैं और उस उद्गाता की भावना के आधार पर अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करते हैं यद्यपि गायक अपनी मस्ती में श्रोत्र निरपेक्ष भावना से गाता है कोयल किसी को सुनाती नहीं उसकी कूक उसके अन्तरंग भावों की झंकार है इसीलिये श्री राम की रमणीय लीला माधुरी को गाने का प्रथम श्रेय प्राप्त किया कवि कोकिल ही ने तो "वन्दे वाल्मीकि कोकिलम्" उनके पश्चात् भी मन्त्र द्रष्टा ऋषियों का गान चलता ही रहा उस मङ्गलभवन अमङ्गलहारी के चरित्र गान में विश्राम कैसा ? जहाँ नित्य नव मङ्गल वहाँ नित्य नव गान। फिर तो धूम मच गयी और हिन्दी साहित्य में भी कविचन्द्र से लेकर अद्यावधि कविपुङ्गवों ने अहमहमिकया जी भर के गाया एवं सहस्राधिक नर-नारियों को श्री राम प्रेम रस में छकाया। हम सब के प्रतिपल स्मरणीय हुलसी हर्षवर्धन श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने तो ऐसा सुमधुर गीत पीयूष प्रस्तुत किया जिसके स्वाद की कोई सीमा ही नहीं। कदाचित् श्रीसीताराम भी इस पीयूष पान में कभी तृप्ति का अनुभव नहीं करते।

यद्यपि हिन्दी साहित्य में गीत काव्य की परम्परा का प्रारम्भिक श्रेय विद्यापति को मिला पर यह कहना कोई अतिरञ्जना नहीं है कि यह केवल साहित्य रस का श्रीगणेश ही था। वस्तुतः विद्यापति ने गीत काव्य का आविष्कार किया, श्री सूरदास जी ने पुरस्कार किया परन्तु गोस्वामी तुलसीदास जी ने तो गीतकाव्य का परिष्कार किया।

एक ओर जहाँ गोस्वामीजी ने मानस जैसे महाकाव्य की सर्जना करके प्राणिमात्र को सांस्कृतिक संजीवन प्रदान किया ठीक वहीं दूसरी ओर जानकी मङ्गल, पार्वती मङ्गल, गीतावली रामायण, कृष्णगीतावली, तथा विनय- पत्रिका जैसे मञ्जुल गीत काव्यों में मधुप सुलभ श्रीराम का यशोगान भी किया उसी गान परम्परा ने मुझ जैसे बालक को भी सहजतया मुखरित कर दिया।

वशिष्ठ गोत्र में उत्पन्न होने के कारण तथा अपनी नैसर्गिक अनुकूलता से मुझे भगवान् श्रीराम का बालरूप ही परमाराध्य रूप में भाया और मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि यह वात्सल्य रस की उपासना मुझे अपनी वंशानुगत परम पावन परम्परा से ही प्राप्ति हुयी है।

यद्यपि श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में भी परम पूर्वाचार्यों ने वात्सल्य उपासना को ही प्रामाणिक रूप से स्वीकारा है। श्रीराम मन्त्र के छठें ऋषि श्री लोमश जी के अनुसार श्री राम मन्त्र के ध्यान में बालक रूप श्री राघव ही ध्येय कहे गये हैं। यथा,

बालक रूप राम कर ध्याना। कह्यो मोहिं मुनि कृपा निधाना॥
(मानस ७/ ११३/ ७)

गोस्वामी तुलसीदास जी तो श्री राघव की बालकेलि को संतों की कामधेनु ही मानते हैं

"रघुवर बाल केलि सन्तन की,
सुभग शुभद सुरगैय्या॥ (गीतावली बा. २१)

यह अवधारणा भी मेरी वात्सल्य उपासना की पोषिका बनी। प्रत्येक साधक अपने सम्बन्ध एवं रूचि के अनुसार अपने आराध्य देव का कोई एक नाम चुन लेता है जिसमें अपने प्रभु के प्रति सजोई हुई उसके उद्गार भरी मञ्जुल भावनाओं का पूर्ण परिपाक भरा हुआ होता है। अतः मैंने भी भगवान् श्री राम के सभी नामों में से "राघव" नाम को ही अपनी भावनाओं के परिवेषण का माध्यम माना। इसी भावना के साकार रूप में प्रस्तुत है--

'श्री राघवगीत गुञ्जन" नाम का यह भक्तिगीत काव्य।

इसका प्रत्येक गीत "राघव" शब्द से ही प्रारम्भ हुआ है। इसमें प्रेरणा स्रोत रही है श्री राघव की बुआजी अर्थात् मेरी अग्रजा सुश्री गीतादेवी। उन्हीं की इच्छा से इस ग्रन्थ में प्रत्येक गीत "राघव" शब्द से प्रारम्भ करके ही सजोया गया। वात्सल्य रस में रूचि होने के कारण इसमें शताधिक गीत बाल लीला के ही निबद्ध किये गये हैं और शेष लीलायें संक्षेप से गायी गयी हैं।

इस ग्रन्थ के तीन चौथाई गीत मैंने अपनी प्रातः कालीन दैनिक राघव सेवा के विश्राम में प्रार्थना के क्रम में सहजतः स्फूरणा के आधार में बनाये हैं। वस्तुतः

इन्हें बनाने में मैंने कोई प्रयास नहीं किया ये स्वयं ही स्फुरित हुए। इसलिये इनमें भावनाओं का ही प्राधान्य है। अलङ्कार, रस तथा शब्दों की योजना में मेरा कोई प्रयत्न नहीं रहा है। स्वाभाविक रूप में जो भी शब्द योजना तथा अलङ्कार और रस आदि काव्य गुणों की जैसी संसृष्टि हुयी हो उसे मेरे शिशु राघव की कृपा का परिणमन मानना चाहिये।

इसमें रामायण गीतावली की ही भाँति सातकाण्डों की योजना है जिनमें जन्म से लेकर श्री रामराज्य तथा लवकुश जन्मपर्यन्त श्रीराम कथा का वर्णन है तथा उत्तरकाण्ड के उत्तरार्ध में अधिकांश गीत विनय माधुरी के गीत निबद्ध कियें गये हैं।

"श्रीराघव गीत गुञ्जन" श्री राघवेन्द्र सरकार के बहु आयामी व्यक्तित्व के ही अनुरूप कई भाषाओं एवं कई रीतियों में प्रणीत हुआ है। व्रजभाषा, अवधि भाषा, भोजपुरी भाषा, खड़ी हिन्दी भाषा तथा क्षेत्रीय भाषा में गीत प्रस्तुत किये गये हैं। इन गीतों में गीतावली रामायण, सूरसागर, विद्यापति पदावली तथा बहुत सी अवधी एवं भोजपुरी की लोकधुनियाँ एवं क्षेत्रीय तथा यथावसर बहुत सी प्रादेशिक धुनियों एवं कहीं कहीं बहुचर्चित और मनचाही प्रचलित खड़ी हिन्दी भाषा के धुनियों के आधार पर गीत लिखे गये हैं। इनमें मैंने बहुत से गीत "गिरिधर" नाम से लिखे हैं जो मेरा पूर्वाश्रम और सम्प्रति काव्य का नाम है इसके अतिरिक्त "रामभद्रदास", 'रामभद्र' रामभद्राचार्य तथा रामभद्रआचारज नाम से भी मैंने गीत प्रस्तुत किये हैं।

यद्यपि शास्त्र में वर्णित शान्त, दास्य, वात्सल्य सख्य एवं मधुर ये पाँचों उपासना के भाव इस गीत काव्य में प्रस्तुत किये गये हैं परन्तु अपनी उपासना का केन्द्र वात्सल्य होने के कारण इसमें उसी रस की प्रचुरता है।

मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि इस "श्री राघव गीत गुञ्जन" को गुनगुनाकर अनेक नर-नारी श्री राघव पदपद्म पराग मकरन्द रसरसिक मधुकर बनेंगे एवं इस काव्य के अनुशीलन से उनकी लौकिक एवं पारलौकिक उभयविध भावनाओं की पूर्ति होती रहेगी।

'श्री राघवप्रेमसुधा पिपासुभिः
साहित्यसंगीतकलाधृतात्मभिः
श्रद्धामयेनातिविशुद्धचेतसा
संगीयतां राघवगीतगुञ्जनम्'

इति मङ्गलं आशास्ते

राघवीयो
जगद्गुरू रामानन्दाचार्य
रामभद्राचार्यः
चित्रकूटीयः

## काण्ड-अनुक्रमणिका



## पदानुक्रमणिका

### बाल काण्ड

## अयोध्या काण्ड

## अरण्य काण्ड



## किष्किन्धा काण्ड



## सुन्दरकाण्ड



## युद्ध काण्ड



## उत्तर काण्ड

योग पद- ३५१

बालकाण्ड

राघव अवध प्रगटे आज ।
भगत हित बने नृपति बालक मुदित सकल समाज ॥
कोटि-कोटि मनोज मदहर, नील नीरद श्याम ।
मनहुँ सुषमा संग बिराजत सुभग सुख आराम ॥
मुदित मन तिहुँ लोक बिकसत साधु अति अनुकूल ।
हरषि जय जय कहत प्रभुदित बिबुध बरसत फूल ॥
सिद्ध मुनि गन्धर्व गावत अप्सरा नभ नाचि ।
करि निछावर सकल मन साँवरी छवि पर राचि ॥
शिव बिरंचि सिहात देखत कौसिला कौ भाग ।
भाव सरसिज देखि प्रफुलित सुभग मेघ तडाग ॥
हरषि दर्शन करत पुरजन लेत लाभ अघाइ ।
जनम को फल पाव "गिरिधर" राम शिशु गुन गाइ ॥ ४ ॥

(५)

राघव अवध प्रगट्यो आज ।
मधुर मंगल मोद सुरतरू सकल सुर सिरताज ॥
चैत शुकल सुपक्ष नवमी भौम दिन ऋतु राज ।
शुभ पुनर्वसु नखत दिनकर व्योम बीच बिराज ॥
सकल सुषमा रूप दशरथ सुकृत सुघर समाज ।
मुदित पुर नर नारि जहँ तहँ निरत निज निज काज ॥
लसत कौशल्या पलँग पर ललित सुत शिशु साज ।
जियहु "गिरिधर" ईश बरस करोर श्री रघुराज ॥ ५ ॥

(६)

राघव बदन बिलोकत दासी ।
एक टक रही खोय सुधि-बुधि सब, प्रेम पियूष पियासी ॥
मन महँ करत बिचार अम्बिका, भूलि कला की रासी ।
किधौं बिरंचि चाकि राखी है सकल भुवन सुषमा सी ॥
अँग-अँग उमँगि नीर भरे लोचन, लही सुअन्न सुधासी ।
"गिरिधर" प्रभु लखि शंभुभामिनी भइ मन मुदित सुपासी ॥ ६ ॥

(७)

राघवजू की चारू चितवनिया निरखि मन मोहत हो ।

खञ्जन बरन नयनवा अञ्जन अति सोहत हो ।।
कलित कपोलवा डिठौना दुइ-दुइ झलकत हो ।
अरून अधर सोहै लरिया चितइ चित ललकत हो ।।
सोहै ललित तिलकिया अलकिया मुख पै लटकत हो ।
कमल बदन ऊपर मानो मधुप गन अटकत हो ।।
विभूषन सुन्दर श्याम तन चमकत हो ।
मुख सोहै दुइ दुइठी दतुरिया बिजुरिया धन दमकत हो ।।
निरखि के कौसल्या रानी अँचर चुरावत हो ।
"गिरिधर" सहित हुलास मधुर छबि गावत हो ।। ७ ।।

(८)

[illegible] गुरूतीय झुलावत ।।
निरखि मुख इन्दु माधुरी मन अति मोद बढ़ावत ।
कर कमल डोर अति रसबस कबहुँक तनिक हिलावत ।।
झुकि झुकि चूमि मुख पंकज कहि ललना दुलरावत ।
[illegible]कोर कोर तिरिछे दृग मुनि भामिनि सुख पावत ।।
[illegible]मरि रूचिर शिशु लोना नयन नीर भरि आवत ।
[illegible]रि परत सिर आँचर थन पय प्रेम चुवावत ।।
सराहि भाग्य मुनि पतनी पुलक कण्ठ भरि आवत ।
वसिष्ठ दशा देवी की बिबुध सुमन बरसावत ।।
अरून्धति को जग जीवन रानि राय सुर गावत ।
समाज दास "गिरिधर" को चित आनन्द मनावत ।। ८ ।।

(९)

[illegible] आजु पालने झूले ।
तमाल लाल मुख छबि लखि, जननि मन ही मन फूले ।।
खचित मणि मध्य जटित झालर चहुँ ओर बिराजे ।
[illegible] दरस हेतु शशि सुत गुरू बिपुल देह [illegible]रि राजे ।।
आनन मृदु मृगांक पर मेचक अलक झडूले ।
[illegible] वृन्द मिलिन्द रूप विधु नाचत अमिय सो भूले ।।
किलकि किलकि गहे ललकि खिलौना लखि मनसिज मन मोहे ।
[illegible] हित जानि कुजहि मिलै भूले अपनपौं सोहे ।।
मुदित सकेलि राम कहँ हँसि हँसि सरस झुलावै ।
अनुराग भाग भरि झाँकी लखि "गिरिधर" सुख पावै ।। ९ ।।

## (१०)

राघवजू आजु अधिक छबि पावत ।
जननिहि निरखि पालना ते निज कर जुग जलज बढ़ावत ॥
मनहुँ नील नीरद सुर बीथी आँचर महँ हठि आवत ।
दूरि जानि शिशु बानि रोई कछु अरि हरि अनख जनावत ॥
चपरि पानि तें सुभग खिलौननि लै लै पुहुमि गिरावत ।
अँचल मुख दै दै चुटकी निज मातु प्रभुहि ललचावत ॥
बहुरि बच्छ ज्यों धेनु धाइ शिशु अँचल माँझ चुरावत ।
बदन सरोज चूमि चुचुकारत थन पय सुधा पियावत ॥
शिशु झाँकी रघुवंश तिलक की "गिरिधर" प्रभुदित गावत ॥ १० ॥

## (११)

**दोहा** :- रूप अनूप न जात कहि, लसत कौसिला अंक ।
प्राची दिशि मानहुँ उदित, पूर्णचन्द्र अकलंक ॥

o —— o —— o ——

राघवजू जननी अंक लसे ।
प्राची दिशि जनु शरद सुधाकर, पूरन है निकसे ॥
भाल तिलक सोहत श्रुति कुण्डल, दृग मनसिज सरसे ।
मनहुँ इन्दु मण्डल बिच अनुपम, मन्मथ बारिज से ॥
कल बल बचन कबहुँ कहुँ किलकत बिलसत दशन हँसे ।
दामिनि पटधर मनहुँ नीलधन, प्रेम अमिय बरसे ॥
खेलत शिशु लखि मुदित कौसिला झाँकत आँचर से ।
यह शिशु छबि लखि नित "गिरिधर" हृदय नयन तरसे ॥ ११ ॥

## (१२)

राघव जननि अंक छबि पावत ।
मनहुँ अरून कमलिनी मध्य छिपि, नव मधुकर मँड़रावत ॥
अँचल ते मुख ढाँकि पियत थन, लखि उपमा यह आवत ।
मनहुँ सुधा भरि जलज चँद कहँ, उडुगन कलित पियावत ॥
शिशु सुभाय मुसुकनि मिसि मुख पर, छलकि छलकि पय जावत ।
मनहुँ मृदुल सिरीष पर हिमकन, बिलसत शोभा छावत ॥
उमगि उमगि तुतरात कहत कछु, पय पी मोद बढ़ावत ।
राम लला की यह शिशु लीला, "गिरिधर" कहुँ ललचावत ॥ १२ ॥

## (१३)

राघव जननी अंक बिराजत ।
नख सिख सुभग धूरि धूसर तनु चितइ काम सत लाजत ॥
ललित कपोल उपर अति सोहत द्वै द्वै असित ड़िठौना ।
जनु रसाल पल्लव पर बिलसत द्वै पिक तनय सलोना ॥
शरद शशांक मनोहर आनन दतुरिन लखि मन मोहे ।
मनहुँ नील नीरद बिच सुन्दर चारू तड़ित तनु जोहे ॥
किलकत चितइ चहूँ दिसि बिहँसत तोतरि बचन सुबोलत ।
ठुमुकि ठुमुकि रुनझुन धुनि सुनि सुनि कनक अजिर शिशु डोलत ॥
निरखि चपल शिशु चुटकी दै दै हँसि हँसि मातु बुलावे ।
यह शिशु रूप राम लाला को "गिरिधर" दृगनि लुभावे ॥ १३ ॥

## (१४)

राघव निरखि जननि सुख पावति ।
सूंधि माथ रघुनाथ गोद लै प्रेम पुलकि अन्हवावति ॥
पोंछि बसन पहिराइ बिभूषन आशिष बचन सुनावति ।
चिर जीवहु मेरे छगन मगन शिशु कहि बिधि ईश मनावति ॥
धूरि न भरहु सीश पर लालन यों कहि तनय बुझावति ।
खेलहु अनुज सखन्ह मिलि अंगना प्रभुहिं उपाय सुझावति ॥
गोद राखि चुचुकारि दुलारति पुनि पालति हलरावति ।
आँचर ढाँकि बदन बिधु सुन्दर थन पय पान करावति ॥
कहति मल्हाइ खाहु कछु राघव मातु उछाइ बढ़ावति ।
नजर उतारि झिगुलि जनि फेकहु हरिहि निहोरि बुलावति ॥
देत रूचिर बहुरँग खिलौना रामहिं अजिर खिलावति ।
यह झाँकी रघुवंश तिलक की "गिरिधर" चितहिं चुरावति ॥ १४ ॥

## (१५)

राघव लसत जननी गोद ।
धूरि धूसर श्याम तनु लखि मातु मगन बिनोद ॥
प्रेम पुलकि लगाइ उर पय सुधा सरस पियाइ ।
मनहुँ नव नीरद निरखि रहे नेह सुरभि लिवाइ ॥
कछु हरषि पय पियत प्रमुदित मधुर कल बतरात ।
चुवत छीर मुखाम्बुरूह पर सुछबि बरनि न जात ॥

बाल कौतुक करत हँसि जननी हिये लपटाय ।
मनहुँ कंचन लतहिं भेंटत तम तमाल सुधाय ।।
कछुक चंचल कर कमल गहे जननि उर कर हार ।
मनहुँ दिनकर किरन जालहि लसत लहे श्रृंगार ।।
मातु शिशु कल केलि लखि हिय अवधपति हरषाय ।
राम शिशु शोभा सुमिरि मन "गिरिधरहुँ" बलि जाय ।। १५ ।।

(१६)

**दोहा** :- राजत रूप अनूप शिशु, नृप दशरथ के अङ्क ।
क्षीर सिन्धु बीचिन्ह लसत मनहुँ इन्दु अकलङ्क ।।

o---- o ---- o ----

राघव गोद विनोद मोद भरे, लखि सखि पुलकित भूप हिये ।
नयन चकोरनि पियत सुधारस, इक टक रूप अनूप किये ।।
कबहुँ उमगि आनन्द तरङ्गनि, प्रमुदित राम रूप निरखे ।
कबहुँ नीर ढ़रि चारि बिलोचनि, चूमि चूमि सुत मुख हरषे ।।
कबहुँ झाँकि झुकि झुकि उछाह भरि, प्रेम प्रवाह ललकि ललके ।
कबहुँ दुलार शिशुहिं चुचकारत, पुनि पुनि राम बिहँसि किलके ।।
कबहुँ डिठौना लखि कपोल पर, चितवत रानिन सहित चके ।
तोतरि बोल, अमोल सुनतहिं, 'गिरिधरहुँ' बिनुमोल बिके ।।

o---- o ---- o ----

**दोहाः**- बार बार शिशु मुख निरखि, चूमि चूमि नरपाल ।
पाइ सुकृतिफल अमित अति, मन अति होत निहाल ।। १६ ।।

(१७)

राघव निज गुरू गोद बिराजत ।
नख सिख रुचिर नील नीरज तनु उपमा कहत कोटि कवि लाजत ।।
मेचक अलक तिलक अति सुन्दर भाल विशाल लखत मन मोहे ।
मनहुँ नीलघन युत मरकत गिरि सुरसरि सरसै धारा सोहे ।।
लोल कपोल सुभग नासा रद लसत श्याम द्युति युगल ड़िठौना ।
पाटल दल पर लसत गहन कहँ बिम्ब सकेलि मनहुँ अलि छौना ।।
मन्द मन्द मुसकात मृदुल शिशु किलकत चपरि चितइ चित चोरे ।
बाल रूप झाँकी अवलोकत यहि छबि पर "गिरिधर" तृन तोरे ।। १७ ।।

## (१८)

राघवजू को कमल बदन गुरू देखत ।
नैन सनीर शरीर पुलक भरे सकल सुकृत फल लेखत ॥
माँगि प्रिया मिस रानि अंक ते गोद सुभग शिशु लीन्हे ।
चितवत चकित मृदुल बालक विधु चखनि चकोरन कीन्हे ॥
रूप राशि गुन सिन्धु श्यामतन, चरण पानि लघु लोने ।
लूटत मनहुँ रंक हिय झोलिन्ह पुनि पुनि पुलकित सोने ॥
पत्निहि कहत निहोरि रहस बस देखु देखु शिशु शोभा ।
कौशल्या को सुकृत देह धरयो निरखत मम मन लोभा ॥
लखि प्रभु छबिहि मगन ऋषि दंपति कोसलपति सुख पायो ।
जनम महोत्सव गुरू अनन्द यह कछु कहि "गिरिधर" गायो ॥ १८ ॥

## (१९)

राघव को गुरू गोद लिये हैं ॥
पुनि पुनि पुलकि ललकि मुख निरखत गुरूवर, प्रेम पियूष पिये हैं ॥
जोग समाधि निसारि मनहिं ते निमिष निवारि लिये हैं ॥
हृदय सराहत सुकृत आपनो, चित हित प्रभुहि दिये हैं ॥
राखि उछंग उमङ्ग ललित सिर चखनि चकोर किये हैं ॥
पढ़ि पढ़ि मन्त्र स्वस्ति वाचन कर उमग अनन्द हिये हैं ॥
"गिरिधर" भाग वशिष्ठ सरिस जग पायो न अपर लिये हैं ॥ १९ ॥

## (२०)

राघव लसत गुरू के गोद ।
निरखि नख सिख सुभग शिशु छबि, मगन अधिक विनोद ॥
शिरसि मेचक कुटिल कुन्तल, मुख लटक गभुआर ।
मनहुँ विधुकर निकर उडुगन मधुप करत विहार ॥
ललित लघु लघु अधर कर पद कमल मृदुल कपोल ।
कलित प्रेम विभोर रिषि लखि मुख न आवत बोल ॥
चूमि आनन झूमि विधि सुत सयन तियहि दिखाय ।
राम शिशु छबि निरिखि "गिरिधर" मुदित बलि बलि जाय ॥ २० ॥

## (२१)

राघव को मुख चूमे कोशल्या रानी ॥
पुलकि पुलकि चूमे ललकि ललकि चूमे ।
निरखि हरषि मुख चूमे कौशल्या रानी ॥
उमगि निहारि चूमे नयन जल ढारि चूमे ।
तन धन वारि मुख चूमे कौशल्या रानी ॥
अंचल में ढाँकि चूमे पुनि पुनि झाँकि चूमे ।
ऊमि ऊमि झूमि मुख चूमे कौशल्या रानी ॥
सहित विनोद चूमे कलित प्रमोद चूमे ।
ब्रह्म शिशु गोद मुख चूमे कोशल्या रानी ॥
अलिन्ह छिपाय चूमे चितहिं चुराय चूमे ।
बदन दुराय मुख चूमे कौशल्या रानी ॥
जगत अधीश चूमे अवध महीश चूमे ।
"गिरिधर" के ईश मुख चूमे कौशल्या रानी ॥ २१ ॥

## (२२)

राघव सिखत घुटुरून चलन ।
कबहुँ दशरथ निकट आवत किलकि हँसि हँसि धाय ।
कबहुँ कौशल्या निकट कहँ जात चारौं भाय ॥
गिरि परत उठि लरिखरत हरि अजिर सुषमा पुंज ।
प्रेम बस जनु नव जलद महिं लसत तड़ित सुकंज ॥
हँसति गुरूतिय सखि सुवासिनी निरखि सुंदर बाल ।
चिर जियहु शिशु राम "गिरिधर" हृदय मंजु मराल ॥ २२ ॥

## (२३)

राघव किलकनि मोहि सुहात ।
खेलत अजिर घुटुरून इत उत चितइ चितइ मुसुकात ॥
ओदन सहित लार मुख ऊपर निरखत नयन लुभात ।
सुधा सार घन सार बिन्दु जुत मनहुँ अरुन बन जात ॥
बिहँसति किलकि किलकि जननी लखि कबहुँक ढिग चलि जात ।
कबहुँ निरखि प्रतिबिम्ब खम्भमँह हँसि हँसि कछु बतरात ॥
देखि राम खेलनि दशरथ उर अति आनँद न समात ।
"गिरिधर" प्रभुहि गोद लै उमगत दृग जल पुलकित गात ॥ २३ ॥

ाघव जू अजिर घुटुरूवन धावत ।
िधु मुख दधि ओदन कन राजत लखि उपमा एक आवत ॥
नहुँ सुधा सरोज सम्पुट भरि महि पर चन्द्र चुवावत ।
ुकि झुकि झाँकि झाँकि प्रतिबिम्बन किलकि-किलकि सुख पावत ॥
गरत कबहुँ डरत कबहूँ हरि कबहुँक बदन बिरावत ।
अलकि लटक लखि जलज नयन पर अँगुरिन ते बिबरावत ॥
नहुँ अरून राजीव जलद कहँ खञ्जन ते बिलगावत ।
ीत झिगुलिया लसत श्यामतनु भूषन छबि सरसावत ॥
नु शिशु बेश धर्‌यो श्रृंगार रस निरखत मन ललचावत ।
ुकी दै दै मातु कौशिला हँसि हँसि शिशुहिं बुलावत ।
ाह शोभा शिशु रामचन्द्र की "गिरिधर" चितहिं चुरावत ॥ २४ ॥

(२५)

ाघव अजिर घुटुरूवन डोलत ।
ललकत गहन खिलौनन चंचल मधुर मधुर कछु बोलत ॥
ोलत मुदित रमत अपने रंग लखि जननी तृन तोरत ।
िरखि कोटि मन्मथप्रमत्त चित हित दै नयननि जोरत ॥
ँचल मुख दै हँसति कौशिला लखि यह अद्‌भुत झाँकी ।
"िरिधर" मन उपवन महँ हुलसति किलकन राम ललाकी ॥ २५ ॥

(२६)

ाघव अजिर घुटुरूवन धावत ।
िलकत निरखि विलोल खिलौननि, उर उत्साह बढ़ावत,
ानु पानि जुग चलत चपल अति नृप आँगन मन भावत ।
ाणि खम्भन प्रतिबिम्ब देखि निज किलकि किलकि सुख पावत ॥
ुटिल अलक लटकति मुख ऊपर निज करते बिबरावत ।
नहुँ अरून अम्भोज तिमिर कहुँ हठ बस दूरि फिरावत ॥
ाय आँचल मुख ओट कौशिला हँसि हँसि शिशुहिं बुलावत ।
ाम भद्र की यह शिशु झाँकी "गिरिधर" कहँ ललचावत ॥ २६ ॥

## (२७)

राघव नृपति अजिर महँ खेलत ।
चपरि पानि पंकज तें पंकनि निज सिर पर हँसि मेलत ।।
लखि शिशु कौतुक हँसति कौशिला कहँ रिस मिस अलखाई ।
भूसन बसन पंक महँ मेलत करत ललित लरिकाई ।।
मातु बचन सुनि देत उतर प्रभु बचन सुतोतरि बोलत ।
हौं लोटत तहँ सकल संत मिलि जहँ नित प्रमुदित डोलत ।।
कारन कहा जननि पूछें कहें निज अघ अमित नसाउ ।
कहँ तुअ पाप जनन के पातक निज सिर ऊपर लाउ ।।
सुनि सुत मातु विनोद बचन नृप दसरथ मृदु मुसकाई ।
बाल विनोद मोद रघुवर को "गिरिधर" हिय हुलसाई ।। २७ ।।

## (२८)

राघव नृपति अजिर महँ खेलत ।
हेम जलज बिच मनहुँ मधुप मृदु, पीत पराग सकेलत ।।
भाल तिलक अति ललित अलक वर लटकि पलक पर आवत ।
मनहुँ जलद मिलि इन्द्र धनुष जलरूह दल पर छबि छावत ।।
निरखि निरखि प्रतिबिम्ब खंभ महँ नटत किलकि रूचि राचत ।
जनु रविकर पर्यंक अंक पर सुभग केकि शिशु नाचत ।।
शिशु सुभाय दधि ओदन कौलनि मुख सरोज प्रभु मेलत ।
"गिरिधर" ईश नदीश बीच जनु शशि महँ सुधा सुखेलत ।। २८ ।।

## (२९)

राघव लसत आँगन आज ।
बसन भूषन बिबिध राजत, सुभग सब शिशु साज ।।
मध्य तनु पृथु वक्ष सुन्दर मनहुँ शिशु मृगराज ।
अजिर खेलत खात कछु कछु हँसत निरखि समाज ।।
नृपति चुटकी दै बुलावत रूचिर काग देखाइ ।
गोद राखि बोलाइ चूमत प्रेम उमगि अघाइ ।।
काक पक्ष संवारि सिर लसे छबि बरनि नहिं जाय ।
मनहुँ "गिरिधर" प्रभु कमल मुख अलि रहे मँड़राय ।। २९ ।।

## (३०)

राघव लसत नरपति अजिर ।

कनक मणि गच खचित पंकज राग रज अति रूचिर ॥
चलत घुटुरून चपरि किलकत, अंकनि नूपुर मुखुर ।
चकित चित चहुँ ओर चितवत, मंजु बिहँसत मधुर ॥
नयन अंजन दशन दुइ दुइ विशद पल्लव अधर ।
लसत दाडिम बीच जनु जुग ललित विद्रुम सुघर ॥
धूरि निज कर शीश मेलत सपदि मेटत कुढ़र ।
सतत "गिरिधर" हृदय निवसत राम शिशु छबि सुढर ॥ ३० ॥

(३१)

राघव कनक अजिर महँ खेलत ।
घुटुरून चलत धूरि तन धूसर बदन विनिन्दित सदय सुधाकर ।
कुटिल अलक लटकत दृग ऊपर पंकज करनि सकेलत ॥
चुटकी दै दै जननि बुलावत किलकत हँसत खम्भ गहि धावत ।
बिहँसि बिहँसि कछु कछु मटकावत कलबल तोतरि बोलत ॥
लखि घन ओट सुमन सुर बरसत जननि आलि मन महँ अति सरसत ।
यह अपूर्व मोहनि मन करषत "गिरिधर" मन सुख मेलत ॥ ३१ ॥

(३२)

राघव ठुमुकि ठुमुकि कल धावत ।
चुटकी सुनि सुनि जननि निकट हरि विधु मुख बिहँसत आवत ॥
मेचक अलक कुटिल महि परसत यह उपमा उपजावत ।
जनु नवनील पयोद रामहित पट पाँवड़े बिछावत ॥
किलकि किलकि टेरत शिशु अनुजन्ह मुख ते लार गिरावत ।
सुषमाकंज मानहुँ महि ऊपर शशि मिस सुधा चुआवत ॥
आँचर मुख दै हँसति कौशिला राजहि सयन बुलावत ।
यह झाँकी रघुवंश तिलक की "गिरिधर" चितहि चुरावत ॥ ३२ ॥

(३३)

राघव तजहु किन यह बानि ।
कहत पुनि पुनि लाय उर रघुपतिहिं दशरथ रानि ॥
हौं दुलारि बुलाय हारी ठुमुकि आवत नाहिं ।
धरनि चटकहिं चपरि धावत पंक सुत महि माँहि ॥
गोद लै भूपति खियावत तुम्हहिं दधि अरु भात ।
पाइ अवसर निदरि खेलत सखन्ह मध्य परात ॥

जासु जूठन लागि शुक सनकादि शम्भु ललाय ।
सो चखावत मीत कागहिं बदन सुधा बनाय ॥
सुनि सुमित्रा बचन बिहँसत मनहि रघुकुल चन्द ।
राम शिशु झाँकी मनोहर दलहु "गिरिधर" द्वन्द ॥ ३३ ॥

## (३४)

राघव आज बिहरत भोर ॥
निरखि मुख शशि जानि चहुँ दिशि रहे घेरि चकोर ॥
वपुष वारिद मानि नाचत, प्रेम पुलकित मोर ॥
मृदुल सुठि सुकुमार अंग अनंग सुषमा चोर ।
धूरि भरे नवनीत कंज समान लोचन कोर ॥
किलकि घुटुरून धाइ आँगन चरित करत करोर ।
काक पकरन चहत बिहँसत सकल शिशु सिर मोर ॥
निरखि छबि शिशु हँसति जननी बदन करिपट छोर ।
सुमिरि यह शिशु रूप "गिरिधर" होत भाव विभोर ॥ ३४ ॥

## (३५)

**दोहाः**- खेलत शिशुहि बिलोकि नृप, निरखत दृगन अघाय ।
धूरि विधूसर राम लखि मुदित कौशिला माय ॥

o ---- o ---- o ----

राघव ललन राम राजीव नयन,
कोई दे नहीं नजरा लगाय ॥
रूप पयोनिधि सरस सुधाकर ।
शोभा शील मधुर रतनाकर ।
खञ्जन नयन देखि लाजे नयन,
ऐन सुषमा पे बलि बलि जाय ।
तोतरि बचन सुधा सम बोलत ।
किलकत खेलत आँगन डोलत ।
भूषन बसन दिव्य दाड़िम दशन,
लिये मुनि मन को तुरत चुराय ॥
कुटिल झलक आवृत विधु आनन ।
खेलन मत जाओ मेरे लालन ।
"गिरिधर" को धन खेलो मन के भवन,
लूँगी अचरा में तुम को छिपाय ॥ ३५ ॥

(३६)

दोहाः- आँचर अजिर उमंग उर, आँखि आँसु आनन्द ।
कौशल्या के भाव गत, राघव रवि कुल चन्द ॥

० ---- ० ---- ० ----

राघवजू मुदित मातु मुख हेरत ॥
छटकाये कर कमल बिकल कछु,
थकित चितव चख चहुँ दिसि टेरत ॥
कुटिल अलक लटकत मृदु आनन,
नील जलद जनु बिधु कँह, घेरत ॥
निरखत खग बपु धरि सब सुर मुनि,
ललकि लगे लोचन नहीं फेरत ॥
"गिरिधर" भूरि भाग भूतल ते,
कोशल राज तनय पद जे रत ॥

० ---- ० ---- ० ----

दोहाः- निगम अगम साधन सुगम, दशरथ सुत रघुराय ।
"गिरिधर" कर गहि कौशिला चलिबो रही सिखाय ॥ ३६ ॥

(३७)

दोहाः- किलकि किलकि खेलत निरखि, मणि आँगन प्रतिबिम्ब ।
"गिरिधर" प्रभु शोभा लखत, मगन मोद मन अम्ब ॥

० ---- ० ---- ० ----

राघवजू की लसत ललित लरिकाई ।
सुकृत समूह अवध रानि के जनु मूरति धरि आई ॥
हरित मणिन बिच सोहत खेलत संग सखा शिशु भाई ।
मनहुँ उमगि आनन्द सिन्धु जल सुमिरत मन ललचाई ॥
कबहुँ निरखि प्रतिबिम्ब हँसत प्रभु कबहुँक जात डेराई ।
घुटुरून धाइ जननि पहँ आवत आँचर बदन दुराई ॥
पकरन कबहुँ काग कहँ दौरत चपरि चितव रघुराई ।
किलकि किलकि चुटकी सुनि नाचत होत मगन लखि माई ॥
कबहुँक हठ बस महि पर लोटत पट भूषण बगराई ।
कोशलपति हँसि शिशुहि निहोरत बचन कहत मुसुकाई ॥
कबहुँक दरपन मँह मुख जोवत कछुक कछुक सकुचाई ।

"गिरिधर" सुमिरि राम शिशु कौतुक देह सुरति बिसराई ॥

० ---- ० ---- ० ----

**दोहाः-** को कवि बरनन करि सके, राघव को शिशु रूप ।
'गिरिधर' सुमिरहुँ ध्यान नित, बेगि मिटे भवकूप ॥ ३७ ॥

## (३८)

**दोहाः-** कनक अजिर राजत रूचिर, मञ्जुल बाल मराल ।
अंग अंग भूषन लसै, लोचन नलिन बिसाल ॥

० ---- ० ---- ० ----

राघवजू की लसत ललित लरिकाई ।
नख सिख सुभग धूरि धूसर तनु सुषमा बरनि न जाई ॥
श्याम शरीर बिलोकि सुहावन जलद तमाल लजाई ।
अंग अंग बर लावण्य निरखि रहे कोटिन्ह मदन ठगाई ॥
घुटुरून चलत निरखि प्रतिबिम्बन, मणिमहँ कबहुँ डराई ।
दरपन बिच लखि कबहुँ बदन निज, सुख नहिं हृदय समाई ॥
गहन काग सिख केकि कबहुँ प्रभु चपलि चरन चलि धाइ ।
कबहुँ बैठि पितु अंक बिहँसि मुख तोतरि कल बतराई ॥
कबहुँ बोलावत अनुज मीत शिशु कुँवर अनूप दिखाई ।
कबहुँ कबहुँ "गिरिधर" ढिंग आवत मधुर मधुर मुसुकाई ॥

**दोहाः-** जय जय शोभा शील निधि, जय छबि पारावार ।
जय "गिरिधर" के प्राणधन, जय राघव सरकार ॥ ३८ ॥

## (३९)

राघव क्यों न तजत लरिकाई ।
दूध भात मृदु खात बाल संग बीचहि चलत पराई ।
बिहरत अवध गलिन महँ लालन मुख झूठन लपटाई ॥
करि सिंगार अन्हवाइ जलन तें, मैं रचि केस बनाई ।
लै चंचल रज डारि शीश पर, निमिष माँहि बिबराई ॥
कठुला कंठ हार मोतिन को, पट भूषन पहिराई ।
तदपि तात धूसर करि ता कहँ पल महँ दीन्ह नसाई ॥
कहत लाइ लालन कहँ उर ते मुदित कौसिला माई ।
बाल विनोद सुमिरि रघुवर को नित "गिरिधर" बलि जाई ॥ ३९ ॥

दोहाः- कौशल्या के गोद महँ, रविकुल कैरव चन्द ।
खेलत "गिरिधर" ईश लखि उमगत परमानन्द ॥

० —— ० —— ० ——

राघवजू की बाल केलि मोहि भावे ।
सुख की अवधि सुकृति की सुरभी संतन्ह सतत लुभावे ॥
कबहुँ घुटुरुवन चलत रहसि हँसि कबहुँक कछु अनखावे ।
कबहुँ निरखि प्रतिबिम्ब डरत हरि कबहुँ हरषि कछु गावे ॥
कबहुँ चुटकी सुनत नटत प्रभु, कबहुँ ठुमुकि झुकि धावे ।
कबहुँ अपूप दिखाइ भरत कहँ, रघुवर निकट बुलावे ॥
कबहुँ धूरि निज सिर पर मेलत, कबहुँ मातु पहिं आवे ।
कबहुँक कर सरोज अँगुरिन ते आनन झलक हटावे ॥
कबहुँक दधि ओदन जेवँत मुख कबहुँक नीर उड़ावे ।
कबहुँ मातु आँचर आवत हैं पिवत दूध सुख पावे ॥
दरपन महँ मुख निरखि बिहँसि कछु चूमन कह ललचावे ।
कबहुँ कबहुँ कर टेकि मोद बस "गिरिधर" चितहिं चुरावे ॥ ४० ॥

(४१)

राघव जननि सनमुख अरत ।
अरुन दल राजीव लोचन बारि पुनि पुनि भरत ॥
पकरि आँचर कबहुँ कछु कछु चपलता शिशु करत ।
दूरि डारत सब खिलौननि मातु तें कछु डरत ॥
बदत रोवत मचलि मचि मचि धरनि गिरि गिरि परत ।
लेत चूमि उठाय रानी ढुरनि हँसि हँसि ढरत ॥
बहु मनाइ रिझाइ लालहिं प्रेम थन पय छरत ।
निरखि झाँकि "गिरिधरहुँ" हिय मोद अनुपम धरत ॥ ४१ ॥

(४२)

राघव जू की लसत ललित लरिकाई ।
श्याम शरीर निहारि नील घन मरकत कंज लजाई ॥
कुटिल मेचक कच कुंचित लटकत करनि रहे बिबराई ।
मधुप माल कहि अनुज जलज जुग बिधु न रहे बिलगाई ॥
कबहुँ निरखि प्रतिबिम्ब डरत हिय कबहुँ हरष सुख पाई ।

नचत ताल दै थिरकि थिरकि पद नूपुर मुखर सुहाई
गिरि गिरि परत उठत कोहँनिन ते अरत जननि ढिंग जाई
दर्पण निरखि रूप निज झगरत बाल केलि रघुराई
मोदक कबहुँ उठाइ अँगुरियन अनुजन रहे खबाई
राम लला को शिशु विनोद यह "गिरिधर" चितहिं चुराई ॥ ४२

## (४३)

राघव खेलैं मुदित जिकैंयाँ
राजा दशरथ अँगनैयाँ
सुरूज किरन छिटकत छबि छायेबा
मानोनील नभ ऊपर मोतियाँ बिछायेबा
ताके ऊपर कातिक के जुन्हैंया
पियरी झिंगुलि झलके साँवरे सरीर पे
जैसे तारागन चमकै नीरद गँभीर पै
नख सिख नीकी निबही निकैया
पैजनी किंकिनी धुनि चितके चुरावे ले
घुँटरून चलनि देखी काम के लजाबेले
देखि सुखी नृपति अरू मैया
चुटकी बजाइ माता निकट बुलावेले
हाथ मालपुआँ लेके लाल ललचावेले
अस रघुवर की बानी लरिकैया
कबहूँ निरखि प्रतिबिम्ब के ड़ेरायेले
कबहूँ देखाइके अँगुठा भाग जायेले
कबहुँक नाचै ताता थैया
देखि रूप रानी राई लोन लै उतारेलीं
धूरि लखि देह ऊपर अँचरा से झारेलीं
"गिरिधर" के प्राण धन रमैया ॥ ४३

## (४४)

राघव केहि विधि तुम्हहिं मनाऊँ ॥
कहहु सो वस्तु संकोच त्यागि सुत सरगहूँ ते मगवाऊँ
कामधेनु पय आनि कनक घट, पुनि पुनि तुम्हहिं पिआऊँ

उबटि आँजि अन्हबाइ विभूषन, रचि रचि रूचिर बनाऊँ ।
निमिष माहिं सोइ दूरि बहावत कैसेक फिरि पहिराऊँ ॥
तेरी सौंह तुम्हहि गुरूतिय ढिग तुरतहि सपदि पठाऊँ ।
कहहु सोचन्द मगाइ गगन तें खेलन कहँ लैं आऊँ ॥
ऐसी कबहुँ न करत रहेऊँ तुम्ह कहा भयो मनवाऊँ ।
किधौं ठगोरी कर्‍यो न काहुँ लखि "गिरिधर" प्रभु बलि जाऊँ ॥ ४४ ॥

## (४५)

राघवजू आजु अधिक अनखात ।
अरि अरि परत अकारन लालन रूदन करत नटि जात ।
फेंकत हठि हठि ललित खिलौनहि पुनि पुनि दूरि परात ॥
नाहिन नेकु निहोरा मानत कहत कछुक तुतरात ।
अंजन मलत कपोलनि कररूह धूरि भरत निज गात ॥
भूषन बसन धूरि तनु डारत, अरून नयन जल जात ।
"गिरिधर" प्रभु की देखि दशा यह, हँसत कौसिला मात ॥ ४५ ॥

## (४६)

राघव अनुजन टेरि बुलावत ॥
मुख दधि बिन्दु धूरि धूसर तनु कुटिल झलक जिय भावत ।
मनहुँ नील मनि रूचिर सिखर पर गंग धार छबि छावत ॥
अकनि शिशुन आनन्द उमगि हरि कनक महल ते धावत ।
मनहुँ शरद शिशु शशि मिलबे कहँ नील जलद ललचावत ॥
कल बल बचन तोतरे मञ्जुल कछु कहि सखन बुझावत ।
मनहुँ सकल श्रुति रिचा गिरनि सुनि प्रभु मुख पंकज आवत ॥
भरत लखन रिपु दमन संग प्रभु मोद विनोद बढ़ावत ।
किलकनि हँसनि बिलोकनि अलखनि "गिरिधर" चितहि चुरावत ॥ ४६ ॥

## (४७)

राघव आज आसिस पाइ ।
मुदित भाइन्ह सहित गुरूतिय जननि पद सिर नाइ ॥
ललित मञ्जुल बदन विधु पर लटकि अलक लखाइ ।
जनु अमिय हित घेरि रहे अलि निकर शशि कहँ धाइ ॥
लघु करन लैं लघु खिलौना संग सुभग शिशु भ्रात ।
बसन भूषन साजि कोशल गलिन्ह खेलन जात ॥

लखि अरून्धति आँसु रून्धति आँचरन्हि मुख मोरि ।
निरखि साँवर सुभग शिशु छबि हरष मन तृन तोरि ॥
अनुज बालक बीच राजत राम सुषमा कंद ।
लहत लोचन लाहु "गिरिधर" जयति रविकुल चंद ॥ ४७ ॥

## (४८)

राघव लला को जिवावै सुमित्रा सखी अति सुख पावै ।
कनक महल महँ कनक कटोरन रूचि रूचि भोग लगावै
सुमित्रा सखी अति सुख पावै ------------------------ ॥
व्यंजन बिबिध छरस बहु भाँतिन, मधुर कलेऊ लावै ॥
सुमित्रा सखी अति सुख पावै ------------------------ ॥
बड़ों कँवर मेलत मुख भीतर, आँचर बदन छिपावै
सुमित्रा सखी अति सुख पावै ------------------------ ॥
कबहुँक चूमि चूमि मुख पोंछत, कबहुँक दूध पिबावै ।
सुमित्रा सखी अति सुख पावै ------------------------ ॥
यह छबि सुमिरि सुमिरि तन पुलकित "गिरिधर" गुन गन गावै ।
सुमित्रा सखी अति सुख पावै ------------------ ॥ ४८ ॥

## (४६)

राघव आज करत जेवनार ।
कौसल्या के अंक बिराजत, कौशलेन्द्र सरकार ॥
छप्पन भोग छरस अति व्यंज़न, भरि भरि कंचन थार ।
बड़ों कँवर जननी मुख मेलत, मोद प्रमोद अपार ॥
बिच बिच सरयू नीर पिआवत उमगत हृदय उदार ।
आँचर पोंछि बदन शशि सुंन्दर गावति मंगलचार ॥
मुदित सुमित्रा चँवर डोलावत कैकइ तन मन बार ।
भाइन्ह सहित राम शिशु जेंवत "गिरिधर" प्राण अधार ॥ ४६ ॥

## (५०)

राघव प्रेम सहित अब जेंवहु ।
जननि जनक गुरू गुरूतिय मानस भाव भगति रस भेबहु ॥
बिबिध भाँति मेवा पकवानन भरि भरि कनक कटोरा ।
आनि धरे सहुलास सुमित्रा बहुविधि करति निहोरा ॥
लोचन लाभ लेहि सब माता, लखि तव सरसिज आनन ।

बदन इन्दु छबि निरखि बिकसि हैं जनमन कैरव कानन ॥
जेवन करि सरजू जल अंचवहुँ हे मम नयनन्ह तारे ।
ठाढ़े द्वार केलि हित प्रिय शिशु बारहिं बार जुहारे ॥
मातु बचन सुनि जेंइ मुदित मन बदन पोंछि मुसुकाये ।
झाँकी यह रघुवंश तिलक की "गिरिधर" चित्त चुराये ॥ ५० ॥

## (५१)

राघव बैठि जननि ढिग जेंवत ।
कनक कटोरे बोरि कर पल्लव पायस तें तन भेंवत ॥
कछुक खात कछु बाल चपल हँसि, किलकत धरनि गिरावत ।
मनहुँ सुधाकर सिंचे सुधाकन, पुहुमिहि पुलक बढ़ावत ॥
लैं मुख कँवर मातु आँचर महँ आनन जाइ दुरावत ।
मनहुँ गंग कल धवल धार बिच नील जलद छबि पावत ॥
ओदन कण मुख लसत देखि छबि बिबुध कुसुम बरसावत ।
झाँकी यह शिशु बर राघव की अधिक "गिरिधरहिं" भावत ॥ ५१ ॥

## (५२)

राघव जेंवत आज मुदित मन ।
रंगनाथ मंदिर उघारि पट, भोग लगावत मुनिजन के धन ॥
बैठि कनक थारी बिच शिशुवर खीर बिन्दु तें लिपटे श्याम तन ।
मनहुँ गंग के सुभग धार बिच हरषि नहात सजल श्यामल घन ॥
बड़ों कँवर मेलत मुख भीतर ओंठ पे राजत झूठन के कण ।
किलकत हँसत रहसि अपने हिय जाय न बरनि मोदमय सो छन ॥
अपने करन कौशिला नन्दन अनप्रासन करे जन भय मोचन ।
झाँकी झाँकि राम शिशु की यह सुफल भये गिरिधर के लोचन ॥ ५२ ॥

## (५३)

राघव आजु करत जेवनार ।
निज माया पट खोलि प्रविशि गृह, ब्रह्म सगुन साकार ॥
दोउ करतें मेलत मुख कँवरनि, किलकत कल सुकुमार ।
मनहुँ कमल दल सुधा पियावत, विधुहि मुदित मन मार ॥
जुगल जलज पद कनक थार बिच, लखि निज तब मन बार ।
बँधुक सुमन मनहुँ रवि प्रमुदित, कर लै करत दुलार ॥
झुकत अलक मीजत पायस महँ, चुवत बदन तें लार ।

नील जलद जनु हरषि निमज्जत धवल गंग की धार ॥
अँचल मुख दै हसति कौशिला, लखि मन मोद अपार ।
"गिरिधर" सुमिरि बिभोर भयो जिय, भूलि गयो संसार ॥ ५३ ॥

(५४)

राघव खेलन को दूरि न जाओ,
नजर तोहे लग जायेगी ॥
अति सुकुमार चरण अरुणारे,
रविकर कठिन सुनहु मेरे बारे,
राघव आँचल में मुखड़ा छुपाओ ॥ नजर ००० ॥
लागत घाम बदन कुम्हिलैहै,
प्यास लगे चेहरा मुरझैहै,
राघव ! माता को ना तरसाओ ॥ नजर ००० ॥
अतिसि कुसुम सम देह तुम्हारी,
सरजू तट चले शिशिर बयारी,
राघव ! उधम अधिक न मचाओ ॥ नजर ००० ॥
अनुज सखन्ह मिलि खेलहु आँगन,
खाहु सप्रेम मधुर दधि ओदन,
लाला ! नैनों की प्यास बुझाओ ॥ नजर ००० ॥
कोमल चरण सरोज तुम्हारे,
दूर न जाओ मेरे दृग तारे,
राघव ! "गिरिधर" के मानस में आवो ॥ नजर ००० ५४ ॥

(५५)

राघवजू आजु अधिक अलसाने ।
छन मूँदत छन मध्य उघारत जलज नयन सरसाने ।
मनहुँ नील सम्पुट बिच खञ्जन उड़िवे को अकुलाने ॥
कनक पलंग पर आपु बिराजत रूचिर चदरिया ताने ।
मनहुँ इन्द्र धनु मध्य बिलसि रह्यो नील जलद सुखमाने ॥
गावत जननि शयन को मंगल सरस राग सुर साने ।
झाँकी निरखि दास "गिरिधरहूँ" बिनहीं मोल बिकाने ॥ ५५ ॥

(५६)

राघवजू के आज उनींदे नैन ।

मनहुँ साँझ सरसिज महँ बिलसत जुगल मधुप कर ऐन ॥
भूषन बसन बिखर गये सबरे शोभित सुन्दर रैन ।
मनहुँ सकल संतन मिलि राजत पावत सब विधि चैन ॥
प्रमुदित प्रभुहि सुवावत माता कहत मधुर बर बैन ।
झाँकी शयन राम लाला की बसे "गिरिधर" उर ऐन ॥ ५६ ॥

## (५७)

राघवजू आजु अधिक अलसात ।
खेलि खेलि लरिकन संग दिन भरि थकित भये सब गात ।
भूषण बसन शिथिल रज रूषित कमल बदन कुम्हिलात ॥
मोहत जलज नयन अरूणारे खुलत कबहुँ झपि जात ।
मनहुँ नील सम्पुट दोउ खञ्जन उड़न हेतु अकुलात ॥
इत उत चितव नींद बस लोचन पुनि पुनि चपरि जम्हात ।
जननि बसन मुख ढाँकि कबहुँ हरि कछु कछु ओदन खात ॥
धाइ पोंछि मुख बिहँसि दुलारति शिशुहि कौशिला मात ।
यह छबि सुमिरि राम की "गिरिधर" निरखि निरखि बलि जात ॥ ५७ ॥

## (५८)

**दोहाः-** अनुज सखा शिशु संग लै, खेलन गवने प्रात ।
"गिरिधर" प्रभुहि निहोरि कछु, कहति जननि सकुचात ॥

o ---- o ---- o ----

राघव खेलन दूरि न जाहु ।
एहि आँगन अनुजन्ह शिशु गन मिलि देहु बिलोचन लाहु ॥
तुमहि बिलोके बिनु पल जुग सम होत अधिक उर दाहु ।
जल बिनु कहहु मीन को केहि बिधि लालन होइ निबाहु ॥
समय समय दै हों मृदु मोदक मधुर मधुर कछु खाहु ।
गहरू भये मुख कमल सुखइहै बचन मानि हरषाहु ॥
तुम सबही के प्राण जिवन धन सुखी करहु सब काहु ।
बाल केलि तव लखि रघुनन्दन लोग अघाहिं उछाहु ॥
कछुक खेलि आवहु मेरे अंकन उबटन सलिल नहाहु ।
"गिरिधर" प्रभु बिलोकि प्रमुदित चित होहिं अवध के नाहु ॥

o ---- o ---- o ----

दोहाः- मातु बचन सुनि सकुचि कछु, बाल अनुज शिशु वृन्द ।
खेलत दशरथ अजिर शिशु, "गिरिधर" प्रभु सुर वृन्द ।। ५८ ।।

(५९)

राघव दूरि न खेलन जाहु ।
नियरे रहहु बाल अनुजन मिलि मुदित करहु सब काहु ।।
यहि आँगन खेलहु मेरे लालन मधुर-मधुर कछु खाहु ।
करहिं जननि सब दरशन नित तव रूप जलधि अवगाहु ।।
रविकर परत बदन मुरझाइहिं लागिहिं भूख तृषाहु ।
नजर लगाइ देइ कोऊ कबहूँ मिटिहहिं केलि उछाहु ।।
आनि देउँ चोगान खिलौना भवँरा गोलि चकाहु ।
सानुज राम लसहु "गिरिधर" उर देहु जनम कर लाहु ।। ५९ ।।

(६०)

राघव खेलन को मत जाहु ।
बिनु तव बदन कमल निरखे प्रभु सुख सपनेहु पति-आहु ।।
एहि आँगन सानुज मिलि बिहरहु बाल विनोद रचाओ ।
गोली भौंरा चकई खेलत नभ महँ चंग उड़ाओ ।।
भूखि लगि पकवान मिठाई तुरत मधुर कछु खाओ ।
दूरि गये पैहहु कँह लालन नेक मनहु समझाओ ।।
प्यास लगे सरयू शीतल जल अँचइ कै तृषा बुझाओ ।
मेरो यह मत अनुज सखन्ह कहँ लालन सकल सुझाओ ।।
अति हठ नीक न होइ ललन मेरे लखनहिं तुरत मनाओ ।
"गिरिधर" गोद बैठ बिहसहुँ प्रभु जिय की जरनि बुझाओ ।। ६० ।।

(६१)

दोहाः- भरत लखन रिपुदमन शिशु, सुभग सखा सब संग ।
खेलत 'गिरिधर' प्रभु निरखि, जननी लिये उछंग ।।

o —— o —— o ——

राघव ललन तेरे कोमल चरन कहीं कँकरिया गड़ि नहिं जाय ।।
नव राजीव चरन अरूणारे,
खेलन्ह बिनु पानहिन पधारे,
नीरज नयन मोद मंगल अयन, लाल तेरी मैं लेती बलाय ।।
रविकर उदित शीश नहीं छाहीं,

बदन निरखि सरसिज सकुचांहीं,
सूरज किरन परे असरन शरन, कहुँ मुखड़ा नहीं कुम्हिलाय ॥
लालन यहि आँगन मिलि खेलो,
कल बल बचन तोतरे बोलो,
चितवन चपल चाल मञ्जुल मचल, देखि सुषमा सरस सरसाय ॥
खेलन्ह को अब दूरि न जाओ,
ठुमुक ठमुक पग नाच दिखाओ,
सुन्दर सुअन देव बरसे सुमन दास "गिरिधर" बलि बलि जाय ॥ ६१ ॥

## (६२)

राघव सरयू नीर नहात ।
अँग अँग रूप उमंग उमगि रही लखि शत काम लजात ॥
कूजित बिहँग तरंग भंग बरसंग सखा सब भ्रात ।
शीतल मंद सुगन्ध सुखद बर बहत मलय मृदु बात ॥
करि आचमन प्रबिसि सरिता महँ आनंद उर न समात ।
पैरत कबहुँ मध्य जल भीतर कबहुँ कबहुँ उतरात ॥
केलि कुशल कीलाल लाल के पट पर सरस लखात ।
बाल रविहिं जनु हरषि इन्दु गन शोभित करत प्रभात ॥
बरसि सुमन सुर कहत जयति जय नर मुनि सिद्ध सिहात ।
झाँकी झाँकि दास "गिरिधर" के प्रेम पुलक अति गात ॥ ६२ ॥

## (६३)

दोहाः- अनुज सखा शिशु संग ले, राजत सरजू तीर ।
खेलत हँसत सकेलि प्रभु, भगत बछल रघुवीर ॥

o ---- o ---- o ----

राघवजू सोहत सरजू तीर ॥
नील तमाल जलद तन सुन्दर ।
शिशु भूषन भूषित गुण मंदिर ।
असित सुमन पर मनहुँ तारिका, सुन्दर श्याम शरीर ॥
पीत बसन करतल धनु सायक,
कटि निषंग जन जोहन लायक,
निखिल कोटि अग जग को नायक, हरन भगत भवभीर ॥
सोहत भरत परम सुख पाछे ।

लखन बिराजत दाहिन आछे ।
बाम लसत रिपुहन करि काछे, सन्मुख बालक बीर ॥
खेलत कर कमलन चौगाननि,
जनमन हरत मधुर मुसुकाननि ।
जोगी निरखि बिसारत ध्याननि "गिरिधर" लखि तजि धीर ॥ ६३ ॥

(६४)

राघव सरजु बर तट फिरत ।
संग अनुज सखा मनोहर बाल कौतुक करत ॥
नील नीरज मृदुल तन पर तडित बर पट धरत ।
बिबिध भूषन बसन बिलसत मनुज शिशु अनुहरत ॥
तून कटि करतल धनुष सर नृपति चरितहि करत ।
मन्द हिमकर हास आनन कुसुम शर मद हरत ॥
निरखि सुषमा बिबुध प्रमुदित सुमन नभ ते झरत ।
दास "गिरिधर" देखि यह छबि हरषि जय जय करत ॥ ६४ ॥

(६५)

राघव खेलत सरजू तीर ।
संग अनुज सब सखा मनोहर नील जलद गम्भीर ॥
अँग अँग लसत अनंग अमित छबि कटि तट लसे तूणीर ।
पीत बसन कर कमलनि मण्डित सभग शरासन तीर ॥
कूजत बिबिध बिहंग उमग मन शीतल सुरभि समीर ।
दरभ लागि अवधेश तनयके भइ मन भावति भीर ॥
जय जय कहत सुमन बहु बरसत जन धृत लोचन नीर ।
झाँकी झाँकि दास "गिरिधर" के पूरित पुलक शरीर ॥ ६५ ॥

(६६)

राघवजु के संग लसत तीनों भाई ।
नील जलद कहँ मनहुँ घेरि रहे चम्पक जुग जनु लाई ॥
अँग अँग लसत जराउँ विभूषण बसन मनोहरताई ।
जनु शिशु सुभग श्रृंगार विटप पर सुषमा बेलि लुनाई ॥
लषन भरत रिपुदमन सुमन सुचि प्रभुहि चितव न अघाई ।
पियत नयन पुट भरि भरि हर्षित प्रेम पियूष ललाई ॥
मोदक लें रघुवर कर कमलनि देकर चुटकि बुलाई ।

मिलत तिहु बन्धुन्ह ते आनन दशरथ लखि हरषाई ॥
प्रीति परस्पर चहुँ भाइन्ह की क्यों कहौ एक मुख गाई ।
सानुज प्रभु "गिरिधर" हिय हुलसत चलनि ललित लरिकाई ॥

o ----- o ----- o -----

दोहा :- को कहे दशरथ राउँ को मुनि जन दुर्लभ भाग ।
कंज चार बिकस्यो सदा "गिरिधर" हृदय तड़ाग ॥ ६६ ॥

## (६७)

राघव लसत शिशुगन संग ।
पुलक तन मन मुदित निरखत सरजु तरल तरंग ॥
श्याम बरूह बदन निंदत सहज सुन्दर अंग ।
रोम प्रति जनु रचि अथाई नटत अमित अनंग ॥
ललित पीत दुकूल दामिनि कटिहिं कलित निषंग ।
कमलकर कार्मुक शिलीमुख चितहि करत असंग ॥
मंद मृदु मुसुकात मुनिगन देखि बाल उमंग ।
चहत "गिरिधर" चपल मानस चरन सरसिज भृंग ॥ ६७ ॥

## (६८)

दोहाः- साँझ समय सानन्द प्रभु, सानुज सखन्ह समेत ।
आवत खेलि सकेलि छबि, "गिरिधर" चख सुख देत ॥

o ----- o ----- o -----

राघवजू साँझ समय घर आवत ॥
दिनकर किरण छिपत लखि नभ तरे ।
गुनि सुनि खगकुल नाद मधु भरे ।
कल बर अनुज बालकन लै फिरे ।
प्रभु हास बिलास बसावत ॥ राघवजू -------- ॥
रिपुहन कर कमलनि चौगाने ।
लखन विसिख - धनु धरि मुसुकाने ।
पाछे चलत भरत सुकुचाने ।
शिशुगन मोद बढ़ावत ॥ राघवजू -------- ॥
चढ़ि चढ़ि प्रमुदित कनक अटारी ।
चितवहि चिकित अवधपुर नारी ।
कनक थाल भरि रूचिर सुमित्रा ।

शुभ आरती सजावत ॥ राघवजू ———— ॥
श्याम शरीर धूरि अति सोहत ।
कर चकडोरी लखि मन मोहत ।
यह झाँकी "गिरिधर" जिय जोहत ।
गीत सरस रचि गावत ॥ राघवजू ———— ॥ ६८ ॥

(६९)

राघव छबि भरि नयन निहारति ।
रून्धि दृगन्ह बिच आँसु अरून्धति मुख कछु कहत न पारति ॥
मन महँ पुलकि बिसूरति सूरति कछु उपमा नहिं आवे ।
मनहुँ आय आश्रम नव जलधर चित चातकहि लुभावे ॥
किधौं नील सरसीरूह सुन्दर मन मधुकर मन लोभे ।
किधौं शरदपूनम शशि सहसा कानन नभ महँ सोहे ॥
किधौं प्रेम श्रृंगार रूप शिशु वेद पढ़न हित आये ।
किधौं सकल सुकृतन मेरे फल रिधि करि जलज पठाये ॥
किधौं चारि मनसिज मन भावन मञ्जु मेखला धारी ।
किधौं राजसुत बेष पधारे धरमादिक फल चारी ॥
एहि अन्तर रघुचन्द्र आइ गुरूतिय पद शीश नवायो ।
"गिरिधर" प्रभुहिं चूमि दै आशिष प्रेम उमगि उर लायो ॥ ६९ ॥

(७०)

**दोहाः-** झाँकी झाँकत राम की मन अति होत निहाल ।
नख सिख रूप अनूप अति सज्यो कौसिला लाल ॥

o —— o —— o ——

राघवजू की रवि तें होड़ परी ॥
वह गिरि उदित उदय यह जन उर गिरि निज उदय करी ।
वह नित अँथवत साँझ परी यह अँथवे न एक धरी ॥
जुगल प्रताप पुन्ज भव मोचन लोचन बास धरी ।
कमल कोक रञ्जन भय भञ्जन अति सुख ढरनि ढरी ॥
एक हरत निसि तुहिन एक खल कुटिल निहार हरी ।
तम रिपु एक एक निज जन के तिमिर त्रिदोष दरी ॥
सहस किरन एक एक अमित कर खलगन जूथ अरी ।
"गिरिधर" गिरा राम दिनकर की दासी चरन परी ॥ ७० ॥

## (७१)

राघव राजत हय पर आज ।
मनहुँ बलाहक पर अति बिलसत बिधु सजि साज समाज ॥
संग सखा शिशु अनुज कुँवर लसे सजि सजि भूषन साज ।
मनहुँ नील घन शशि मण्डल बिच उडुगन सहित बिराज ॥
कनक मुकुट सिर हरित बसन बन्यो धनु शर कर शुभ काज ।
नवल उमंग तरंगित आनन त्रिभुवन को महाराज ॥
झाँकहिं लागि झरोखन भामिनि तोरि सकल कुल साज ।
"गिरिधर" लखि तन मन को बारत जय दशरथ जुवराज ॥ ७१ ॥

## (७२)

दोहा:- रुचिर अश्व सोहत सुभग, दशरथ राजकुमार ।
मनहुँ श्वेत सरसिज लसत, नील जलद सुकुमार ॥

o ---- o ---- o ----

राघव लसत अश्व अभिराम ।
काक शिख बाल बिभूषन भूषित, जन मन पूरन काम ॥
चंचल तुरग कुरंग बिलोचन, मोचन भव भय धाम ।
इत उत चितइ चपल दृग चहुँ दिसि, जन मन दृग आराम ॥
चलत घरन सरजू तट सुन्दर रघुवर बाल ललाम ।
मनहुँ नील जलधर अति सोहत निज कर गहे लगाम ॥
पुर कुल वधू झरोखनि झाँकत, हय मिस सुषमा धाम ।
झाँकी सुमिरि दास "गिरिधर" मन रंगे रुचिर रंग श्याम ॥ ७२ ॥

## (७३)

राघव जू हय पर आज लसे ।
श्वेत बसन मन हरन विभूषन, अंग अंग पर लाजे शत पूषन ।
करकमल बाण सराषन करतल, ललित निषंग कसे ॥
संग सखा शिशु अनुज मनोहर प्रमुदित लखि लखि बदन सुधाकर ।
सरजू तीर सोहत सुषमा वर, नव रति नायक से ॥
लोहित ललाम लगाम बिराजत, भूषन विविध जड़ाउ के साजत ।
मूरति मृदु लखि मारहि लाजत "गिरिधर" हृदय बसे ॥
जय जय रघुकुल कमल रवि, जय कौशिला कुमार ।
जय जय "गिरिधर" के प्राणधन, जय मुन्ना सरकार ॥ ७३ ॥

## (७४)

राघव जू को रूचिर रूचिर श्रृंगार, बिलोकत लाजत शत शत मार ॥
सिर कनक मुकुट छबि छाई ।
कुण्डल छबि बरनि न जाई ।
लसे काजल नयन अरूण रतनार ॥ बिलोकत ------
क्या भाल तिलक की शोभा ।
लखि मदन शरासन लोभा ।
मुख लटकत ललित अलक गभुआर ॥ बिलोकत --------
तन पीत झिंगुलिया खूली ।
मनो दामिनि घन पर झूली ।
चल घुटुरून चरन सुभग सुकुमार ॥ बिलोकत -------
जब जननी ललन बुलावे ।
तब ठुमुकि ठुमुकि प्रभु आवे ।
"गिरिधर" यहि सुषमा पे बलिहार ॥ बिलोकत ------ ॥ ७४ ॥

## (७५)

राघव जननि गोद अति राजत ।
धूरि विधूसर देह राम शिशु, निरखि निजहिं शत मनसिज लाजत ॥
नील तमाल बरन श्यामल तन, भूषण बसन अनेक बिराजत ।
नील शैल पर मनहुं तडित मिलि, उडुगन जूथ लसे अति भ्राजत ॥
राजिव नयन मयन धनु सम भ्रू, अधर अरून बिम्बा जिमि सोहत ।
दुइ दुइ दसन सुधा सम तोतर, बचन सुनत मुनि मानस मोहत ॥
पाटल बरन अरून कर पंकज, चरन चारू चलि किलकत खेलत ।
धरन चहत चट काग चपल शिशु, सुषमा सकल सकेलि सकेलत ॥
पग नूपुर धुनि सुनि चकात चकि, चकित चितव शिशु चहुँ दिशि चितवत ।
रामभद्र झाँकी जिय जोहत, "गिरिधर" बिपति घटहिं नित रितवत ॥ ७५ ॥

## (७६)

राघव लसत जननि के अंक ।
अलि शावक खेलत जनु पयनिधि पयज पीत पर्यंक ॥
थन पय पियत बिहँसि कछु बोलत कल बल मञ्जुल बानी ।

बरटाबर उछंग जनु धुनि करे शिशु मराल सुख खानी ॥
असित अलक अति कुटिल लटक लसे प्रभु आनन अकलंक ।
माँगत मनहुँ अमिय मधुकर मिलि शारद अमल मयंक ॥
ललित खिलौना पर चल दृग छबि मो कहँ अति ललचावै ।
जनु पिंजर खञ्जन खग गन ते मिलन हेतु अकुलावै ॥
मृदु मुसुकात किलकि करूणा निधि ब्रह्म कौसिला गोद ।
झाँकी निरखि राम शिशु की यह "गिरिधर" कहँ अति मोद ॥ ७६ ॥

## (७७)

राघव मातु अंक आसीन ।
मनहुँ क्षीर सागर तरंग बिच पूरन हिमकर लीन ॥
बारहिं बार सप्रेम कौसिला प्रभु मुख सरसिज चूमे ।
पुनि पुनि सुतहि दुलारि मोद भरि, प्रेम मगन मन ऊमे ॥
किलकत ललित बिलोकि खिलौननि दुइ दुइ रद इमि सोहे ।
खञ्जन मनहुँ निहारि अरूण खग, धृत चपला मन मोहे ॥
अंग अंग लाजत अनंग शत नरपति बाल प्रवीण ।
रामभद्र शिशु रूप नीर निधि "गिरिधर" को मन मीन ॥ ७७ ॥

## (७८)

राघव लसत जननी के गोद ॥
आँचल तें मुख ढाँकि ललन को ।
मुदित पियावति माता थन को ।
चितवति पुनि पुनि सुत आनन को ।
बार बार विधु मुख बिलोकि हिय, उमड़त प्रेम प्रमोद ॥
निरखि निरखि सुर मन महँ हरषत ।
कुसुमावलि नभ ते बहु बरसत ।
बालक लै कौसल्या हरषत ।
सरसत राम बिहँसि किलकत अति, करि करि बाल विनोद ॥
पुलकि पुलकि रानी मुख चूमत ।
परमानन्द मगन मन ऊमत ।
"गिरिधर" लखि झाँकी यह झूमत ।
तनमन बारि राम पर हुलसित, उर महँ उमगत मोद ॥ ७८ ॥

## (७९)

राघव लसत कौसिला गोद ।
धूलि बिधूसर सुघर श्याम तन, करत अनेक विनोद ॥
मेचक कच कुंचित अति सुन्दर, लटकत मुख पर आय ।
मनहुँ शरद शशांक कहँ बरबस, घेरि रहे घन धाय ॥
गोल कपोल श्रवन श्रित कुण्डल, लखि उपमा इक आवे ।
मनहुँ मधुर सौन्दर्य मीन जुग, पाटल छुइ सुख पावे ॥
दुइ दुइ दसन अधर बिम्बाफल, तनिक तनिक मुसुकात ।
मनहुँ अरूण पल्लव पर बिलसित, दिनकर किरन प्रभात ॥
घुटुरून चलत किलकि मन भावन, निरखि बढ़ो आमोद ।
रामभद्र की यह झाँकी लखि, "गिरिधर' के मन मोद ॥ ७९ ॥

## (८०)

राघव लसत अरून्धति गोद ।
मरकत अतिसि तमाल कलेवर,
ललित अलक लटकति आनन पर ।
मनो सिंगार सारस दल ऊपर, नवघन करत विनोद ॥
मकरकेतु केतन कल कुण्डल,
सुभग नयन रद दाड़िम कुडमल ।
चंचल दृग मुसुकानि सुनिर्मल, बिलसत विधु गंगोद ॥
अंचल पटतर प्रभुहिं छिपावति,
पुलकित तन, दृग नीर बहावति ।
चूमि बदन बहु विधि दुलरावति, उमगि उमगि आमोद ॥
बिबुध सिहात सुमन नभ बरसत,
रिषि तिय हुलसि हुलसि हिय हरषत ।
निरखि राम छबि छिन छिन सरसत "गिरिधर" मगन प्रमोद ॥ ८० ॥

## (८१)

राघव लसत सुभग शिशु वेश ।
निरखि नयन भरि मगन मयन मन, हिय अति बढ़त अँदेश ।
शोभा कहि न सकत अनेक जुग, सहसहु सारद शेष ॥
मेचक कुटिल अलक अति कुंचित, लटकत मुख पर आय ।
जनु अलि वपु धरिइ अगनित मुनि गण, विधुहि घेरि रहे धाय ॥

उपर बिलोकि बिलोल खिलौननि, गहे चह पानि पसारी ।
जनु शरणागत जीव कृपाकरि, धरन चहत दनुजारी ॥
कर गहि चरन अनूठ अंगूठनि पियत बदन महँ मेलि ।
मनहुँ कौशिला निकट करत प्रभु, प्रणय प्रलय कल केलि ॥
किलकत कबहुँ बचन बर कलबल, हँसत बहोरि बहोरि ।
यह झाँकी शुचि रामलला की लिये "गिरिधर" चित चोरि ॥ ८१ ॥

## (८२)

राघव शिशु विनोद मोहि भावत ।
तरूण तमाल बरन तन सुन्दर, कोटिक काम लजावत ॥
मेचक कुटिल अलक मुख ऊपर कछुक लटक जब आवत ।
मनहुँ मत्त मधुकर अमरित हित शशि सन बिजय सुनावत ॥
लोल कपोल कनक कुण्डल छबि दृग काजल ललचावत ।
नासा तिलक भृकुटि अति सुन्दर निरखत चितहि चुरावत ॥
चंचल चलनि हँसनि चितवनि चख लखि मन कहँ बिलमावत ।
धूरि विधूसर ललित सयन सों बालक सखन्ह बुलावत ॥
ललकनि गहनि अरनि अनखन्ह हूँ देखत जिय तरसावत ।
तोतरि बचनि सुधामय मनहरि "गिरिधर" मन सरसाबत ॥ ८२ ॥

## (८३)

**विशेष :-** यह रचना आचार्य चरण ने सोमवार के दिन की है । इस दिन उनके आराध्य देव श्री राघव सरकार ने पद्धति के अनुसार श्वेत वस्त्र ही धारण किया था ।

राघव यह तुम्हारि मृदु झाँकी ।
सोइ जाने जेहि अन्तर दृगतें भावुकतावश झाँकी ॥
श्वेत बसन तन श्याम लसत मानो घन पर छबि चपला की ।
ललित धवल बर मुकुट शीश मानो सित मणिचन्द्र कला की ॥
भाल बिशाल तिलक रेखा मानो भुवन सकल द्युति चाँकी ।
खञ्जन दृग अञ्जन मन रञ्जन लसति भृकुटि बर बाँकी ॥
गोल कपोल बदन अरूणाम्बुज भूषन रतन हलाकी ।
मनहुँ नील मणि शिखर केलि रत रची सकेलि बलाकी ॥
अंग अंग लाजत अनंग लखि, सके कौन कवि आँकी ।
'गिरिधर' हृदय बसति निशि बासर शिशु छबि राम ललां की ॥ ८३ ॥

## (८४)

राघव यह तुम्हारि शिशु शोभा ।
चितवत सकृत हरत मुनि मानस सुजन नयन मन लोभा ॥
कंचन मुकुट कुटिल कच मधुकर तिलक रेख अति प्यारी ।
मनहुँ नील गिरि ऊपर मनसिज सुरपति चाप सँवारी ॥
गोल कपोल श्रवन सुचि कुण्डल बार बार झुकि झूमे ।
चंपक मनहु सरोज मुकुल कहँ परसि परसि चकि चूमे ॥
शरद मयंक बदन अति सुन्दर दसन जुगल अति सोहै ।
कमल कोष महँ मनहुँ मनोहर दाड़िम द्वै मन मोहै ॥
किलकत हँसत पसारि जलज कर ललित बिलोकि खिलौना ।
मनहुँ जुगल अंभोज प्रेम बस धरन चहत अलि छौना ॥
अंग अंग छबि काम कोटि लसे कहि न जाइ यह झाँकी ।
"गिरिधर" उर बिलसति निशि बासर किलकनि मञ्जुल बाँकी ॥ ८४ ॥

## (८५)

**विशेषः-** यह झाँकी बुधवार की है क्योंकि आचार्य चरण के श्री राघव सरकार बुधवार को हरा वस्त्र धारण करते हैं ।

राघव आज तुम्हहिं इमि देखौं ।
मातु अंक आसीन मुदित मन, सुस्मित आनन पेखौं ॥
जननि गोद अंचल सम्बृतमुख, लसत राम शिशु कैसे ।
इन्द्रनील मणि जलद पटल बिच, बिलसित शोभा जैसे ॥
कुटिल अलक लटकत कपोल पर, तहँ उपमा यह आवै ।
मनहुँ मत्त मधुकर गन प्रमुदित, कमल चूमि सुख पावै ॥
हरित बसन मन हरन लसत तनु, निरखि निरखि जिय मोहै ।
मनहुँ पाप हारन कारन हरि, हरित बन्यो अति सोहै ॥
किलकत जुग पसार कर पंकज, ललित बिलोकि खिलौना ।
मनहुँ पतित उद्धार हेतु प्रभु, फैलावत कर लोना ॥
को कहि सकै राम शिशु शोभा, सुमिरि मगन मन होई ।
"गिरिधर" मगन देखि झाँकी यह, पै राखत उर गोई ॥ ८५ ॥

## (८६)

राघव शोभित अनुज समेत ॥
धूरि बिधूसर नील जलद तनु, दशरथ रूचिर निकेत ।

मनहुँ नील पंकज पर बिलसत, श्वेत पराग समेत ॥
अनुज सखा चारिउ दिसि बिलसत, मध्य राम शिशु राजे ।
मनो मरकत अरू पदुम राग बिच, नील नीर धर भ्राजे ॥
कमल दलन ऊपर ओदन कन, दधि समेत यों सोहै ।
मनु शशांक सम्भृतकरि उडुगन, भावुक जन मन मोहै ॥
किलकत हँसत निहारि खिलौननि, ललकि ललकि प्रभु लेत ।
निसि दिन यह झाँकी रघुवर की, "गिरिधर" कहुँ सुख देत ॥ ८६ ॥

## (८७)

**विशेषः-** यह झाँकी शनिवार की है । इस दिन आचार्य चरण के ठाकुर श्री राघव सरकार नीले वस्त्र धारण करते हैं ।

**झाँकी** राजत नील बसन गत, कोशल सुता कुमार ।
मनहुँ नील नभ बिच लसे, नील जलद सुकुमार ॥
राघव की आज कैसी बनी झाँकी ॥
निरखतहिं बस होत चपल चित ।
बिसरत जग परिवार सकल बित ।
आनंद उमगत अनुछिन नित नित, अद्भुत यह छबि बाँकी ॥
बिहँसत कछु द्वै द्वै रद चमकत ।
दामिनि जनु नवधन बिच दमकत ।
सुखद सुगन्ध चहूँ दिसि धमकत बिधि की सीम कला की ॥
तिलक रेख बिच भाल बिराजत ।
निरखि जाहि मन्मथ सर लाजत ।
नील शिखर पर मानहुँ राजत जुग जुग रेख चला की ॥
जननी अली निरखि अति हरषत ।
गगन सुमन प्रमुदित सुर बरसत ।
"गिरिधर" को छन छन मन करषत किलकन राम लला की ॥ ८७ ॥

## (८८)

**दोहाः-** सो सुख तीरथ यज्ञ व्रत, सम दम अरू अस्नान ।
सो सुख उपजत बिनहि श्रम "गिरिधर" प्रभु गुन गान ॥

o ---- o ---- o ----

राघव तुम्हारि झाँकी मेरे चित्त को चुराती ।
आ आ के मञ्जु मन में सुख, दिव्यता दिखाती ॥

किलकन कपोल कुण्डल, मुख पूर्ण इन्दु मण्डल ।
भौंहें रसीली बाँकी मेरे नैन को लुभाती ॥
लोचन सरोज खञ्जन लसता है मञ्जु अञ्जन ।
छबि भक्त भीति भञ्जन अमिरामता लखाती ॥
घुटनों से मुड़के चलना गिर गिर के कछु मचलना ।
आँचल में लेके माता जब ब्रहम को छिपाती ॥
नटखट ! न दूर जाओ 'गिरिधर' के अंक आवो ।
करते तेरी प्रतीक्षा, बेला ही बीत जाती ॥ ८८ ॥

(८६)

राघवजू सब विधि आज सजे ।
कनक महल महँ नृप शिशु बिलसत लखि रतिनाथ लजे ॥
अरून नयन शुभ अयन मयन मद हरन बदन बिधु शोभा ।
इन्द्रनील मणि गत नव राजिव सुमिरि मिटत सब क्षोभा ॥
गोल कपोल कलित कल कुण्डल द्वै द्वै लसत डिठौना ।
मनहुँ मञ्जु कंजन पर शोभित रस भरि जुग पिक छौना ॥
रहस बिबस कछु हँसि कौसल्या लै शिशु थनहि पियावत ।
मनहुँ नील नीरद कहुँ सुरसरि अमिय को पान करावत ॥
भाल तिलक रज दृग महँ काजल मधुर हँसति हरि सोहै ।
छन एक कपट छाड़ि जड़ "गिरिधर" तैं हिय आँखिन जोहै ॥ ८६ ॥

(६०)

राघवजू दृग भरि तुम्हहि निहारौं ।
अंग अंग पर कोटि मदन छबि तिल तिल करि मैं वारौं ॥
कंचन मुकुट कनक श्रुति कुण्डल निरखत नैन न पारौं ।
कुटिल अलक वृत कमल बदन लखि जोग बिराग बिसारौं ॥
अरून अधर दाड़िम रद सुन्दर कहि उपमा हिय हारौं ।
नील जलद बिच कुन्द कलिन की सचि सुषमा उर धारौं ॥
भूषन ललित आनि उर अन्तर अँसुवन चरन पखारौं ।
दास "गिरिधर" कहे तेरी सौंह तुम लगि प्रानहिं धारौं ॥ ६० ॥

(६१)

**दोहाः-** सानुज सखा समेत प्रभु, आँगन खेलत खात ।
कौसल्या को सुकृत लखि, सुरमुनि सकल सिहात ॥

o ---- o ---- o ----

राघव चन्द मुख झाँकी हमरा मन के भावेले ।
लटके मुख पे अलकिया भाल सोभेले तिलकिया ।
कजरा नयन की पलकिया चितवा के चुरावेले ।।
दमके दुइ दुइठी दतुरिया जैसे मेघ में बिजुरिया ।
कर में छोटी ये अँगुरिया मनवाँ के लुभावेले ।।
सोहे पीअरी झिँगुरिया राजे देह पर धुरिया ।
सुन्दर साँवरी सरिरिया ध्यान बीच आवेले ।।
हिय पे सोहे मोति माल पग में पैजनि रसाल ।
"गिरिधर" देखि के निहाल लाल गीत गावेले ।।

o ---- o ---- o ----

दोहाः- तोतरि बचन सुधा सरिस, लैलसि चितहिं चुराय ।
किलकनि चितवनि लरखरिनि, "गिरिधर" मन बसि आय ।। ६१ ।।

## (६२)

राघव विधु आनन की झाँकी, कैसी मनमोहन न्यारी है ।।
भूलती नहीं वो पलभर को, कितनी मन भावन प्यारी है ।।
नवनील जलद सा तन श्यामल, दमके दतियाँ दुइ दुइ निर्मल ।
क्या भाल तिलक मंगल लसता, श्रुति कुण्डल की बलिहारी है ।।
सिर कनक मुकुट खञ्जन लोचन, कजरारे बारे भय मोचन ।
क्या सुन्दर लटक रही मुख पे, अलकें काली घुंघराली हैं ।।
लस रहे कपोल डिठौने हैं, राजते समीप खिलौने हैं ।
झीमी झिँगुली झिलमिल झलके, घन पे चपला ज्यों बारी है ।।
घुटनों से आँगन में चलते, कुछ डगमग चरन कमल डुलते ।
पग नूपुर सुषमा को लख के, "गिरिधर" की भारती हारी है ।। ६२ ।।

## (६३)

दोहा :- कौसल्या सुख मोदको को कहे पारावार ।
सगुण ब्रह्म राजत जहाँ शिशु राघव सरकार ।।

o ---- o ---- o ----

राघव मञ्जुल शोभा तुम्हारी छनिक मुझे भूले नहीं ।

जग पावनि झाँकी तुम्हारी छनिक मुझे भूले नहीं ॥
मन भावनि झाँकी पियारी, छनिक मुझे भूले नहीं ॥
गोल कपोल तिलक बाँकी सोहे ।
चंचल दृग चितवन चिर जोहे ।
विधु आनन की छवि न्यारी, छनिक मुझे भूले नहीं ॥
अरूण अधर कर कंकन सोहत ।
श्याम शरीर धूरि मन मोहत ।
सुनि किलकनि सुरति बिसारी, छनिक मुझे भूले नहीं ॥
किलकत हँसत घुटुरूअन धावत ।
कबहुँ कबहुँ मम सन्मुख आवत ।
कटि किंकिनि पैंजनी धारी, छनिक मुझे भूले नहीं ॥
लालन जनि निज बदन चुराओ ।
गिरिधर की अभिलाषा पुराओ ।
जय जय दशरथ अजिर बिहारी, छनिक मुझे भूले नहीं ॥

o ----- o ----- o -----

**दोहा** :- राजत बर भूषन धरे कोशलेन्द्र सरकार ।
'गिरिधर'' यह झाँकी निरखि, बिसरि गयो संसार ॥ ६३ ॥

## (६४)

राघव जू की विधु मुख शोभा, मुनिजन के चित्त चुराती है ।
घुँघुरारी लटें भी लटक लटक, चंचल मन को अटकाती हैं ॥
क्या शयन मनोहर सोह रहा चादर मुनि- जन- मन मोह रहा,
मनु चन्द्र सुभग अंकाधिरूढ़ अकलंक छटा छटकाती है ॥
सखि देख कमल से नयन बने, कभी मुँदते कभी उघड़ते हैं ।
राका बिलोक सरसिज शोभा, मानो सहम सहम सकुचाती हैं ॥
तन पर लसते सुन्दर भूषण, मानो शयन काल के हो पूषण ।
नवनील पयोधर पर मानो, उड्डुगन सुषमा सरसाती है ॥
तुम भूरि भागिनी कौशल्ये, रघुवर माता पद पाकर के ।
''गिरिधर'' के मृदु मानस तल पर, यह झाँकी रस बरसाती है ॥ ६४ ॥

## (६५)

राघवजू के भाल पे तिलक झलके, देखि हरषे नयनवाँ
नवल तमाल चारू श्यामल बरनवाँ ।

अंग अंग अनंग सुछबि छलके, देखि सरसे नयनवाँ ॥
कुटिल अलक चख लसत कजरवा ।
बिधु मुख दाडिम दसन झलके, देखि तरसे नयनवाँ ॥
घुटुरून चले पग बाजत पैंजनियाँ ।
धूरि तनु लखि हिय हेतु हलके, देखि बरसे नयनवाँ ॥
"गिरिधर" उर नभ घुमड़े बदरवा ।
मन मोर मुदित ललकि ललके, देखि हुलसे नयनवाँ ॥ ६५ ॥

## (६६)

राधवजू के ललित कमल मुख शोभा ॥
बरनि न जाति मनहि मन भावति निरखि भँवर चित लोभा ॥
शिशु सुभाय लटकत लटकनि लखि यह उपमा इक आवै ।
आदि जलज महँ चिर नर तन मिसि बिबुध मधुप होइ धावै ॥
मकरकेतु कुण्डल कुण्डल जुग चपरि कपोलन चूमै ।
मनहुँ बाल चपल बस दोउ गुरू भूमि तनय दिग झूमै ॥
मधुर मधुर मुसुकात रहस बस तोतरि बचन सुहाये ।
जनु विधु प्रेम बिबस होइ इत उत सुधा मयूख चुआये ॥
"गिरिधर" प्रभु मुसुकानि मनोहर सुछबि कि जाइ बखानी ।
दशन ब्याज जनु शशि मंडप पे चपला चपल लुभानी ॥ ६६ ॥

## (६७)

राधव शिशु छबि बरनि न जाई ।
शोभा कहत राम शिशु तनु की, शारद अमित लजाई ॥
असित कुसुम सम श्याम देह पर, मुकुट छटा बनि आई ।
मनहुँ नीलगिरि शिखर उपर गुरू, शोभा रही छबि छाई ॥
कमल कलित नयन रतनारे, भृकुटि मोहि अति भाई ।
मनहुँ निरखि मनोज धनु कहँ घन, रहयो मन अधिक ड़ेराई ॥
गोल कपोल मनोहर मुख पर, अलक लटकि रहि आई ।
शारद चन्द्र कहँ मेघ घटा जनु, घेरि रही बरियाँई ॥
कठुला कंठ माल उर राजत, कटि किंकिनि पहिराई ।
पीत झीनि झिंगुरी अति सोहति, लखि जिय रह ललचाई ॥
शिशु सुभाय प्रभु खात भात दधि, जूठन रह लपटाई ।
ता लखि सतत दास "गिरिधर" कर, मानस रहयो लोभाई ॥ ६७ ॥

राघव सहज सुहावने नैन ।
खञ्जन मृग सरसीरूह सकुचत, चाहत उपमा दैन
अरूण कोन कज्रल सुठि सोहत, सोभा कहत बनै न
मनहुँ सुभग विद्रुम बिच बिलसत, खञ्जन बपु धरि मैन
चपल होत गोलक दृग भीतर, जब चाहत प्रभु सैन
मनहुँ नींद जोषित अवलोकत, सकुचि चकित अति लैन
कुटिल अलक तें ढक्यों निरखि उर, बढ़त मोद को चैन
मनहुँ कमल मिलिबे कहँ घनपति, नभ समूह संग रैन
काम कमान कलित भृकुटी बिच, समता त्रिभूवन है न
तेहि लोचन "गिरिधर" कहँ निरखहुँ, नृप शिशु करूणा ऐन ।। ९८

(९९)

**कवित्त** :- धूरि विधूसर श्यामल अंग अनंग अनेकन की छबि लेख्यो
तोतरि बोलत खेलत आँगन अँगना भूरि सुहाग सरेख्यो
लोचन लोल सुगोल कपोल अमोल सुहास बिलास परेख्यो
"गिरिधर" भाव विभोर भयो ज्यों निरंजन के दृग अंजन देख्यो

o ---- o ---- o ----

राघवजू के नयन लसत कजरारे ।
बारक चितइ जिनहिं जोगिहि मुनि, जोग विराग बिसारे
गोद राखि अति मोद कौशिला शिशुहि चूम चुचकारे
कनक सलाक लगावत काजल ललित दृगन रतनारे
अरून नयन श्यामल पुतरी बिच अँजन आँजि सवारे
जनु विद्रुम सम्पुट बिच बिलसत, द्वै खंजन बर बारे
झाँकी झाँकि भूप रानी निज सुकृत समूह बिचारे
भूरि भाग तिरिछे दृग कछु हँसि "गिरिधर" ओर निहारे

o ---- o ---- o ----

**दोहा** :- कजरारे लोचन की, शोभा अमित अपार ।
सो "गिरिधर" को ध्यान रस, सोइ मंगल संसार ।।

(१००)

**दोहा** :- खेलत सानुज शिशुन्ह संग, मेलत सिर पर धूरि ।
झाँकी झाँकत झलक चित, "गिरिधर" जीवन मूरि ।।

o ---- o ---- o ----

राघव जू के लसत सिर पर धूरि ।
सकल सुख सौन्दर्य सीमा मदन मद करि दूरि ॥
धपरि निज करि कमल भरि भरि रजहिं मेलत अंग ।
मनहुँ सुरसरि धार बन्धुक तरणिजा कृत संग ॥
कुटिल कच रज शशि रूषित रहे घेरि कपोल ।
मनहुँ गंगा कन कलित घन कमल लसत अमोल ॥
चलत घुटुरून कनक आंगन लसत भूषन भूरि ।
सुमिरि "गिरिधर" छनिक छबि ये जो सजीवन मूरि ॥

o ---- o ---- o ----

दोहाः- धूरि विधूसर सुभग शिशु, नख सिख सुन्दर अंग ।
"गिरिधर" प्रभु हँसि जननि लखि लीन्हेउ मुदित उछंग ॥ १०० ॥

(१०१)

राघव छबि निरखहि मति मोरी ॥
दशरथ अजिर रूचिर महँ बिलसत श्याम गौर बरजोरी ।
मनहुँ चारू पंकज बिच प्रमुदित जुग श्रृंगार इक ठौरी ॥
खेलत खात अनुज बालक संग दधि महँ अँगुरिन बोरी ।
नील जलद जनु अरूण कमल कहँ अमिय पियाव निहोरी ॥
नख शिख लसत धूरि अति सुन्दर दधि महँ पीत पिछौरी ।
उडुगन विपुल रूप धरि चपलहि घेरत निज तृन तोरी ॥
निरखत मुदित अटा चढ़ि माता हँसत बहोरि बहोरी ।
यह शिशु रूप सुमिरि "गिरिधर" मति भइ जनु चंद चकोरी ॥ १०१ ॥

(१०२)

राघव जू को रूप ध्यान
मूरति मेरे नैननि बस गई —— ॥
साँवलि सूरति मोहनि मूरति,
कर में लिये धनु बान —— ॥
खञ्जन नयन अरूण रतनारे,
कुण्डल झलकत कान —— ॥
तिलक अलक विधु बदन अनूपम,
मधुर मधुर मुस्कान —— ॥

घुटुरून चलत तनिक हँसि किलकत
बिसरत निरखि अपान -------- ॥
"गिरिधर" मरन चहत दरशन बिन
तलफत मेरो प्रान --------- ॥ १०२ ॥

(१०३)

दोहाः- बालक रूप अनूप यह, सुठि सुन्दर सुकुमार ।
गिरिधर हिय नैनन तुरत, शोभा अमित निहार ॥

० ---- ० ---- ० ----

राघव रूप पै बलि जाऊँ ।
जननि अंक आसीन नयन भरि, निरखत हृदय जुडाऊँ
नील सरोज जलद मरकत की, उपमा कहत लजाऊँ
चेतन घन उपमेय सरिस उपमान कहाँ ते लाऊँ
अञ्जन कलित नयन कहँ खञ्जन, कहत निपट डरपाऊँ
करूणारस पूरन दृग सरि खग कहे निज गिरहिं लजाऊँ
गोल कपोल अलक मुख कहँ विधु कहत अधिक सकुचाऊँ
प्रभु आनन अकलंक सरिस शशि कहहु कहाँ मैं पाऊँ
अनुपम सब विधि राजकुँवर यह, लाज छोडि तोहिं गाऊँ
"गिरिधर" प्रभु के चरित सरित महँ दूषित मन अन्हवाऊँ ॥ १०३

(१०४)

दोहा :- राघव राजत जननि ढ़िग, पहिरि पीत परिधान ।
"गिरिधर" मन मधुकर करत, हरिहि रूप रसपान ॥

० ---- ० ---- ० ----

राघवजू शुभ पटपीत धरै ।
चपला मनहुँ लसत घन ऊपर, लखि मुनि मनहि हरे ॥
कनक मुकुट सिर श्रुति कल कुण्डल ।
बदन लसत सारद विधु मण्डल ।
नयन सरोज सरस कल कञ्जल ।
लखि जन बसहि करे ॥ राघवजू -----
भाल तिलक मनसिज सर सोहे
चाप समान भृकुटि मन मोहे
चितवनि चकित जोगिजन जोहे

जोग बिरति बिसरे ॥ राघवजू ------
नासा चिबुक कपोल मनोहर ।
अरूण अधर रद द्वै द्वै सुन्दर ।
उमगत आनन्द दसरथ मन्दिर ।
जननि समीप खरे ॥ राघवजू -------
लसत समीप अनेक खिलौना ।
मनहुँ बिनोद सुभग छबि छौना ।
राजकुमार रूचिर सुठि लोना ।
"गिरिधर" निरख अरे ॥ राजवजू --------

**कवित्तः-**

पीत परिधान सोहे भूषण छबीले पीत,
शीश पर कनक पीत मुकुट छबि न्यारी है ।
पीत सोहे कुण्डल दुकूल सोहे पीत पीत,
पीत ही जड़ाऊ छबि जिन की अति प्यारी है ।
नील नीरधर श्याम पियरे बन हैं देखो,
चतुर बिरंचि रचित कला सारी है ।
पीत पीत दिनकर की किरन भी है पीत आज,
"गिरिधर" प्रभु छबि देखि मति गति बारी है ॥ १०४ ॥

## (१०५)

राघव तव चितवन मोहि भावै ॥
बाल विनोद मोदरत मञ्जुल सुमिरत ही हिय आवै ॥
जेहि चितवत तेहि कर अध रितवत उर आनँद सरसावैं ।
मन मरूभूमि भगति रस धारा बिनु प्रयास बरसावै ॥
गोल कपोल लोल श्रुति कुण्डल, लहरि लहरि झुकि आवै ।
मनहुँ बृहस्पति जुगल चन्द्र कहँ चूमि चूमि सुख पावै ॥
अञ्जन कलित मार मद भञ्जन जलज नयन उघरावै ।
मनहुँ बान अवलोकि भीत अति, खञ्जन मन डरपावै ॥
भृकुटी विकट कारि शुभ पुतरी, लखि उपमा यह आवै ।
मनहुँ सुभग विद्रुम सम्पुट महँ नील रतन झलकावै ॥
तनिक तनिक हेरत दृग फेरत, मो कहँ अधिक लुभावै ।
रामलला "गिरिधर" कहँ चितवहु, भव बारिधि तलफावै ॥ १०५ ॥

## (१०६)

राघव बाल तिलक अति सोहत ।
नील शिखर पर गंग रेख जुग, ता बिच सरसइ मोहत ।।
खञ्जन दृग अञ्जन जन रञ्जन कल कपोल बर नासा ।
दामिनि द्युति दुइ दसन हरन मन चन्द किरन मृदु हासा ।।
चिक्कन चिबुक चिकुर चकोर सम, बदन इन्दु पर लटके ।
तोतर बचन सुधा सम सुनि सुनि मुनि जन को मन अटके ।।
किलकत घुटुरून चलत अजिर महँ कर अँगुरिन मटकावत ।
शिशु क्रीडा मिस मानहुँ निज ढ़िग, जड़ "गिरिधरहिं" बुलावत ।। १०६ ।।

## (१०७)

राघव बाल रूप मोहि भावै ।
बालवत्स ढ़िग हहरिं धेनु ज्यों, सुमिरत ही हिय आवै ।।
श्याम शरीर सुभग रज रूषित, पीत बसन छबि पावै ।
नील गगन महँ उडुगन मण्डल, मिलत मनहुँ सरसावै ।।
काजर कलित नयन अति सुन्दर, शशि मुख मोद बढ़ावै ।
जनु खञ्जन शावक दोउ बिधु महँ, अमृत पियत ललचावै ।।
मेचक अलक तिलक अति बांको भौंह कमान लजावे ।
दुइ दुइ दसन अधर मधुरारूण, हँसनि मोहि हुलसावै ।।
चपरि चलत घुटुरून नृप आँगन, लखि जननी सुख पावै ।
रघुकुल तिलक बाल शोभा नित, हरषित "गिरिधर" गावै ।। १०७ ।।

## (१०८)

राघव आज तुम्हहि निहारि ।
मैं मुदित लहयो रंक जनु प्रियतम पदारथ चारि ।।
जाहि ध्यावत जोगिजन तनमन स्वजीवन वारि ।
सोइ मम हित प्रगट रघुवर सुभग शिशु तनु धारि ।।
कुटिल कच लटकत बदन पर आँखि अति अरूणारि ।
मनहुँ पंकज कोष ऊपर लसत अलिगन धारि ।।
लसत पीत दुकूल तनु पर बाल रवि अनुहारि ।
धूरि धूसर अजिर बिहरत निज सुभाव बिसारि ।।
कोशिला के गोद राजत राम मुनि मन हारि ।
सतत "गिरिधर" मगन निरखत नयन निमिष निवारि ।। १०८ ।।

# (१०९)

दोहा :- राजत राघव सुभग शिशु, कौशल्या के अंक ।
प्राची दिशि के गोद जनु, लसत इन्दु अकलंक ।।

० —— ० —— ० ——

राघव मञ्जुल सुषमा तुम्हारी, सुछबि मोहे प्यारी लगे ।
देखत ही अतिशय मन मोहत ।
दारूण भव भय मोद अपोहत ।
भूली सुधि बुधि तनकी सारी ।। सुछबि मोहे ———
कुण्डल मुगुर तिलक अति भ्राजत ।
अलकें लखि अलि- अवली लाजत ।
विधु आनन की बलिहारी ।। सुछबि मोहे ———
खञ्जन नयन भृकुटि मनसिज शर ।
अरूण अधर मुसुकानि मनोहर ।
दमके द्वै द्वै दतुरिया न्यारी ।। सुछबि मोहे ———
किलकि किलकि कल घुटुरून डोलत ।
अनुज शिशुन्ह संग आँगन खेलत ।
लखि मोद मगन महतारी ।। सुछबि मोहे ———
बरनि न जाइ सुभग शिशु शोभा ।
चितवन चपल चितै मन लोभा ।
आजु "गिरिधर" मति गति वारी ।। सुछबि मोहे ———

० —— ० —— ० ——

दोहा:- जय कौशल्या सुभग सुत, दशरथ राजकुमार ।
जय जय "गिरिधर" प्राणधन, जय मुन्ना सरकार ।। १०९ ।।

# (११०)

राघव देह धूरि अति सोहत ।
अतिसी सुमन दलनि पर मञ्जुल,
पदुम राग रज जनु मन मोहत ।।
खेलत अजिर घुटुरूअन चहुँ दिशि,
अंग अनंग देखि बहु लाजत ।
कोटि चन्द चन्द्रिका छुरित जनु,
पंकज महँ नव नीरद राजत ।।

दधि ओदन कछु खात रहस बस,
शिशु सुभाय कछु धरनि गिरावत ।
मनहुँ अरून सरसिज पाटला कहँ,
शशि रस सुधा सकेलि पियावत ॥
जो रज जगत निरादर भाजन,
प्रभु तनु पाइ भई बड़ भागी,
निरखि दीन करूणा राघव की,
"गिरिधर" मति हरि पद अनुरागी ॥ ११० ॥

(१११)

राघवजू के मन्द मुसुकनिया अमिय रस सानल हो ।
ललना देखि मन भइले मोर निहाल, सकल सुधि बिसरल हो
कुटिल अलकिया मुख पै लटकत निरखि मन भटकल हो
ललना कुण्डल कलित कपोलवा सुमिरि जियरा ललचल हो
सिर सोहे कनक मुकुटवा सहस रवि सुन्दर हो
ललना झलकेला भाल पै तिलकिया मनहुँ गंगाधार सोहे हो
कजरारे चंचल नयनवा मयन मन मोहेला हो
ललना मुख सोहे दुइ दुइठी दतुलिया बिजुरिया जैसे चमकल हो
ठुमुकि चलैला राम अंगना बचनियाँ तोतर बोलेला हो
ललना धूरि भरि श्यामल शरीरिया बहुत नीक लागेला हो
जेहिं झाँकी लगि शिव तरसै नयन जल बरसेला हो
ललना "गिरिधर" हृदय तडगवा कमल राम बिकसेला हो ॥ १११

(११२)

राघवजू की मृदु मुसुकान निहार ।
मगन हौ निज तन मन को वार ॥
अति राजत दिव्य ड़िढौना ।
पाटल पर अलि जनु छौना ।
मनसिज है चितवन पै बलिहार ॥
मुख द्वै द्वै दतुरिया चमके ।
शशि में जनु दामिनि दमके ।
लखि अरून अधर की कान्ति अपार ॥
अलि अलक बदन पर लटके ।
मानो मधुप अमिय हिय अटके ।

नासा द्युति सुभग कपोल उदार ॥
कजरारे कञ्ज बिलोचन ।
कल बचन भगत भय मोचन ।
किलकनि लखि तन की सुरति बिसार ।
धन ध्यान सुधन मुनिवर के ।
साधन फल है "गिरिधर" के ।
नित हिय लसै दसरथ राजकुमार ॥ ११२ ॥

(११३)

राघव मृदु पद कमल तुम्हारे ।
मणिमय सुनख चन्द्रिका मण्डित शिरिष सुमन अरूणारे ॥
नील श्वेत अरूणाभ लसत अति जनमन मोहन हारे ।
मनु प्रभु दरस लागि ह्वै लालचि जुगल प्रयाग पधारे ॥
मरकत सरस अवध बीथिन्ह महँ जे हर ह्रदय पियारे ।
मनहुँ भूमि भूसुर सुरगन के द्रुहिन सुभाग सँवारे ॥
तारक परसि पाँय मुनितिय के बिगरी सकल सुधारे ।
ते इन्ह नयन दास "गिरिधर" अब प्रमुदित नेकु निहारे ॥ ११३ ॥

(११४)

राघवजू के चारू किलकनिया सुन मतिया हरलेला हो ।
ललना, तरसेला चंचल नयन जगत सब बिसरेला हो ॥
कनक अजिर लाल खेलै बचन तोतर बोलल हो ।
ललना, डोलत कमल चरनवाँ सकल भय भञ्जन हो ॥
कजरारे कमल नयनवाँ अञ्जन अति सोहेल हो ।
ललना, टेढ़ी टेड़ी मधुर भृकुटियाँ मदन मन मोहेला हो ॥
चमकेली दुइ दुइठी दतुरिया बहुत नीकि लागेला हो ।
जैसे बदरा के बीच बिजुरिया चमाचम चमकेली हो ॥
लखि लखि ललित खिलौना बिहँसि लाला दौड़ल हो ।
ललित "गिरिधर" ह्रदय अँगनवा सुभग शिशु बिलसल हो ॥ ११४ ॥

(११५)

दोहाः- राजत बालक मौलि मणि, कौशलसुता कुमार ।
झाँकी झाँकत गिरिधरहि, बिसरि गयो संसार ॥

० —— ० —— ० ——

राघव को देख मन मोहे गोद कौशिला जी के सोहे
भूषन विभूषित भूषन भूषन दूषन सकल बिछोहे ॥ गोद -----
नील सरोरूह श्याम सुभग तन लखि भव खेद अपोहे ॥ गोद -----
मोहन रूप मदन मनमोहन छबि बरनै कबि कोहे ॥ गोद -----
चितवत चकित अवधपुर भामिनी धाई अटन आरोहे ॥ गोद -----
"गिरिधर" सुमिरि सुमिरि यह शोभा अपलक नयनन जोहे ॥ गोद ॥ ११५

## (११६)

**दोहाः-** कुन्तिल मेचक ललित लट, लटकत ललित ललाट ।
बिधुहि मिलन जनु उडुगन, आवत रूप विराट ॥

o ---- o ---- o ----

राघव जू की मन्द मन्द मुसुकान ।
सुमिरि जन बिसरत सकल अपान ॥
क्या दिव्य दसन की झाँकी ।
मानो सिमटी चपल चलाकी ।
मुदित मन मगन होत कर ध्यान ॥ सुमिरि -----
यह मञ्जुल मुख की शोभा ।
जिसे निरख शरद शशि लोभा ।
जेहि संतत ध्यावत सकल सुजान ॥ सुमिरि -----
नव लटकत ललित लटूरी
मानो थिरकत चपला रूरी
कर विधुते प्रेम अमिय रसपान ॥ सुमिरि -----
लखि बिहँसि जननि उर लाये । निजधन पय पान कराये
या छबि पर "गिरिधर" बारत प्रान ॥ सुमिरि -------
**दोहाः-** पियत प्रेम रस पूर पय, कछुक कछुक मुसुकात
रघुवर या छबि निरखि के, "गिरिधर" बलि बलि जात ॥ ११६

## (११७)

राघव मन्द मन्द मुसुकात ॥
अधर पर रद द्विति लसत सो छबि बरनि नहिं जात
मनहुँ अरूण सरोज दल पर ओस पर्यो प्रभात

जननि थन प्रभु पिवत प्रमुदित बचन कहि तुतरात ।
सुनत सुधा समान माता हिय अधिक हरषात ॥
कुटिल अलक कपोल ऊपर लटकि अति सरसात ।
मनहुँ पाटल कोष पर मद मत्त अलि अलसात ॥
निरखि विधु मुख मुदित जननी हिय अधिक हुलसात ।
बसहु "गिरिधर" हृदय राघव बाल शिशु सह भ्रात ॥ ११७ ॥

## (११८)

राघव चन्द्र मुख मृदु हँसनि ।
कोटि मनसिज मन विमोहनि, ज्यों जलज बिकसनि ॥
अरुण अधर सुमध्य दुइ दुइ, दसन की बिलसनि ।
मनहुँ विद्रुम सम्पुटनि तें मुकुत की बर खसनि ॥
शिशु सुभाय सुचाय झलकत पीत पट कटि कसनि ।
मनहुँ प्रात सुअरुण पंकज ओस की सरसनि ॥
दीख चित्त निहाल प्रभु की, ठुमुकि महि पर खसनि ।
बसत "गिरिधर" उर मनोहर, बाल शिशु की बसनि ॥ ११८ ॥

## (११९)

दोहा :- अवधनाथ आँगन लसत, सुषमा शील निधान ।
सगुण ब्रह्म श्री राम शिशु, करत मात पय पान ॥

० ---- ० ---- ० ----

राघवजू की मधुर मधुर मुसुकानि ।
कौशल्या आँचर बिच बिलसति, बर सुषमा सरसानि ॥
मात चुवत पय अरुन अधर पर, लखि उपमा यह आनि ।
मनहुँ परब विधु पाटल सींचत, अमिय चन्द हित जानि ॥
झलकत चारु दतुरिया द्वै द्वै, सुमिरत सुधि बिसरानि ।
मनु चपला करि रुचिर हार बर, मेघ उपर बिलसानि ॥
गोल कपोल उठे कछु बिहँसत, सुछबि न जात बखानि ।
भौंहे मन हरनि बिलोकनि तिरछि, कल बल मृदु किलकानि ।
झाँकी झाँकि पुण्य फल मानति, प्रमुदित दशरथ रानि ।
"गिरिधर" ध्यान बिबस निशि हुलसति रघुवर की शिशु बानि ॥ ११९ ॥

## (१२०)

राघव तनु शोभित अति रेनु ।
नील जलद पर सित नीरद जनु, प्रणत काम सुरधेनु
खेलत अजिर लसत मन भावन, मनि पराग प्रति अंग
मनो मरकत पर पदम राग लसि, लाजत कोटि अनंग
शिशु सुभाय लेपत निज कर ते, श्याम देह जब धूरि
असित सुमन चंपक रज बिलसत, करत मदन मद दूरि
जननि कहेउ बरबस सिर पर धरे, पांसु हरन सब शूल
गिरिधर कहुँ सो मिलेउ कदाचित, प्रभु पद रज सुख मूल ।। १२०

## (१२१)

राघव हो तुम परम उदार ।
प्रणतपाल नर पाल बाल शिशु, सरबस सब श्रुति सार
जेहि लगि जोगि समाधि निरत रहे,
मुनि करें ब्रह्म विचार --- ।
सोइ नृप अजिर घुटुरूअन डोलत,
राघवेन्द्र सरकार ----- ।
धूरि विधूसर लसत श्याम तन,
नयन कमल कजरार ----- ।
दुइ दुइ रद दाडिम सम सुन्दर,
सुभग अधर अरूणार ------ ।
मुदित कौशिला गोद बिराजत,
कोशल राजकुमार ---- ।
बालरूप यह छबि "गिरिधर" मन,
निशि दिन रहत निहार --------- ।। १२१

## (१२२)

राघव मुख अति प्यारे दशन दमके बारे बारे
मनहुँ जलज दल मध्य कुन्द जुग चपला जनु घन कारे
कुण्डल झलक तिलक जनु मनसिज रूचि रूचि बान सँवारे
मृदु मुसुकानि अपान भूलावनि, कमल नयन कजरारे
गोल कपोल मनोहर चितवन मधुर अधर अरूणारे
रज रूषित शिशु भूषन भूषित मुनि जन के मन हारे

"गिरिधर" भयेउ विभोर राम शिशु तिरिछे जबहि निहारे ॥ १२२ ॥

## (१२३)

राघव भरि दृग तुम्हहिं निहारौं ।
देखि नयन भरि माधुरि मूरति सुख दुख सकल बिसारौ ॥
तरूण तमाल बरन श्यामल तनु पीत बसन सुठि सोहे ।
मनहुँ नील पंकज पर बिलसत, पद्म राग मन मोहे ॥
बिच बिच जड़ी जड़ाऊ झलकत, लखि उपमा यह आवै ।
मनहु चारू चपला पर उडुगन अति सुन्दर छबि पावै ॥
हाटक मुकुट श्यामकच जुत लसे यह शोभा अति न्यारी ।
मरकत शैल उपरि जनु विलसत धन विद्युत अति प्यारी ॥
केहि विधि कहहु बाल मति अद्भुत आज की अनुपम झाँकी ।
"गिरिधर" शोक शमनि भव मोचनि शिशु छबि राम लला की ॥ १२३ ॥

## (१२४)

राघव आजु तुम्हहिं निहारि ।
मैं मुदित लहि ललन जीवन, रंक ज्यों फलचारि ॥
धूरि धूसर श्यामतन पर मदन कोटिन्ह वारि ।
बदन पूर्ण शशांक सम लखि, नयन निमिष निवारि ॥
कुटिल कुन्तल लटकि मुख पर, लगत यों अनुहारि ।
मनहुँ नील सरोज दल पर, नचत मधुकर धारि ॥
शिशु सुभाय सकेलि करतें, लेत जब रज डारि ।
जनु अरूण अम्बुज जलद पर, रहे पराग पसारि ॥
किमि कहौं मुख एक तें, शिशु छबि सुजन मन हारि ।
दास "गिरिधर" निरखि शोभा, देह दशा बिसारि ॥ १२४ ॥

## (१२५)

राधव आजु तुम्हहीं बिलोकि ।
मिल्यो जनु रंकहि परम मणि, सकत मनहि न रोकि ॥
निरखि तव मुख चन्द्रमन महँ, बढ़त अमित उछाहु ।
मनहुँ जनम अनेक अंधहि, लह्यो लोचन लाहु ॥
लखि कुटिल लट लटकत मुख पर, चित्त इमी हरषाइ ।
मनहुँ गूंगहि मुदित मन मिलि, बिबुध भारति आइ ॥
सुमिरि किलकन बचन तोतरे, बढ़त हृदय उमंग ।

मनहुँ बिकल विशीर्ण अवयव, लह्यो मञ्जुल अंग ॥
कलित अञ्जन नयन खञ्जन, श्रवण कुण्डल लोल ।
लसति "गिरिधर" ह्रदय नित प्रभु, बाल छबि अनमोल ॥ १२५ ॥

## (१२६)

राघवजू के राजे सखि पायन्ह पनहियाँ ।
सोहे करकमलन्ह में तीर औ धनुहियाँ ॥
प्रात के कलेऊ करि लरिकन्ह संग में,
सरजू के तीर खेलें नूतन उमंग में,
मनवा के मोहे सखि लाली कुलहिया ॥
पीयर दुकूल सोहे कटि तरकसिया,
भूषण सवँरि सखि लसे जरकसिया,
निरखे निहाल भये बाट के बटोहिया ॥
लछिमन भरत रिपुहन संग भ्रात हैं,
मन्द मन्द मुसुकात करे कछु बात हैं,
इनके बिलोके होति पाप की मनहियाँ ॥
कोटि कोटि काम शोभा रूप धर बारे,
'गिरिधर' के चोरे चित्त कौशिला दुलारे,
नजरा लगावे जनि कोई टुनहिया ॥ १२६ ॥

## (१२७)

राघव जू तोरी केहि विधि कहौं लुनाई ।
जो उपमा आवै उर भीतर, सोइ सकुचि सिरूनाई ।
श्याम शरीर जलद ते उपमौ, तौ मन अति सकुचाई ।
चेतन ते परतरौ कहौं जड़ लागत मोहि खोटाई ॥
तरून तमाल करौं जो सखरि तलपि चित्त शरमाई ।
वह बन यह जन मन महं विहरत वह कटु यह मृदुताई ॥
जौ पें कहौ कमल सम चरनन्हि तौ अति होत छोटाई ।
वह कंटकित सदा यह कोमल निसि दिन अति सरसाई ॥
वदन मयंक करौं जो तुलना असंजस भयो आई ।
यह अकलंक कलुष पूरन वह उपमि कवन विधि जाई ॥
जौ पै काम सरिस सुन्दरता कहत लगति लघुताई ।
वह जार्‌यो शिव यहि निज चितमँह निशदिन रहत चतुराई ॥
ज्यों नभ सिंधु अनन्वय जानौ, त्यों तुमहीं रघुराई ।

रामभद्र आचारज यह सुनि, शिशु छबि रहे लवलाई ॥ १२७ ॥

## (१२८)

राघव आजु चन्द्र बनि सोहत ।
श्वेत बरन पट श्वेत विभूषण, श्वेत मुकुट अति सोहत ॥
श्वेत छत्र लसै श्वेत सिंहासन, श्वेत ही जटित बिछौना
श्वेत पलंग पर श्वेत चदरिया चहु दिसि श्वेत खिलौना ॥
माला श्वेत श्वेत श्रुति कुण्डल श्वेत झिंगुरिया खूली
श्वेत जलद मानो श्वेत चन्द्र बन्यो श्वेत दामिनी फूली ॥
श्वेत दशन मुख श्वेत धनुष शर, श्वेत रजतमय धारी,
श्वेत गिलास, हास बर श्वेत है झारी श्वेत निराली ॥
श्वेत लगाम ललाम लसित अति श्वेत बलाहक राजे,
श्वेत हरिण गौ को सरि सुन्दर लखत काम शत लाजे ॥
गुरू तिय श्वेत श्वेत आँचल पट श्वेत राम मन मोहे,
श्वेत बरन शिशु श्वेत नयन मन "गिरिधर" हरषित जोहे ॥ १२८ ॥

## (१२९)

### कलेवा गीत

राघव प्रमुदित करत कलेवा ।
रजत थार बिच विविध मिठाई, सरजू जल मृदु मेवा ॥
मातु सुमित्रा बिहँसि जेवावति, लिये गिलास लघु पानी ।
जेयत हरि अनुराग बिबस लखि, लखि जननी हरषानी ॥
कछुक खात कछु धरनि गिरावत, कछु अनुजहिं मुख मेलत ।
बाल केलि रस बिबस कृपानिधि, बाल भोग बिच खेलत ॥
कबहुँ मिठाई निज कर पंकज, कागहि चपरि जेवावत ।
रामलला को लखि यह कौतुक, नृप दसरथ सुख पावत ॥
कबहुँ किलकि बिधु मुख को जूठन पोंछि कौशिला सारी ।
यह कौतुक हुलसत 'गिरिधर' हिय, हँसत सकल महतारी ॥ १२९ ॥

## (१३०)

राघव मणि महँ लखि नज छाँहीं ।
किलकत निरखि चपल चख चहुँदिसि, घुटुरून तहँ चलि जाहीं ।
किधौं फटिक महँ लसत नीलघन, कै नभ की परिछाहीं ।
कै खेलत मणि खंभ मधुप वर, चितइ अधिक हरषाहीं ।

एकटक तकत निमेष न टारत, कबहुँक कछुक डराहीं ।
कबहुँक ताल बजाइ झुनुनझुन, प्रमुदित नृत्य कराहीं ।।
देखि हँसत जननी मुख आँचर, सुर हिय हरषि सिहाहीं ।
यह छबि सुमिरि बिसरि जग "गिरिधर" मुदित होत मन माहीं ।। १३० ।।

(१३१)

**दोहा** :- कनक अजिर राजत रूचिर, चारिहु राजकुमार ।
"गिरिधर" यह झाँकी सुभग, हिय के नयन निहार ।।

o —— o —— o ——

राघवजू के संग लसत तीनों भाई ।
नील जलद कहँ मनहुँ घेरि रहे, जुग चम्पक अलि लाई ।।
अँग अँग लसत जराऊँ विभूषण, बसन मनोहरताई,
जनु शिशु सुभग श्रृंगार कल्पतरू, सुषमा बेलि लुनाई ।।
लषन भरत रिपु दमन सुभग शुचि, प्रभुहि चितव न अघाई,
पियत नयन पुट भरि भरि हरषित, प्रेम पियूष ललाई ।
मोदक ले रघुवर कर कमलनि, देकर चुटकि बुलाई,
मेलत तिहुँ बन्धुन्ह के आनन, दशरथ लखि हरषाई ।।
प्रीति परस्पर चहुँ भाइन्ह की, क्यों कहौं इक मुख गाई,
सानुज प्रभु "गिरिधर" हिय हुलसत, चलनि ललित लरकाई ।। १३१ ।।

(१३२)

राघव ललना की झाँकी हमरा मन के मोहेले ।।
सोहे कुण्डल चारू कान मञ्जुल लट लटकान,
मन्द मृदु मुसुकान हमरा मन के मोहेले ।।
खञ्जन दृग कजरार सोहे कोना अरूणार
दाडिम दशन उदार हमरा मन के मोहेले ।।
चिक्कन कमल कपोल कुञ्चित चिकुर बिलोल,
शिशु की मधुर किलोल हमरा मन के मोहेले ।।
ऐसन कौशिला के लाल लखि के भइली निहाल,
बिसरल जगत के जाल हमरा मन के मोहेले ।।
अब तो गइली हम बिकाय ले लिन्ह चित्त के चुराय,
"गिरिधर" बलि बलि जाय हमरा मन के मोहेले ।। १३२ ।।

## (१३३)

राघव धूरि शीश जनि मेलो ।
हौं बलि जाउँ सुनहुँ मेरे लालन, अजिर शान्त ह्वे खेलो ॥
अबहिं नहाये सजे पटभूषण, अञ्जन नयन लगाये,
तुम पै बाल चपल अति नटखट, पल महँ तिन बिगराये ॥
करि मनुहार कहति हँसि जननी, दइहौं तुमहि खिलौना,
मानि जाहु सुत आरि करहु जनि, करहुँ कपोल डिठौना ॥
चलहु तात तोहि आन काग की, हँसि हँसि नृपति बुलावैं,
तिन के अंक बैठि कछु जेवहुँ, जनम लाभ हम पावैं ॥
सुनि भुषुण्डि की सपथ सकुचि हरि, छिप्यो अँचर महँ जाई,
"गिरिधर" हिय हुलसत नित बिलसत, राम सहित तिहुँ भाई ॥ १३३ ॥

## (१३४)

राघवजू की सरल सुखद किलकानि ॥
निरखि निरखि मन शिखि सम नाचे,
बहुरि बहुरि तेहिं छबि महँ राचे,
अपलक लोचन विधि पहिं जाँचे,
सकल सुमंगल खानि ---- ॥
देखत अमित मदन मन मोहे,
धोर घाम भव भेद बिछोहे,
उर महँ भगति प्रेरि आरोहे,
सेवत सब सुखदानि ---- ॥
अधर अरून दामिनि रद चमके,
विधु कर मँह उडुगन द्युति दमके,
निरखत भावुक जन चख ललके,
ललित सुतोतरि बानि ---- ॥
"गिरिधर" चितइ भयो मतवारो,
भूलि गयो जग को रस न्यारो,
उर रम्यो कोशलराज दुलारो,
मधुर मधुर मुसुकानि ---- ॥ १३४ ॥

## (१३५)

दोहा :- कौसल्या सुख मोद को, को कहे पारावार ।
सगुन ब्रह्म राजत जहाँ, शिशु राघव सरकार ॥

o ----- o ----- o -----

राघव मञ्जुल शोभा तुम्हारी, छनिक मुझे भूले नहीं ।
जगपावनि झाँकि पिआरी, छनिक मुझे भूले नहीं ॥
गोल कपोल तिलक बाँकी भौंहे,
चञ्चल दृग चितवत तिरछौंहे,
विधु आनन की छबि न्यारी, छनिक मुझे भूले नहीं ॥
अरूण अधर पर कंगन शोभित,
श्याम शरीर धूरि मन मोहत
सुनि किलकनि सुरति बिसारी, छनिक मुझे भूले नहीं ॥
किलकत हँसत घुटुरूअन धावत,
कबहुँ कबहुँ मम सनमुख आवत
कटि किंकिनि पैजनि धारी, छनिक मुझे भूले नहीं ॥
लालनजू निज बदन चुराओ,
"गिरिधर" की अभिलाष पुराओ,
जय दशरथ अजिर बिहारी, छनिक मुझे भूले नहीं ॥ १३५ ॥

## (१३६)

राघव करूणा निधान नृपति अजिर खेलैं ।
ठुमुकि ठुमुकि चलत अरत धरणि धाय गिरत परत ।
लसत चपल चिकुर निकर धूरि भूरि मेलैं ॥
लटक बदन ललित अलक भाल लसति कलित तिलक
पलक झलक कोटि काम सरस छबि सकेलैं ॥
पियरि लसति झीनि झिंगुरि विशद सुखद मनहुँ बिजुरि
नवल जलद पटल उपर झिलिमिलि करि झेलैं ॥
जननि मुदित लखि हुलास वदति 'राम भद्रदास'
आस त्रास हरनि चरण शरण राखु चलै ॥ १३६ ॥

## जीमन

राघव आजु जीमन करत ।
बैठि गोद वशिष्ठ मुनि के, मोद मन महँ भरत ॥
मर्योदल फल रूचिर दोननि बरनि सो क्यों परत ।
परसि सरजू जल अरून्धति आनि सन्मुख धरत ॥
संग शिशु बर सखा शोभित लखन रिपुहन भरत ।
मुदित गुरूतिय मुखनि मेलति कँवर मधुरस धरत ॥
चूमि चाहि दुलारि हरि कहँ बात आँचर ढ़रत ।
बरसि कुसुमनि गगन सुरगन हरषि जय उच्चरत ॥
कन्दमूल जिमाइ रामहि धरनि मुनिवर ढ़रत ।
झाँकि झाँकी दास "गिरिधर" अगम भवनिधि तरत ॥ १३७ ॥

(१३८)

राघव मेरे आजु घुटुरूअन आवत ।
घुटकी सुनि सुनि जननि पास हरि, किलकि किलकि चलि आवत ॥
जानु टेकि झुकि झाँकि रहस बस, कछु कछु शीश हिलावत,
पानि बढ़ाइ गहन चह कागहिं हिय अति मोद बढ़ावत ॥
सरकि सरकि पद पंकज पंजनि कर तल भूमि छुआवत,
मनहु दनुज पीडित बसुन्धरहि अभय दान दै आवत ॥
चरन पकरि कछु खैंचि सुमित्रा रामहि धरनि परावत,
उलटि चितइ चकपकत रोइ शिशु बहुरि दूर कछु जावत ॥
ठुमुकि ठुमुकि बाजत पैजनिया रूनझुन नाद सुनावत,
जनु मुनिजन मराल चरनन गहि हरि बिरूदावलि गावत ॥
दशरथ हाथ फिराइ घुनघुना शिशु कहँ विहँसि बोलावत,
यह सुषमा रघुवंशतिलक की, "गिरिधर" चितहि चुरावत ॥ १३८ ॥

(१३९)

राघवजू के मधुर अधर अरूणार, सदा मन अन्तर नयन निहार ॥
जिसे लख के मन ललचाये,
मानो रति पति आप बनाये,
मानो त्रिभुवन की शोभा को श्रृंगार ॥ सदा मन ---- ॥
शशि बन्धुक सुमन सवारे,

मानो आम के पल्लव बारे,
जनु शिशु रवि अरूण किरन को सार ॥ सदा मन --- ॥
लखि जननि उमगि हिय चूमे,
पुलकित तन गुनि गुनि झूमे,
जोगी निरखत जोग समाधि बिसार ॥ सदा मन --- ॥
लसे लटकन लट गभुआरे,
मानो जलद घटा अति कारे,
लसे ओदन पाटल उपर तुषार ॥ सदा मन --- ॥
हरि हरषि बिहँसि कल किलके,
तब द्वै द्वै दतुरिया झलके,
''गिरिधर'' या झाँकी पर बलिहार ॥ सदामन --- ॥ १३९ ॥

## (१४०)

राघव आज अश्व पर सोहत ॥
हरित बसन हरि सकल पीर हर, कटि तट लसै निषंग,
बाम पाणि मोदक दक्षिण धनु नूतन मुदित उमंग ॥
विविध बरन मणि जटित रजतमय लसै चहु ओर खिलौना,
कमल बदन चिक्कन कपोल पर द्वै द्वै ललित ड़िढौना ॥
मातु मुदित मन करति आरती लखि मृगया की झाँकी,
रामभद्र सहि ललचावति यह छबि राम लला की ॥ १४० ॥

## (१४१)

राघव आज करत जेवनार ।
कौशल्या के अंक बिराजत, कोशलेन्द्र सरकार ॥
छप्पन भोग छरस अति व्यञ्जन, भरि भरि कञ्चन थार,
बड़ो कँवल जननी मुख मेलत, मोद प्रमोद अपार ॥
बिच बिच सरयू नीर पियावत, उमगत ह्रदय उदार,
आँचल पोंछि बदन शशि सुन्दर, गावति मंगलचार ॥
मुदित सुमित्रा चँवर डोलावत कैकेयि मनि गन वार,
भाइन्ह सहित राम शिशु जेवत, ''गिरिधर'' प्राण अधार ॥ १४१ ॥

## (१४२)

राघव जेवत भाइन्ह संग
कनक भवन बिच जननि गोद मँह नख सिख सुन्दर अंग ॥

बिबिध भाँति मेवा पकवाननि भरे थार बहु रंग,
कनक कटोरन सरजु नीर तहँ, देखत बढ़त उमंग ॥
कछुक खात कछु भूमि गिरावत, कछु लपटावत अंग,
कर कमलनि अनुजनहिं खिलावत, प्रेम पुलक रस रंग ॥
जूठन देत भुषुण्डिहिं देखी, लेत चोंच भरि चंग
झाँकी झाँकि दास "गिरिधर" उर उपजी प्रीति उमंग ॥ १४२ ॥

(१४३)

राघव लाला को जिमावे, सुमित्रा सखि अति सुख पावे ॥
कनक महल महँ कनक कटोरन्ह, रूचि रूचि भोग लगावे ॥
व्यञ्जन विविध छरस बहु भातिन्ह, मधुर कलेऊ लावे ॥
बड़ो कवल मेलत मुख भीतर, आँचर बदन छिपावे ॥
कबहुक चूमि चूमि पोंछति, कबहुँक दूध पिआवे ॥
यह छवि सुमरि सुमिर तनु पुलकित, "गिरिधर" गुण गण गावे ॥ १४३ ॥

(१४४)

राघवजू को आज सुमित्रा साजति ।
चुपरि उबटि अँन्हवाइ सरजु जल, दृग बिच अञ्जन आँजति ॥
पुतरिन बिच अरूणारि अँगुरिअन आँजति उपमा बारति
कनक बेलि मानो मरकत सम्पुट, बन्धुक सुर सरसावति ॥
गोरोचन को तिलक भाल पर, अनुपम छबि कवि बरनी,
नील शिखर पर मनहुँ गंग सरसइ रेखा की करनी ॥
पट पहिराइ बिठाइ गोद महँ, मणि भूषण तन साजति,
झाँकी झाँकि दास "गिरिधर" मति सकुचति भारति लाजति ॥ १४४ ॥

(१४५)

दोहा- बालक रूप अनूप यह, सुठि सुन्दर सुकुमार ।
"गिरिधर" हिय नव नित हरष, शोभा अमित निहार ॥

० —— ० —— ० ——

राघव रूप पैं बिकि जाऊँ ।
जननि अंक आसीन नयन भरि, निरखत हृदय जुडाऊँ ॥
नील सरोज जलद मरकत की, उपमा कहत लजाऊँ,
चेतन घन उपमेय सरिस, उपमान कहाँ ते लाऊँ ॥

अञ्जन कलित नयन कहँ खञ्जन, कहत निपट सकुचाऊँ,
करूणारस पूरन दृग सरि खग, कहे निजमति शरमाऊँ ॥
गोल कपोल अलक मुख विधु सम, कहतहिं अधिक डेराऊँ,
प्रभु आनन अकलंक सरिस शशि, केहि विधि कहत सिराऊँ ॥
अनुपम सब विधि राजकुँवर यह, लाज छोड़ि तब गाऊँ,
गिरिधर प्रभु के चरित सरित महँ, दूषित मति अन्हवाऊँ ॥ १४५ ॥

## (१४६)

**दोहाः-** साँझ समय सानन्द प्रभु, सानुज सखन्ह समेत ।
आवत खेलि सकेलि छबि, "गिरिधर" अति सुख देत ॥

० —— ० —— ० ——

राघवजू साँझ समय घर आवत ॥
दिनकर किरण छिपत नभ तारे,
सुनि सुनि खग कुल कलरव न्यारे,
बोलि अनुज बालकन फिरे प्रभु,
हास बिलास बढावत ———— राघवजू ॥
रिपुहन कर कमलनि चौगाने,
लखन विषिख धनु धरि मुसुकाने,
पाछे चलत भरत सकुचाने,
शिशु गन मोद बढ़ावत ———— राघवजू ॥
चढ़ि चढ़ि प्रमुदित कनक अटारी,
चितवहिं चकित अवधपुर नारी,
कनक थार, लक्ष्मन महतारी
शुभ आरती सजावत ———— राघवजू ॥
झाँकी निरखि सुमन सुर बरषत,
दशरथ चितइ मनहिं मन हरषत,
शिशु स्वरूप हरि जनमन करषत,
"गिरिधर" कीरति गावत ———— राघवजू ॥ १४६ ॥

## (१४७)

राघव जू के चरन कमल अरूणारे ।
कुलिश कंज अंकुश ध्वज अंकित सज्जन मन के सहारे ॥
घुटुरून चलत नृपति आँगन बिच दिनकर कुल उजियारे ।

चमकत रवि प्रतिबिम्ब छलकि छबि कवि उर भाव सम्भारे
बाल दिवाकर निकर अरूणिमा विधि रचि स्वकर सँवारे ।
"रामभद्र आचारज" ते पद भरि निज नयन निहारे ॥ १४७ ॥

(१४८)

राघव क्यों न तजत लरिकाई ।
कंचन को माटी करि राखत रज पर अति ममताई ॥
अति पुनीत साकेत लोक तजि, भूमि प्रगट भे आई ।
छाँडि कनकमय पलंग अवध महँ खेलत धूरि सुहाई ॥
अवधपुरी मृदु रम्य जनकपुर सक्यो न तुमहि लुभाई ।
निजकर बलकल अनुज प्रिया संग चित्रकूट कुटि छाई ॥
कौशिक जनक वशिष्ठ नृपति की रूची न नेह सगाई ।
गोद राखि खग सोइ कृपा निधि नयनन नीर बहाई ॥
मातु सुमित्रा सासु सुनयना असन न सकी रिझाई ।
सोइ शबरी के फलहिं खात प्रभु माँगत पै न अघाई ॥
देखि दुखी सुग्रीव विभीषण सीय हरन बिसराई ।
अवध सखन को त्याग कृपानिधि कियो निषाद सगाइ ॥
प्रेम कनौड़ो एक सियावर सहज कृपालु सहाइ ।
अस जिय जानि छांडि छल "गिरिधर" पद सरोज बलि जाई ॥ १४८ ॥

(१४९)

राघवजू जब तव बदन निहरिहौं ।
तब सुरलोक लोक पालन्ह की सम्पति तृन करि डरिहौं ॥
जब किलकनि मुख मुसुकनि बिहँसनि लोचन घट महँ भरिहौं ।
तब मायामय भव विभीषिका तिल तिल तृन सम डरिहौं ॥
मृदु रून चलत चपल चख शोभा जब मन मंदिर धरिहौं ।
तब कलिकाल प्रपंच काठ ज्यों बिरति कुठारनि फरिहौं ॥
सहिहौं दुसह कलेश मौन हैं, तुम्ह कछु न उचरिहौं ।
'गिरिधर' सकृत राम शिशु झाँकी जबहि नयन पथ करिहौं ॥ १४९ ॥

(१५०)

राघव मुदित मातु ढिग जेंवत
कछुक खात कछु अवनि गिरावत जननि अँचर ओदन ते भेंवत ।
कनक कटोरन विविध जतन करि मेवा रूचिर सजाये ।

भाँति भाँति पकवान मिठाई सुधा समूह लजाये ॥
कबहुँ मातु अवलोकि वदन शिशु आँचर चपरि अंगोछति ।
कबहुँ लाय उर ललन नयन जुग पोंछन ते मुख पोंछति ।
मिरचि दशन तर परे ललन के नयन नीर भरि आये ॥
देखि धाय उर लाय सुमित्रा फूकि-फूकि शितलाये
पाछे ते झाँकी यह झाँकत दशरथ नृप मुसकानें ।
'रामभद्र आचारज' प्रभु ते जूठन लगि ललचानें ॥ १५० ॥

## (१५१)

राघव मोपै धर्यो नहि जाय, सुमित्रा याको पकरो जरा ॥
हौं धावति बर जोरि सयानी, पकरि न पावति सारङ्ग पानी ।
मैं तो मन में रही घबराय ॥
लघु-लघु ललित चरण अति सुन्दर थिरकत धावत् आंगन भीतर ।
लखि बाल मराल लजाय ॥
आनन पर दधि ओदन राजत, जनु विधु बीच तुषार विराजत
झाँकि झाँकी मैं रही ललचाय ॥
कोटि जतन गहिबे कँह धावत निकट न आवत पूप दिखावत ।
चले ठुमकि ठुमकि के पराय ॥
केहि विधि लालन को धरि लाऊँ आनन चूमि के अँचर चुराऊँ
लियो 'गिरिधर' के मन को चुराय ॥ १५१ ॥

## (१५२)

राघव जी के पायन में पनहिया हो हे सजनी बड़ नीक लागैं
कुटिल अलक जैसे लटके भँवरवा, उमड़त घन देखि नाचे जैसे मोरवा
सिर सोहे अरून कुलठिया हो हे सजनी । बड़ नीक लागै ॥
मदन के मीन जैसी कान सोहै बलिया, अमवा के पालव सी ओठवा की ललिया
रीसै जनि देखि के टोनहिया हो हे सजनी बड़ नीक लागै ॥
मन्द मन्द मुसुकानि दुइ दुइठी दतुरिया बदरा के मध्य जैसे चमके बिजुरियाँ ।
मुख लखि लाजेले जोनहिया हो हे सजनी बड़ नीक लागैं ॥
किलकि किलकि लाल थिरकै अँगनवाँ 'गिरिधर' निरखत भरिकै नयनवाँ
करतल सींक की धनुहिया हो हे सजनी बड़ नीक लागै ॥ १५२ ॥

(१५३)

धव दरपन मँह मुख जोहत ।
नक खचित सर बीच कमल लखि, मधुप मनहु मन मोहत ।
कटक रहे रोकि प्रभु पलकनि, दशन प्रभा लखि न्यारी ।
हुँ नील घन मध्य बिराजति, चपला द्युति उजियारी ।
ग-उमगि आनन्द निरखि हरि, गहन को हाथ बढ़ायो ।
ली पायो रोवत धाई लखी, अति अचरज उर आयो ।
चर ढाँकि बदन हँसे गुरूतिय, जननी देखि चलाकी ।
"गिरिधर" हिय हुलसत सुमिरत यह, राम लला की झाँकी ॥ १५३ ॥

(१५४)

धव छोड़ो रूदनवाँ रे बलैय्या लेती मैया तेरी ।
निमन के मोहनवाँ रे बलैय्या लेती मैया तेरी
ाज अनरसे भोर ते लालन, आरी करत नभ चन्दा को मागन ।
के खेलों अगनवाँ रे बलैय्या लेती मैया तेरी ॥
न घन्दा अम्बर महँ राजे, तू भूपति कर अजिर बिराजें ।
तो पूरन चन्दनवाँ रे, बलैय्या लेती मैया तेरी ॥
न सकलंक रहत दिन राती, तुम अकलंक जुडावहु छाती
न नभ के खेलनवाँ रे, बलैय्या लेती मैया तेरी ।
न मृगलाञ्छन अति दुःख पावत, तोहि मृगलोचनी हृदय छिपावत ।
ड़ो वाको मगनवाँ रे, बलैय्या लेती मैया तेरी ॥
ननी गोद ले सुत चुचकारति, आँचर ते रज पुनि-पुनि झारति ।
लों "गिरिधर" नयनवा रे, बलैय्या लेती मैया तेरी ॥
 प्यारे ललनवाँ रे, बलैय्या लेती मैया तेरी ॥ १५४ ॥

(१५५)

धव मणि महँ लखि निज छाँही
लकत निरखि चपल चख चहुँ दिसि, घुटुरून तह चलि जाही ॥
धौं फटिक महँ लसत नीलघन, कै नभ कै परिछाही ॥
 खेलत मणि खंभ मधुरवर, चितई अधिक हरषाही ॥
कटक तकत निमिष न टारत, कबहुँक कछुक डराही ॥
 हसत जननी मुख आँचर, सुर हिय हरषि सिहाही ॥
न छबि सुमिरि बिसरि जग "गिरधर" मुदित होत मन माही ॥ १५५ ॥

(१५६)

राघव कस न तजत यह बानी
दिनकर किरन निरखि आलस बस लेत चदरिया तानी
हाथ लिये सरजु जल कलशनि, ठाढ़ी सुमित्रा रानी
तुम अजहू सोवत नहि जागत, शिशु पन को हठ ठानी
मुदित कोक कोकी सरसीरूह, कुमुद बधू बिलखानी
पूजत खग मधुकर गन गुंजत, विटपलता अरूझानी
उठहु तात आनन विधु धोवहु, खुलही सुमंगल ख
'गिरधर' उर विहरहु प्रभु सानन्द, लसे ललित लरिकानी ॥ १५६

(१५७)

## विश्वामित्र जी के समक्ष दशरथ जी की प्रार्थना ।

राघव को मैं न दूँगा मुनिनाथ मरते-मरते ।
मेरे प्राण ना रहेंगे, यह दान करते करते ॥
जल के बिना कदाचित, मछली शरीर धारे ।
पर मैं न जी सकूंगा, इन को बिना निहारे ॥
कौशिक सिहर रहे हैं, मेरे अंग डरते-डरते ॥ राघव .........
कर यत्न चौथे पन में सुत चार मैने पाया ।
पितु मातु पुरजनों को, रघुचन्द्र ने जिलाया ।
लोचन चकोर तन्मय, छबि पान करते-करते ॥ राघव .........
चलते बिलोक प्रभु को, होगा उजाड़ कोशल ।
मंगल भवन के जाते, संभव कहाँ से मंगल ।
सींचे कृपालु तरू को, मृदुपात झरते-झरते ॥ राघव .......
होवें प्रसन्न मुनिवर, लें राजकोष सारा ।
रानी सुतों के संग में, बन में करूँ गुजारा ।
ले गोद राम शिशु को, सुख मोद भरते-भरते ॥ राघव .......
लड़के है राम लक्ष्मण, कैसे करें लड़ाई ।
"गिरिधर" प्रभु को देते, बनता नहिं गुंसाई ।
कह यूं पड़े चरण पर, दृग नीर ढ़रते-ढ़रते ॥ राघव ....... ॥ १५७

(१५८)

राघव करत जज्ञ रखवारी ।
मुनि कौशकहिं भरोस देइ प्रभु दीक्षा महँ बैठारी

द्वादश बरिस तें अलप मधुरबय तून बान धनुधारी ।
काक पक्ष सिर कटि पीताम्बर शिखा लसत द्वितिकारी ॥
पाछे वीर लखन धनु शर धरे इत उत चितव सुखारी ।
मनहुँ बीर रस सागर उमड़्यो कौशिक बिपिन मझारी ॥
बिनु फर सरहित फेंकि दियो हरि नीच मरीच सुरारी ।
पावक शर जार्‌यो सुबाहु पुनि निशिचर कटक संभारी ॥
रिपु रन जीति राखि कौशिक मख मिथिला नगर सिधारी ।
शाप पाप रत पतित अहल्या पद पराग तें तारी ॥
मोहे जनक नारि नर सिगरे रूप मोहिनी डारी ।
भंजि शंभुधनु भृगुपति मद हरि बरी विदेह कुमारी ॥
आई अवध बरात मुदित मन बधुन्ह सहित सुत चारी ।
'रामभद्र' की करति आरती प्रेम मगन महतारी ॥ १५८ ॥

## (१५९)

## अहल्या प्रसंग

## विश्वामित्र जी का निवेदन ।

राघव जू जौ जिय लाज धरहुगे ।
तौं प्रभु अधम अनाथ नारि के, कैसे दुःख दूर करहुगे ॥
दीन दयालु पतित पावन जस क्यों सब भुवन भरहुगे ।
क्यों हरि कोटि कोटि पतितन को अनायास उधरहुगे ॥
ज्यौं जिय जानि अहल्या पापिनि सुगतिहि देत डरहुगे
"रामभद्र दासहिं" तौं केहि विधि अपनो करि उबरहुगे ॥ १५९ ॥

## (१६०)

## राघव समक्ष विश्वामित्र जी कहते हैं-

राघवजू जौं नहीं उधरोगे ।
को कहिहैं तौं तुम्हहि कृपानिधि जौ नहीं कृपा करोगे ॥
तौ शत कलप रहिहि पातकि यह जौं सिर पद न धरोगे ।
जौं करिहौ निठुराइ कवनि विधि या करि दुरित दलोगे ॥
तौ नहिं दीन दयालु अहल्यहिं जौं हठ बस निदरौगे ।
ऐसी जो बनि रही तो "गिरिधर" को केहि विधि पाप हरोगे ॥ १६० ॥

## (१६१)

राघव कर कंज अरूनार मोरी सजनी ।
देखि मैं तो गई बलिहार मोरी सजनी ॥
कुलिस कठोर शंभु धनु भंज्यो, भुजबल अतुल अपार मोरी सजनी ॥
रावण बाण आदि भूपत मद, निमिष में कर दियो, छार मोरी सजनी ॥
शिव धनु तोड़ मंच पर ठाढ़े, दशरथ राजकुमार मोरी सजनी ॥
कौशिला के कोख पर तन मन वारिये री,
सुषमा पे कोटि-कोटि मार मोरी सजनी ॥
मिथला के नर नारी, धन्य भाग भये आली,
पाये प्रिय पाहुन उदार मोरी सजनी ॥
जनक को प्रण जयो, ''गिरिधर'' को हित भयो,
चिर जीवो सिया के सिंगार मोरी सजनी ॥

## (१६२)

राघव राउर महिमा जग में अपरंपार बा,
अगम उदार बाना ॥
दशरथ गेह मनुज तन धारे, कीन्हे सुर मुनि साधु सुखारे
तीनों लोक में माचल जय-जय कार बा, अगम उदार बा ना ॥
मग में दुष्ट ताड़का मारी, कीन्हे कौशिक मख रखवारी,
मुनि के मन में उमगल आनन्द अपार बा, अगम उदार बा ना ॥
पग ते परसि अहिल्या तारे, मिथला नगरी में पग धारे,
नृप के मन में राजत, कौशिला कुमार बा, अगम उदार बा ना ॥
तृन ज्यों शंकर धनु ही तोरे, भूपन केर घोर मद मोरे,
उर में पहिरे अब तो, सीताजी के हार बा, अगम उदर बा ना ॥
सुनि के परसुराम जी आये, धनु दे कानन आप सिधाये,
नभ ते सुमन वृष्टि के, होत गजब बौछार बा, अगम उदार बा ना ॥
सीताराम बिवाह सुहावन, गावत गिरिधर मुनि मन भावन
सुख से उमड़ा अब तो मिथला के देखवार बा, अगम उदर बा ना ॥ १६२ ॥

## (१६३)

राघव मिथिला के बने महेमान कैसी झाँकी झाँकी बनी ।
पहिरे सुभग बियहूती धोती, पियर उपरना काखा सोती

देखि बिसरल सबको अपान । कैसी बाँकी झाँकी बनी ॥
सोहति माथे मणि जटित मुउरिया,
नील जलद पे चमके बिजुरिया,
लाजे अलि लखि लट लटकान । कैसी बाँकी झाँकी बनी ॥
खंजन नयन कलित कजरारे,
भाल तिलक अति रूचिर सवाँरे,
सोहे भौंह जैसी काम की कमान । कैसी बाँकी झाँकी बनी ॥
कुण्डल कनक सुभग अति नासा,
अरून अधर ससि कर सम हासा,
सोहे पान मुख मन्द मुसकान । कैसी बाँकी झाँकी बनी ॥
वाम भाग दुलहिन छबि पावत,
उपरोहित दोउ देव पुजावत,
देखि जनकजू को भूल गयो ज्ञान । कैसी बाँकी झाँकी बनी ॥
मण्डप लसति राम सिय जोरी,
ग्रथित चूनरी पियरी पिछौरी
करे 'गिरिधर' सुमंगल गान । कैसी बाँकी झाँकी बनी ॥ १६३ ॥

(१६४)

राघव घोड़े चढ़ि द्वार पे बिराजे सजनी ॥
धारे ललित लगाम, जड़े भूषण ललाम
तीनों भाई संग बेष बर, छाजे सजनी ॥
माथे मणि मौर सोहे, मुख पान मन मोहे,
अंग-अंग पे अनंग कोटि लाजे सजनी ॥
नाचे चंचल तुरंग, भरे नूतन उमंग,
दुलहा संग में तरंग, रंग साजे सजनी ॥
देखि हरषें बराती, प्रेम मुदित हैं घराती
बरसें फूल सुर बाजे बहु बाजे सजनी ॥
पहिरे पीली बर धोती, उर में हार लसे मोती,
ज्योति जगमगे महावर सुसाजे सजनी ॥
सासु आरती उतारे, सखी मुरति निहारे,
राजा तन मन वारि के, बिराजे सजनी ॥
दिव्य मंगल हुलास, गावें 'रामभद्रदास'
हास सीता के निवासहूँ, निवाजे सजनी ॥ १६४ ॥

(१६५)

राघवजू के सोहे सखि पियरी पिछौरिया हे ।
सखि, सियाजू के सोहे ललका पटोर हे,
खोलि के ओहार नारि देखत दुलहिनी हे,
सखिगन भइली सब भाव में विभोर हे ॥
मंगल कलस सजि मुदित सुमित्रा रानी
सखि, कोशिलाजी आरती के थार हे ॥
कैकयीजी प्रमुदित रतन लुटावती,
सखि, हय गय धन मनिहार हे ॥
गह गह बाजे नभ शंख शहनैया हे,
सखि, आई अवध बरियात हे ॥
परिछन चलीं सब प्रेम उमग बस
सखि, पुलकि प्रफुल्लित गात है ॥
आरति करति मातु लखि लखि हरषित,
सखि, वधुन्ह सहित सुत चारि हे ॥
अरघ प्रसून झरि मंदिर में लइचलीं
सखि, शिविका से सियाके उतार हे ॥
घूंघट उघारि मुख निरखंत सासु सब
सखि, रहस बिबस रनिवास हे ॥
दुलहिनि दुलहा के लखि लखि वारत,
सखि, सरबस 'रामभद्रदास' हे ॥ १६५ ॥

(१६६)

राघव धीरे चलो ससुराल गलियाँ ।
मिथिलापुर की नारी नवेली,
मोहित छबि लखि रंगरलियाँ ॥
पीत उपरना कानन कुण्डल,
लटकत माथे मौर लरियाँ ॥
तुम्हहिं बिलोकि ना नजरा लगावें,
जनक नगर की सब अलियाँ ॥
मुनि तिय ज्यों पद परसि तिहारो,
हीरा मोति मनि होइहैं ललिया ॥
"गिरिधर" प्रभु लखि प्रेम बिबस भई

रबिहिं निरखि ज्यों कमल कलियाँ ॥
राघव बचके चलो ससुराल गलियाँ ॥ १६६ ॥

(१६७)

राघव सियाजू की जोरी मदन रति लाजे करोरी ।
घन दामिनि सम दुलहा दुलहिनी,
सबहीं के लिये चित चोरी ॥ मदन रति ॥
इत जामा उत पियरी चुनरिया
उत टीका इत मौरी ॥ मदन रति ॥
अंग अंग लसत विवाह विभूषन
उपमा न लहे मति भोरी ॥ मदन रति ॥
इकटक नगर नारि नर निरखहिं,
नैनों पे ड़ारे ठगौरी ॥ मदन रति ॥
मंडप मध्य पाइ गुरू आयसु,
पूजहिं गनपति गौरी ॥ मदन रति ॥
मनहुँ काम आराम कल्पतरू,
कल्पलता इक ठौरी ॥ मदन रति ॥
पानि गहन लजाहुति भाँवरि,
सिंदुर परत बहोरी ॥ मदन रति ॥
गान निशान प्रसून वेदधुनि
उमग अनंद हिलोरी ॥ मदन रति ॥
मिथिला अवध उदधि उमग्यों जनु
प्रेम प्रमोद न थोरी ॥ मदन रति ॥
बरसहिं सुमन बिबुध कहि जय जय,
रघुवर जनक किशोरी ॥ मदन रति ॥
"गिरिधर" सुमिरि जुगल छबि हुलसत
जुग जुग जिये यह जोरी ॥ मदन रति ॥ १६७ ॥

(१६८)

राघव सिया संग देत भवरिया है ।
भवरिया भवरिया भवरिया हे ॥
मँडवा के बीच राजे दुलहा दुलहिनी,
जनु नभ रोहिणी अजोरिया हे ॥
कनक कलश कर करत परिक्रमा हे,

सोहे जैसे जलद बिजुरिया है ॥
आगे आगे दुलही दुलहा पाछे पाछे सोहे,
नील तरू कनक बलरिया हे ॥
जोरी लसै गाँठि जोरि सीता की चुनरिया,
रामजू की पियरी पिछौरिया हे ॥
लोचन के लाभ लूटे सिगरे बरतिया,
अलिगन लखि तृन तोरिया हे ॥
इतहिं वशिष्ठ मुनि उतहिं सतानन्द,
वेद मन्त्र पढ़ैं दोउ ओरिया हे ॥
भाँवरि बिधान करि कर लै सिंदुरवा,
सिया माँग भरत साँवरिया हे ॥
'गिरिधर' निरखि हरषि यह जोरिया,
गिरा लखि भयी है बवरिया ॥ १६८ ॥

(१६९)

राघव न मन सकुचाओ, सलाई से बाती मिलाओ ।
ठनि- गनि करत निरखि सखि बोली,
लालन बिलम्ब न लाओ । सलाई से ॥
कनक सलाइ को मेलि के अँगुरिअन,
हमको मनोरथ पुराओ । सलाई से ॥
नेंगा काह हम तुम कहँ दैबे,
मिथिला में शान्ति को लुटाओ । सलाई से ॥
करि लहकौरि हेरि सिय आनन,
लोचन जुगल जुड़ाओ । सलाई से ॥
यह न होइ शिवधनु को तोरन,
इहाँ महतारी मँगाओ । सलाई से ॥
कोहबर रीति करहु सब प्रमुदित,
सासू से जनि शरमाओ । सलाई से ॥
'गिरिधर' बिहँसि चारूशीला कहे
सिया पग शीश नवाओ । सलाई से ॥ १६९ ॥

## श्री जानकी चरित्र

राघवानन सुधाकर चकोरी सिया,
मर्त्य भूपर भी आई प्रभु के लिये ॥
हो के जननी जगत की जनक राज गृह,
बालिका बन के जाई प्रभु के लिये ॥
विप्र सुर संत हित भूप शिशु रूप धर,
धूलि धूसर निरख खेलते राम को ।
प्राणपति पद्म पद अंकिता भूमि को,
अपनी माता बनाई प्रभु के लिये ॥
धन्य मिथिला भई मोद मंगलमई,
सीता प्रगटी सरसता सरस सरसई ।
चारू चंपक बरन कन्यका रूप में,
केलि कौतुक रचाई प्रभु के लिये ॥
प्रेम में ही बना मूर्ति सिकतामई,
करती प्रिय का नयन जल से अभिषेक वो ।
सुन के नारद के मुख से सुयश नाथ का,
रातदिन तलफलाई प्रभु के लिये ॥
कोटि उपवास व्रत नेम जप तप किये,
दिव्य आशीष सुर महि सुरों के लिये ।
पूजी शिव चाप गणनाथ गिरिवर सुता
प्रात गंगा नहाई प्रभु के लिये ॥
नृप जनक से धनुर्भंग का प्रण करा,
शंभु द्वारा दिला स्वप्न ऋषिराज को ।
प्रेरणा भी स्वयं देके कोशलपुरी
गाधिसुत को पठाई प्रभु के लिये ॥
आये राघव लखन देखने को नगर,
पुष्प संकेत सखियों के द्वारा दिया ।
मन को देके निमन्त्रण सुमन बाग में,
गौरी पूजन को आई प्रभु के लिये ॥
वाटिका में प्रथम दिव्य दर्शन हुआ,
मानो खोई हुई निधि उन्हें मिल गई ।

लोचनों में चुराकर विदेहात्मजा,
देह सुध बुध गँवाई प्रभु के लिये ॥
कल पुनः इस समय सुन सखी का बचन
जा भवानी भवन की प्रणति प्रार्थना ।
पार्वती को विनय प्रेम से तुष्ट कर,
सत्य आशीष पाई प्रभु के लिये ॥
शिव धनुष तोड़ने के समय राम का,
देख कोमल कलेवर सहम सी गई ।
अल्प हो चाप गुरूता यही प्रार्थना,
शिव उमा को सुनाई प्रभु के लिये ॥
टूटा शंकर धनुष छूटी कुसुमावली,
सौंपी जयमाल राघव गले मैथिली ।
ब्याह आई अवध तज पिता का भवन,
नव बधू बन सुहाई प्रभु के लिये ॥
राम की सहचरी बन के बनिता भली,
पद्म पद से बिपिन कण्टकों में चलीं ।
चित्रकूटाद्रि पर तापसी बन सिया
कष्ट दारूण उठाई प्रभु के लिये ॥
लीन हो अग्नि में युद्ध लीला करा,
राम राजा की रानी बनी जानकी ।
होके 'गिरिधर' निखिल लोक की स्वामिनी
सेविका व्रत निभाई प्रभु के लिये ॥ १७० ॥

अयोध्या काण्ड

# अयोध्याकाण्ड

(१)

राघवजू को राजतिलक करि दीजै ।
श्रवण समीप कहत सित केसनि, बचन मान नृप लीजै ॥
भरठ भयो तन मुदित भयो मन, विधि सब भाँति निबाही ।
अब जीवन रितइय नरनायक, राम छत्र की छाँहीं ॥
अखिल लोक विश्राम तनय लहि, अब विश्राम करेहू ।
सर्यस सौंपि कृपानिधि के कर, क्यों न बिमल जस लेहू ॥
भयउ विषम नृप मुकुट निरखि कै, यह विचार ठहरायो ।
सदा सर्वहित सम समर्थ हरि, तिन्हहि देन चित लायो ॥
जब लगि हुते श्याम कच तब लगि टेढ़ भयो यह नाहीं ।
ताते मुकुट जानि चाहत अब जलद श्याम पहि जाहीं ॥
अस जिय समुझि राय दशरथ सहजहि दरपन मुख देख्यों ।
"रामभद्र आचारज" मन महँ हरि लीला रस लेख्यों ॥ १ ॥

(२)

राघवजू तेरो धौं काह बिगार्‌यौ ।
जेहि अपराध व्याध ज्यों मो पर रानी वज्र तैं डार्‌यो ।
जासु सुभाउ सपनेहूं शत्रुन नहिं निन्दा करि पार्‌यो ।
सो इन्दीवर श्याम राम मेरे तोर कहा कछु ढार्‌यो ॥
कौसल्या तें अधिक तोहि प्रभु करि सम्मान सवार्‌यो ।
केहि कारन तेहि सरल तनय पर तैं विपरीत बिचार्‌यो ॥
अथयों आजु अवध कों मंगल मंगल विपिन सिधार्‌यो ।
"रामभद्र आजारज" को प्रभु तोहि मिसि लोग उधार्‌यो ॥ २ ॥

(३)

राघव पे काहे रानी निठुर भई ।
सजल नयन मन मलिन विलखि कहि, अवध नरेश जई ॥
अजहु मानि जिय छाडु नेकु हठ कपट कठिन कुटिलई ।
कत अवधेश नृपति सिर काटेसि क्रोध असिहि निठुरई ॥
बिनु अपराध बिपिन मिस रामहि तै सुख बेलि हई ।
अनायास बिलसत नर नारिन्ह दुःसह दवागि दई ॥
मागु शीश जनि देहु प्रभुहि बन कीरति लेहु नई ।

'राम भद्र' की बिरह मरन कत तैं अपजस ही लई ॥ ३ ॥

(४)

राघव जू बलकल बसन धरे ।
पितु पद बंदि जननी आयसु लहि, मुनिवर वेष करे ।
नृप पट भूषण अंग सजे जिते निमिष मध्य उतरे,
बिहँसी राम साजे सब अँगनि बन भूषण सिगरे ।
तजे पदत्राण जराउ विभूषण, मुकुट कुण्डल सबरे,
पाणि चाप शर कटि निषंग कसे, हृदय उमंग धरे ।
देखि दशा यह अवध नारि नर, नयनन्हि नीर ढ़रे,
'रामभद्र आचारज' सुधि करी अवसर हिय हहरे ॥ ४ ॥

(५)

राघव बलकल न शोभै सियाजु के अंग ।
सजल नयन कहे गुरुवर पुलक तन, कहाँ भयो आज यह कैकेयी को ढंग ॥
जिनहि पलक पुतरि ज्यों राखति, निशिदिन सासु लै लै उछंग ।
ते धरि मुनिपट जइहैं बिपिन किमि, चंपा की कलि जैसे नीरज के संग ॥
मानो निहोरा धराओ न बल्कल, धरम धुरीन जनि करो रसभंग ।
'रामभद्र' भामिनी जाहि बन बसि, तुम्हरे साथ सजि रानी को रंग ॥ ५ ॥

(६)

॥ जाचक दान मान संतोषे-मीत पुनीत प्रेम परितोष ॥

--- o --- o ---

राघवजू कैसे हम अवध रहेंगे ?
अवलोके बिनु कमल बदन तव कैसे मन शान्ति लहैंगे ॥
केहि सन अब करि बालकेलि बहु हँसि हँसि बचन कहेंगे ।
काके अंग परसि हिय हरषित मृदु पद कमल गहैंगे ॥
को पूछि हैं गृह क्षेम कुशल अब मुदित निकट बैठाये ।
कौन हमहि आदरिहि तुमहि बिनु प्रेम पुलकि हिय लाये ॥
चौदह बरिस अथाह बिरह के बूड़ि मरिहि नर नारी ।
राज करहु अब भाई भरत पुर चहु दिसि लागि दबारी ॥
कृपा सिन्धु सीतावर रघुवर दीन काज कछु की जै ।
व्याकुल देखि सखा मित्रन्ह को बिपिन संग लै लीजै ॥
सकरूण बचन अकनि सुहृदन्ह के जलजनयन जल छाये ॥

'रामभद्र' भरि बाँह भेटि प्रभु बार-बार समुझायें ॥ ६ ॥

(७)

राघव जू सखन्हि प्रबोधि निहारे ।
नीरजनयन नीर भरे दृग कहे, बयन अमिय रस बोरे ॥
तात गलानि करहु जनि मन महँ कठिन काल गति जानि ।
धीर धरहु करहु जनि चिन्ता सत्य बचन मम मानि ॥
बरष सात दुइ अवधि निमिष महँ खेलतहि चलि जइहैं ।
बहुरि अवध तडाग महँ सुख के सरसिज गण विकसैहैं ॥
तब लौ भरत भाव ते संग मिलि करहु मधुर अति क्रीड़ा ॥
हास बिलास केलि करि बहुविधि हरहु बिरह की पीड़ा ॥
बीते अवधि सीय लछिमन संग मुदित भवन हम अइहैं ।
महाराज को राज कुशल सुख "गिरधर' मंगल गइहैं ॥ ७ ॥

(८)

## वनगमन के समय सखाओं की वेदना ।

राघव हम केहि विधि पुर रहियैं ।
पुनि पुनि सखा राम राघव हम और काहि सन कहियैं ॥
कौन बुलाइ हमहि अति आदर, कहि प्रिय बचन सुखारे ।
बिबिध भाँति पकवान जिंवइ हैं सींचि सनेह फुबारे ॥
कौन के साथ खेल खेलि हैं हम मुनि मन हरन सुहाये ।
पुनि कब लुटि हैं लाभ नयन को राम चन्द्र मन लाये ॥
नयन सजल कहे मीत प्राणपति बेगि नगर फिरि अइहौं ।
"गिरधर" सहित दरस दै सब कहँ दीनबन्धु जस लइहौं ॥ ८ ॥

(९)

## वन गमन के समय कौशल्या जी की प्रार्थना ।

राघव मत जा, मत जा, मत जा ।
मान कहा कुछ मेरी ।
बिरह पयोधि मगन कौशलपुर ।
निज अवलम्ब बताजा ॥ मत जा -------- ।
तृषित चकोर नयन भक्तन के ।
प्रेम पियूष पिलाजा ॥ मत जा -------- ।
शोकानल तनु जरत पिता को ।

कुछ दिन और जिलाजा ॥ मत जा -------
श्रवण शिखि कहँ सुख नव नीरद
कल बल बचन सुनाजा ॥ मत जा -------
निज गुरु गोत्र दास "गिरधिर" को
बदन सरोज दिखाजा ॥ मत जा -- ॥ ९

(१०)

राघव बहुरे बनहिं सिधइयो पथिक तरु तर बिलमइयों
साथ चलत लालन लघु भाई, पीछे लागी ललित लुगाई
हम सब को मनोरथ पुरइयो ॥ पथिक तरु -----
सूरज किरन बदन कुम्हिलाने । चलत पयादेहिं राय पिराने
आम छहियाँ में छनिक छहइयो ॥ पथिक तरु ----
आनन लाजत शरद जुन्हइयाँ । कानन जोग बयस यह नइयाँ
छन बिरमि कुंवर फिरि जइयो ॥ पथिक तरु -----
घास पात कई टूटी मड़इया । बइठहु सीय सहित दोउ भइया
सीतल जल से पियास बुझइयो ॥ पथिक तरु -----
कवन मातु-पितु तुम्ह कहँ जाये । अलप बयस जिन्ह बिपिन पठाये
दास "गिरधर" को धीरज बँधइयो ॥ पथिक तरु -----

(११)

राघवजू के संग बन साथ चली ॥
मनहुँ नील नीरज संग राजति चंपक चारु कली
आगे चलत राम धनु शरधर पाछे लखन बली
तिन के बीच विराजत विधुमुखि सुषुमा अंग भली
निरखि नारि नर ढरे नयन जल, कहै कहा दैव छली
"गिरधर" प्रभुहिं राखि उर लूटति, लोचन लाहु अली ॥ ११

(१२)

राघव दूरि दीठि निज डार्‌यो ।
सून घाट पर टूटि नाव लइ, केवट एक निहार्‌यो
असित बसन अति जीन धर्‌यो अंग, कृष सरीर अति कारो
क्षुधा तृषा ते सूखे अधर पट, देह धरे मल भारो
जनम-जनम ते जोवत प्रभु मग, हाथ लिए पतवारो
याही आस करि तरनि जीविका, पालत निज परिवारो

।।ग दुइ चारि बाल लिए चितवत, दिनकर कुल उजियारो ।
।। कलेऊ रोटि को टुकरो, कातत दिवस न गारो ।।
"।मभद्र" अवलोकि दीन गति, लोचन सलिल नियारो ।
।।ब सरि खेवनहार खेवन हित केवट तुरत हँकारो ।। १२ ।।

(१३)

।।भवजू माँगत नाव करारे ।।
।।। बार करि विनय निहोरा, प्रभु केवटहि हँकारे ।।
।।नकुँवर हम नृप दशरथ के, तिय संग विपिन सिधारे ।
।।गराम अरु लषन श्याम तनु गौर बान धनु धारे ।।
।।।हु बिलम्ब न नाव चढ़ावहु, थकि गये पाँव हमारे ।
।।।या देहु हमहिं बेरा तुम, खेइ सकहिं पतवारे ।।
।।। उतारन कहत केवटहिं, पार उतारन हारे ।
"।मभद्र" की नेह विवशता जन भव बागुरदारे ।। १३ ।।

(१४)

।।भय कैसे चढ़ाऊँ तुम्हें नइया, सुनो रघुरइया चरनवाँ धोए बिना ।।
।।।त पंकज पाँय तुम्हारे । शिला तरी सुनो राजदुलारे ।।
।।ी पाहन से मुनि की लुगइया, सुनो रघुरइया ।। चरनवा धोए बिना ।।
।।व बनिहि जब ऋषि की नारी । जइहैं तब जीविका हमारी ।।
।।नन कैसे मैं करिहौं कमइया, कौशिलाजी के छइया । चरनवा धोए बिना ।।
।ो पद मुनिन कबहुँ नहिं पाये । बड़े भाग हमरे ढ़िंग आए ।।
।।के अब न लहब लरिकइया, करब न हसइया ।। चरनवा धोए बिना ।।
।।। चरन रज नाव चढ़इहौं । पार उतारि उतराई न लइहों ।
।।ो बिनती लखन जू के भइया, सिया जू के सैंइया ।। चरनवा धोए बिना ।।
।।यसु होय तो पाँव पखारूँ, "गिरधर" प्रभु कहँ पार उतारूँ ।
।।। हो भव सिन्धु नाव के खेवइया, भगत सुखदइया चरनवाँ धोए बिना ।। १४।।

(१५)

।।भव जाना तुम्हें गंग पार, कमल पद धोइयोजू ।
।।। नाथ निहोरो हमार, कमल पद धोइयोजू ।।
।।। रज परसत नइया जो मुनि तिय होइहिं जू ।
।।ो पालिहौं निज परिवार, कमल पद धोइयो जू ।।
।।य लखन संग घाट पे आप पधारे जू ।

राजा दशरथ के जेठ कुमार, कमल पद धोअइयो जू
चरन सरोज को दोष न कछु मैं कहिहौं जू
याके धूरि की महिमा अपार, कमल पद धोअइयो जू
प्रभु सन बाद विवाद न अधिक बड़इहौं जू
मैं तो केवट नीच गवांर, कमल पद धोअइयो जू
पार उतारि तुम्हें उतराई न लइहों जू
दीजै आयसु राम उदार, कमल पद धोअइयो जू
'गिरधर हूँ' कर रावरे बिगरी बनइयों जू
जागे जुग जुग सुजश तुम्हार कमल पद धोइयो जू ॥ १५

(१६)

राघव चरन जलजात हो आजु केवट पखारे ।
छोटे कठौता में आनि के गंगा जल, पुलक प्रफुल्लित गात हो ॥ आजु
भरि अनुराग पलोटत पुनि पुनि, परसत हृदय जुड़ात हो ॥ आजु
चूमि चूमि आँखन के आँसुन से धोवत, आनन्द उर न समात हो ॥ आजु ॥
पुनि पुनि पियत मुदित चरणोदक, बोलि धरनि शिशु भ्रात हो ॥ आजु
बरसत सुमन हरषि नभ सुरगन, नर मुनि सिद्ध सिहात हो ॥ आजु
सीता लखन चितइ "गिरधर" प्रभु, मधुर मधुर मुसुकात हो ॥ आजु ॥ १६

(१७)

राघव मूरति मधुर निहार कि गंगा मैया धीरे बहो
नौका पर मेरी आजु बिराजत सीय लखन संग अति छबि छा
जगत के सिरजनहार, कि गंगा मैया धीरे बहो
मंद करहु निज तरल तरंगनि, परसहु प्रभु के मृदुल सब अंगनि
लूटहु मोद अपार कि गंगा मैया धीरे बहो
भव सरिता के खेवन हारे, सोइ प्रभु बैठे नाव हमारे
मन महँ करहु विचर कि गंगा मइया धीरे बहो
मैं निज कर पतवार सम्हारूँ "रामभद्र" जू को पार उतारूँ
आज उतरूँ मुदित भव पार कि, गंगा मइया धीरे बहो ॥ १७

(१८)

राघवजू मृदु पद कमल तुम्हारे ॥
कंटक पथ पर चलहिं कवन विधि, सकुचत हृदय हमारे
पितु निदेश मुनिवेष धरे सिर जटा मुकुट बर धारे

बनिता बन्धु समेत मुदित मन बनि तापस पगु धारे ॥
जे हर हृदय सरसि निसि बासर सरस सनेह सँवारे ।
बिनु पानहिन पयादेहि ते पद दंडक बिपिन सिधारे ॥
जिन चरनन मिथिलेश सुता निज आँचर माँहि दुलारे ।
ते मग चलत धूरि धूसर भए कंटक निदरि निकारे ॥
छनिक छँहाइ पथिक प्रिय तरुतर, दिनकर कुल उजियारे ।
"रामभद्र आचारज" के हिय कुटी रचहुँ नृप बारे ॥ १८ ॥

(१६)

राघव अमवाँ के निचवाँ छँहाइल ॥
सिया लछिमन के सथवाँ जुडाइल ॥
सूरज किरन कुम्हिलाने चेहरवा, आवत बाट दूर से नाही कहूँ घरवा ॥
जूड़ पनिया पियासिया बुझाइल, राघव अमवाँ के निचवाँ छहाइल ॥
चंपा कली जैसन साथ मेहरारू, लरिका लखन लाल बिरबा लजारू ॥
घरी विलम के तू रहिया सिराइल, राघव अमवाँ के निचवाँ छहाले ॥
कैकैइ छुड़ाइ दिहिन अवध नगरिया, दूर अवै बाटै लाला बन के डगरिया ॥
बाट बहुत भुखान किछु खाइल, राघवअमवाँ के निचवाँ दहाइल ॥
गोन्हरी कलावा औ हरियरि मुरइया पानी भरी बाटै एक छोटी परइया ।
आस हमरी लालन तू पुराइल, राघव अमवाँ के निचवा छहाइल ॥
देख, बिछाइ बाटै कुश कै चटइया ।
लहर लहर लहरत बा बरगद कै छइयाँ ।
दास "गिरिधर" के मन में थिराइल, राघव अमवाँ के निचवाँ छहाइल ।
सिया लछमन के सँथवा जुडाइल, राघव अमवाँ के निचवा छहाइल ॥ १६ ॥

(२०)

राघव धारे चित्रकूट की डगरिया हे ॥
कैकइ कुटिल कठिन वर माँग्यो पितु निदेश तब दीन्हे ।
सीता लछिमन सहित मुदित मन विपिन गमन प्रभु कीन्हे ।
बन में छाँडे हरि अवध नगरिया हे ॥
बल्कल भूषन बसन सँवारे जटा शीश पट धारे ।
धरे बान धनु तून कसे कटि पाँयन बिपिन सिधारे ।
बन के तापस के वेश में सँवरिया हे ॥
शृंगवेरपुर मिले निषादहिं सुरसरि तट पर आये ।
माँगी नाव करुना करि रघुवर चरन सरोज धोआये

तारे केवट के काठ की नवरिया हे ।
देखन धाए रूप श्रवन विकल ग्राम नर नारी
कोमल चरन बिपिन किमि चलि हैं संग में राजकुमारी,
रोंवे देखि देखि गाँव की गुजरिया हे ॥
आगे आगे राम चलत हैं, पीछे लखन सुहाये ।
बीच में सीता कवन मात-पितु इनको विपिन पठाये ।
"गिरिधर" भरि लेत आँसू की गगरिया हे ॥ २० ॥

## (२१)

राघव चित्रकूट अब आये ।
सीय लखन संग पितु निदेश ते, मुनिवर वेष बनाये ॥
वाल्मीक पद बंदि कृपानिधि, कंद मूल फल खाये
मुनिवर चित्रकूट बसिवे को, प्रभु सन विनय सुनाये ॥
उतरि अनुज सिय सहित मुदित मन, मंदाकिनी नहाये ।
पय सरि उतर तीर बसिबे हित, सुधर सुठाँव ठ़हाये ॥
कोल किरात वेश सब देवन, परन कुटीर है छाये ।
तहाँ बसे जग निवास जानकी संग, सुरपति सदन सुहाये ॥
सुखी भए मुनि जोगि तपस्वी, प्रभु पद दरसन पाये ।
"राम भद्र आचारज" अचरज कोल किरात जनाये ॥ २१ ॥

## (२२)

राघव बिनु अवध कवन विधि जइहौं ।
सोचत सचिव मनहिं मन मग महँ, का मुख नृपहिं दिखइहौं ।
प्रभु बन गमन संदेश बात ते, नृप सुर विटप ढ़हइहों ।
रानी कलप लतनि निरदय होइ प्रभु विरहागि दहइहों ॥
आवत धेनु लवाइ राम के जननि निरखि जुड़इहौं ।
कुलिश कठोर ह्रदय करि मैं तब धीरज तिन्हहिं धरइहौं ॥
कवने बदन संदेश राम जू के पितु भूपतिहिं सुनइहौं ।
दशरथ मरन निमित्त आपु बनि, जग महँ प्रगटि जनइहौं ॥
रघुकुल दीप दूरि करि पुरते, तिमिर प्रबसि का पइहौं ।
"रामभद्र" पहुँचाइ बिपिन महँ, दुसह दाह पुर दइहौं ॥ २२ ॥

(२३)

राघव देहु मोहि जनि खोरि ।
आजु लौं राखेउँ अपन तन, दरसु लालचि तोरि ॥
सचिव आप संदेश परुसनि, काट डारि डोरि ।
अब जियौं केहिं भाँति लालन, जगत कूपहिं कोरि ॥
बितइ बरस पचीस जो मुख निरखि नयन अँजोरि ।
प्राण धौं केहि भाँति राखौं तासु बिरह निहोरि ॥
रही इच्छा राज तब लखि लेऊँ सुकृत हलोरि ।
कुटिल कैकइ बारि डारी सुख सुबेलि बटोरि ॥
प्रान चाहत तजत पल मँह, सिलनि माथो कोरि ।
"रामभद्र" पियाउ नतु अब मीच माहुर घोरि ॥ २३ ॥

(२४)

राघव स्वर्ग जाइ का लइहौं ॥
कोटि शरद शशि निंदक आनन, तहँ देखन कहँ पइहौं ॥
तहँ सुनिहौं कैसे बचन सुधा सम, तहँकि राम उर लइहौं ।
तहँ कहँ तुम्हहिं निहारि नयन भरि, लोचन जुगल जुड़इहौं ॥
कहाँ अवध की धूरि मिलहि तहँ, प्रिय सुत कहाँ लखइहौं ।
तहँ किमि तुम्हहिं बिठाइ अंक महँ हौं अपने बलि जइहौं ॥
जेहिं पुर बसति न साँवरि मूरति, तहाँ किमि चितई थिरइहौं ।
कोटि नरक समसुर पुर तुम बिनु, बिरह की आगि दहइहौं ॥
तिय कहे तजि प्रान प्रिय तम सुत, यह कलङ्क लइ जइहौं ।
तुम्हहिं त्यागि सुर सभा ललन मेरे, क्यों यह बदन देखइहौं ॥
भरत मातु हित तुम्हहिं पठइ बन, तदपि हौं प्रेम निभइहौं ।
'रामभद्र' बिरहागी जारि तनु मीन को सुजस बढ़िहौं ॥ २४ ॥

(२५)

राघव लसत धरे मुनि वेश ।
श्याम तामरस बरन हरन मन बलकल बसन सुदेश ॥
जटाजूट बनि सिर पर राजत मेचक कुञ्चित केश ।
बिच बिच सुमन गुच्छ उडुगन जिमि घनहि मिलत तजि द्वेश ॥
पाणि चाप सायक सुखदायक रघुनायक सुख कंद ।
सीता लखन सहित बन बिहरत जन मन कंज मिलिन्द ॥

चितइ सकेलि मनहि मन प्रभुदित पावन पयसरि नीर ।
मनहुँ सुधा सुर सरित रिझावत सतडित गगन गंभीर ॥
इत उत चितइ चकित करुणानिधि चित्रकूट गिरिचारू ।
भय भञ्जन "गिरधर" उर कानन अनुछन करिय बिहारू ॥ २५ ॥

## (२६)

राघव जू के बिरह अनल अति भारी ।
पल पल दहत मोर तनु तृन जो सुनहु राम महतारी ॥
दोउ मिलि किये तपस्या दारुन, प्रगटे राम खरारी ।
कैकई मिस करि विपिन पठाये पापिनि कुमति हमारी ॥ राघव ॥
तुम्ह हौ धन्य देवि कौशल्या है बड़ भाग तुम्हारी ।
जे पन्द्रहवें बरिष विलोकि हैं, रामचन्द्र धनु धारी ॥ राघव जू ॥
रहिहौं भवन राजमाता तुम, सब विधि मुदित सुखारी ।
हौं रोइहौं जनम भरि स्वर्ग हूँ, सिर धुनि निपट दुखारी ॥ राघव ॥
लखहु गगन ते मोहि बुलावत, सुरपति अरु धन धारी ।
बिनु प्रभु अवध त्यागि अब जइहौं करन निठुर उर भारी ॥ राघव ॥
हा राघव ! रघुचन्द ! ललन मेरे ! हा सेवक भय हारी ।
हा ! हा ! राम कहत मुरछित परे झख ज्यों विकल बिनु वारि ॥ राघव ॥
चक्रवर्ति जस बरति लोक तिहुँ, प्रभु देखाइ नर-नारी ।
"गिरधर" प्रभु लगि दशरथ तनु तजे बिरह अगिन महँजारी ॥ राघव ॥ २६ ॥

## (२७)

राघव कौन अब मनावे मैया भरत के बिना ।
मैया भरत के बिना (२) राघव कौन अब मनावे ॥
छत्र भंग कोशलपुर दारुण, भूपति स्वर्ग सिधारे ।
तापस वेश लखन सिय रघुवर, दंडक विपिन पधारे,
रजिया कौन अब चलावे मैया भरत के बिना ॥ राघव कौन ॥
शुक सारिका पीजरनि तलफत, बिकल नगर नर-नारी ।
सूर्य चन्द्र बिनु अवध में छाई, मावस की अँधियारी ।
दियरा कौन अब बरावै मैया भरत के बिना ॥ राघव कौन अब ॥
गजसाला में कुंजर रोवे हयसाला में घोरे ।
शोक सिंधु में बूडत सगरे नगर नारि नर भोरे ।
धीरज कौन अब धरावे भइया भरत के बिना । मैया भरत के ।
शोक विकल निसदिन कौशल्या कौन आँसू दृग पौंछे ।

छाती पीटि सुमित्रा विलपे आनन कौन अँगोछे ।
ढाढस कौन अब बधावे भैया भरत के बिना ॥
कैकइ कुटिल दसहु दिसि दीन्ही दारुन दुःसह दवारी ।
जाहि कहाँ सूझत कछु नाही पुर जनि निपट दुःखारी ।
रहिया कौन अब दिखावे भैया भरत के बिना ।
भायप भगति प्रेम की सीमा भरत सरिस को भाई ।
चित्रकूट से को लै आवे लखन सीय रघुराई ।
लजिया कौन अब बचावे, भैया भरत के बिना ॥
भरत सरिस जग प्रेम पात्र को रामचन्द्र मन मांही ।
'रामभद्र आचारज' से जन वसहिं, काहि की छाँही ।
कलिमल कौन अब नसावे, भैया भरत के बिना ॥ २७ ॥

## (२८)

राघव ! रखिए लाज हमारी ॥
मोहि करुणाते नाथ आज लगि, बिगरी सकल सुधारी ।
तोहि करुना नातो विचारि जिय, अब हरिलेहु सम्हारी ॥
शिशुपन खेल खेलाइ शिशुन संग, जितयउ लखि मनुहारी ।
आज सभा महँ फिरि मोहि जितइय हौं बलि जाहुँ तिहारी ।
कुल गुरु सचिव राम माता हठि देत राज अनुसारी ।
कैसे धरउँ सीस हौं निरबल, लाज धरम गिरि भारी ॥
पितु सुर पुर बसे राम लखन सिय, बने तापस व्रत धारी ।
मोंह लाइ करिख सिंहासन, बइठउँ बंस कुठारी ॥
त्यागि राज अब जाईं विपिन महँ, जहाँ राम दनुजारी ।
यो कहि मुरछित परे अवनि तल, भरत वियोग दुखारी ॥
धीर उठाइ पोंछि मुख आँचर, लिए राम महतारी ।
"गिरधर" यह अवलोकि भरत गाति विकल सभा नर नारी ॥ २८ ॥

## (२९)

जौं राम रजनी अवसेषा । जागे सीय सपन अस देखा ॥
सहित समाज भरत जनु आये । नाथ वियोग ताप तनु ताये ॥
पाथ रहिया निहारो भइया भरत के लिये ।
प्रात जागि लखि सपन जानकी पिय सन कहत सयानी ।
गदगद कंठ नयन जल पुलकित, सुनिये सारंग पानी ।
कुटिया भाव से बुहारो भइया भरत के लिए ॥

राज त्यागि रावरे प्रेम में, मन क्रम बचन विरागी ।
सहित समाज मनावन आवत, चित्रकूट बड़ भागी,
पलकैं पाँवड़े सँवारो भइया भरत के लिए । भइया भरत के लिए ॥ राघव ----
विधवा वेश सासु सन आवत करि निषादपति आगे ।
देखउँ सपन वशिष्ठ आदि मुनि बिकल सकल संग लागे ।
संग में लोगवा सिधारो भइया भरत के लिए । भइया भरतके लिए ॥ राघव ----
सुर दर्लभ तजि राज पयादेहिं पुरजन सहित पधारे ।
करन चरित्र कूट अब सादर चित्रकूट पगु धारे ।
मंगल आरती उतारो भइया भरत के लिए ।
बिरह अगिन में तपत देह अरु जटा शीस पर धारी ।
हृदय लाइ समुझाइ कृपा निधि, कीजिए बेगि गुहारी ॥
असुवा नयन अब ढारो भइया भरत के लिए ॥ भरत के लिए ॥ राघव -----
मंदाकिनी सलिल मैं लाऊँ मंगल कलश सजाऊँ ।
"गिरधर" प्रभु के दास भरत हित, दोने रुचिर बनाऊँ ।
तुम्हहूँ मूल फल सुधारो भइया भरत के लिए ॥ २६ ॥

(३०)

राघव भरत लाइ उर लीन्हें ।
लखन कहे ते उठाइ बाहु भरि, राम अनुज निज चीन्हें ॥
कहँ धनु कहँ निषंग कहँ सायक, कहँ दुकूल प्रभु केरो ।
होइ विदेह भेंटत निज भाइहिं शोक सनेह घनेरो ॥
फनि मनि ज्यों लपटाइ लाइ उर, राम भरत कहँ भेटे ।
चाहत मनहुँ नील नीरज निज, संपुट अलिहिं समेटे ॥
लखत लखन सिय रिपुहन केवट, ओट चहुँ दिसि दीन्हें ।
मनहुँ बंधु दोउ मिलन हेतु विधि, तिन्ह मिसि घेरो कीन्हे ॥
राजिव नयन स्रवत निरझर ज्यों नख शिख अंग अन्हवाये ।
बिरह अगिन ते तपत गात मानो आँसुन से सितलाये ॥
चित्रकूट चक अचर बिहंग मृग, देख दसा अनुरागे ।
"रामभद्र" आचारज गावत, प्रभु पद रति रस पागे ॥ ३० ॥

(३१)

राघव जू क्यों अब निठुर भये ।
बार बार विनवउँ निहोरि मैं तो निज ढरनि ठये ॥
जद्यपि जनम कुमातु कोखि ते, हौं हिय छलनि छये ॥

तद्यपि परत भोर क्यों तुम कहैं, भरत सनेह चये ॥
अबलौं नाथ सुधारी बिगरी, पाँवन विरुद बये ।
अब केहिं रिस खींसत सीतावर, सुजसहि पीठ दये ॥
पठइउ मोहिं अवध कानन ते, जानव प्रान गये ।
"गिरिधर" यों कहिं रोइ भरत अति , प्रभु पद पदुम नये ॥ ३१ ॥

## (३२)

राघव भरत बहुत समुझाये ।
नीति धर्म पितु बच अधीनता, प्रेम को पंथ बुझाये ॥
बरिस चतुर्दस लागि करहु तुम, मुदित अवध की सेवा ।
मानि सचिव रुख जेहिं ते लहहिं सुख जननि सकल गुरुदेवा ॥
मोरे बिरह अगिनि जिनि बासर, जरहिं सकल नर-नरी ।
भगति सुधा सीकर ते निसि दिन, कीजो तिन्हहिं सुखारी ॥
मैं पितु बचन अवसि पालन करि बरिस पन्द्रहिं अइहों ।
सत्य कहत उर लाइ तुम्हहिं सन पावन प्रेम निभइहौं ॥
यों कहि बार बार भैंटेउ प्रभु दइ पादुका पठाये ।
रामभद्र आयसु सिर धर तब, अनुमन भरत सिधाये ॥ ३२ ॥

## (३३)

राघव जू के चरन कमल चित लाये ॥
धरि पाँवरी सीस परिजन संग, चित्रकूट ते आये ॥
गुरुहिं पूँछि रघुवर मातहिं नमि, सादर सुदिन सोधाये ।
राज सिंहासन कोसलपुर के, प्रभु पाँवरी पधराये ॥
नंदि गाँव खन अवनि डास कुश, रुचिर परन गृह छाये ।
प्रभु पद प्रेम नेम वृत दारुन, निरखत मुनिन्ह लजाये ॥
पुर अलवाल वियोग कलपतरू, अँसुवनि सींच बढ़ाये ।
तलफत ज्यों जलहीन मीन बर, राम सुरति हिय आये ॥
नित पूजत ज्यों पाँवरी राम जी की, प्रेम सहित सिर नाये ।
माँगि माँगि आयसु कोसलपुर, सादर काज चलाये ॥
कृस तनु सहित अवधिपुर सेवत, मन प्रभु पास पठाये ।
भरत रहनि सुमिरत "गिरिधर" हिय हुलसि राम गुन गाये ॥ ३३ ॥

(३४)

राघव फिर यहि ठौर पधारो ।
तुम लाड़ले ललन दशरथ के, लोचन अतिथि हमारो ॥
दोष क्षमा करि हम पतितन के अवगुण नाहि निहारो,
भाव सुमन के हार देत हम, राजिव नयन बिचारो ॥
खोटी खरी अनोखी बातें तिनको उर जनि धारो,
दीन बन्धु पावन पतितन के आपन विरुद सम्हारो
नातो मानि सरस रघुनन्दन हम को आप सुधारो,
जाहु आवन हित "गिरिधर" उर महँ मंगल भगति संवारो ॥ ३४ ॥

(३५)

राघव ! तव वियोग मँह माता
ठाढ़ी रहत काठ पुतरी ज्यों
समउ न सो कहि जाता ॥
कबहुँ सुमिरि बन गमन बिकल है,
भेंवत बसन पसेऊ ।
कबहुँ प्रथम ज्यौं बपुष कण्टकित,
लावति काढ़ि कलेऊ ॥
कबहुँएकान्त बैठि गद्गद् स्वर,
कातरि बैन उचारति ॥
राम-राम राघव मेरे लालन,
कहिकर सिर उर मारति ॥
कबहुँ चकित उठि धाइ धेनु ज्यों,
अति कदली सम काँपै ।
कबहुँ सपन महँ जाइ तुम्हहि निज,
अंचल पटते झाँपे ॥
बिबरन भई दिवस निशि सिखति
जननि कुररि जिमि रोई ।
परित पछारि खाइ तब सुधि करि,
तन कै सुधि बुधि खोई ॥
कबहुं लवाइ गाय ज्यों व्याकुल,
थन पय धार गिरावे ॥
"गिरिधर"प्रभु सो करहु जिमि जननी
जियत तुम्हहिं लखि पावै ॥ ३५ ॥

अरण्य
काण्ड

# अरण्य काण्ड

(१)

राघव फटिक शिला जब देखी ।
प्रमुदित भये सीय सन कहँ प्रभु रसमय गिरा विशेखी ॥
बैठि सुथल एहि देवि आज, तब सुभग सिंगार बनाऊँ ।
निज कर रचि वर कुसुम विभूषण, नख सिख तुमहि सजाऊँ ॥
अंचल मुख करि मोरि नयन कछु, सिय कह मृदु मुसकाई ।
बिनु पट ओट शिला जनु बैठहु, सत्य संध रघुराई ॥
मुनि तिय ज्यों यह शिला परसि पद होइ मनोहर बाला ।
तुम वन नव वधु संग विलसि हों मोरि होहि का हाला ॥
सुनि मृदु बचन विनोद विवश प्रभु मन्द कछुक मुसुकाई ।
जनकसुता निज उत्तरीय तहँ पिय हित तुरत बिछाई ॥
नील दुकूल ऊपर "गिरधर" प्रभु लसत श्याम तन कैसे ।
नील नीररुह दल पर बिलसत, मञ्जुल मधुकर जैसे ॥ १ ॥

(२)

राघव चरण पलोटति सीता ॥
नव पल्लव तृण शयन मृदुल अति फटिक शिला तल परम पुनीता ॥
तहँ आसीन रसिक कुल शेखर ढिग लसै मैथिली भाव परीता ॥
अतिशय प्रेम सींचि दृग जल तें अञ्चल गोवसि परम पुनीता ।
मनहुँ अरुण पंकज कहँ चम्पक अतिसि सुमन बिच धरति सभीता ॥
कबहुँ कबहुँ परिहास बिबस तल बन सह अँगुरिन ते करे रेखा ।
विद्रुम ऊपर मनहुँ कमलिनी रचत मनोहर हिम कर लेखा ॥
निरखि सीय कौतुक बिहँसत प्रभु विधु मुख चितई चितइ सुख पावे ।
रस माधुरी प्रिया प्रियतम की "गिरिधर" हुलसि हुलसि हिय गावे ॥ २ ॥

(३)

राघवजू दंडक बिपन सिधारे ।
खलन दंडिबे हेतु अनुज संग, कर कोदंड विशिष सित धारे ॥
मिलि सरभंग मुनिन्ह के मग में, बहु विधि अस्थि समूह निहारे ।
सजल नयन भुज द्वै उठाई प्रभु, दनुज कदन निसिचर निरधारे ॥
सूपनखा कुरूप निसि निसिचर, चौदह सहस सकेलि संहारे ।
लीला करन ललित लीलाधर, सिय कहँ पावक भवन सँवारे ॥

कनक कपट मृग मारि तारि खल, सिय वियोग उर विपिन संभारे ।
गीध श्राद्ध करि निजकर रघुवर, दै गति दुरित निकाय निवारे ।।
हति कबंध सबरी कुटीर महँ, लखन सहित रघुवीर पधारे ।
लहि फल चारि चारि फल दै प्रभु अधम भिल्लनी सपदि उधारे ।।
कहाँ लगि कहौं अनेक विपिन बिच खोंटे खल गत भाग सुधारे।
"राम भद्र आचारज" के देशि काहे करुना सहज विसारे ।। ३ ।।

## (४)

## जयन्त की करुण प्रार्थना

राघवजू अब मोहि लेहु बचाई ।
महाराज राजीव विलोचन रामचन्द्र रघुराई ।।
ब्रह्म विशिख अति गहन दहन सम मोहि देत भय आय ।
शरण गयो सिगरे देवन्ह के कोउ नहीं सक्यो छुड़ाय ।।
देव योनि कीन्हो कुकर्म यह तिहुँ पुर होति हँसाई ।
अब रघुवीर शरण आयो मैं मम अघ पंक नसाई ।।
सुनि मृदु बचन देइ एक दृग प्रभु कागहिं दीन्ह छुडाय ।
सुमिरि सुभाय जानकी पति को नित "गिरधर" हरखाय ।। ४ ।।

## (५)

राघव कीजे क्षमा, मैने जाना नहीं ।
कहि पद कहत दीन सुरपति सुत, तव महिमा उर आना नहीं ।।
मोह बिबश सिय चरन चोंच हन्यो, जगदम्बा को पहचाना नहीं ।।
ब्रह्मलोक शिवपुर त्रिभुवन फिर्‌यो पायो कहूँ मैं ठिकाना नहीं ।।
प्रभुता का मद यौवन ज्वर, बल क्यों ब्रह्म पराक्रम माना नहीं ।।
श्रवण न सुनी कथा रघुपति की रसना से हरि को बखाना नहीं ।।
राखिए सरन पतित पावन यश तुम को नाथ मिटाना नहीं ।।
"गिरिधर" ईस जयंत अभय कियो, राम को सुभाव तो बिराना नहीं ।। ५ ।।

## (६)

राघव धरे तीर औ धनुहियाँ सोहे पंचबटी तरु छहियाँ,
बदरा के लाज लागै देख के सरीरिया ।
पीछे सिया सोहे जैसे लिलित बिजुरिया,
मग चलैं बिनहिं पनहियाँ सोहे पंचवटी तरु छहियाँ ।।
लारिका लखन लाल चलैं पाछे-पाछे ।

मुनि पट कसे कर धनु सर आछें ।
बात करें कछु लरकहियाँ, सोहे पंचवटी तरु छहियाँ ॥
चंदा जानि प्रभु मुख चितवै चकोरवा ।
केस लखि झूमि झूमि नाचे मन मोरवा ।
खग छोड़ गगन उड़हियाँ, सोहे पंचवटी तरु छहियाँ ॥
कोल औ किरात नाचैं, नैन फल पाइके ।
पथिक पुनीत तीनि मन में बसाइके ।
मुनि गन सुकृत सरहियाँ, सोहे पंचवटी तरु छहियाँ ॥
ललित विहार करैं दंडक विपनवाँ ।
"गिरिधर" प्रभु सेवैं सीतल पवनवाँ ॥
राम सिया दीन्हैं गलवाहियाँ, सो हैं पंचवटी तरु छहियाँ ॥ ६ ॥

(७)

राघव रुचिर धनुष सर साजत ।
समर भूमि अरि दल गंयद हित केसरि सरिस बिराजत ॥
गोल कपोल विकट भृकुटी अति शीश जटा बर बाँधत ।
मनहुँ भुंजग सकेलि मुदित मन दामिनि पटलहि साधत ॥
कसि निषंग परिकर दृढ़ कटि तट अरि गन चपरि निहारत ।
मनहु बीर रस दिव्य देह धरि मुनि बरुथ भय दारत ॥
बाजत व्योम विविध दुंदुभि शुभ बिबुध सुमन बहु बरसत ।
जय जय खरदूषन रिपु रघुवर गाइ गाइ ऋषि हरषत ॥
लै कोदण्ड चण्ड सर सचकित खल अनीक हरि जोहत ।
झाँकी निरखि भानुकुल मणि की "गिरिधर" मन अति मोहत ॥ ७ ॥

(८)

राघव जू प्रियहिं निदेस सुनाये ।
खरदूषन दलि लेन मूल फल कानन, लखन कुमार पठाये ।
सीता निकट बोलाइ कह्यो हँसि, सुनहु प्रिया बल्लभा सुशीला ।
तव बल पाइ साधु सुर मुनि हित, करिहौं बहुत ललित नर लीला ॥
निसिचर नास अवधि लगि सुन्दरि, तुम पावक महँ बास करीजै ।
रावन हरन हेतु मेरे संग, निज पावन परिछाही कीजै ॥
कृपा शक्ति तुम सहज करुन चित, तब ढिग केहि विधि क्रोध करोंगो ।
कोप बिना गहि चाप सरासन, केहि विधि, भूतल भार हरौंगो ॥
रावन बध करि मिलवि बहुरि कहि, सजल नयन पुलके धनु पानी ।

"रामभद्र" आयसु सिर धरि सिय, सादर पावक मांझ समानी ॥ ८ ॥

(९)

राघवजू के बचन सीस धरि सीता ।
निज प्रतिबिम्ब रूप सौंपी सिय, सील सनेह पुनीता ॥
कहति सीय प्रिय बचन मानि मैं, पावक माँझ समइहौं ।
निसिचर नास अवधि लगि प्रियतम, नेम सप्रेम निभइहौं ॥
लालन लखन मोर लोने सिसु, लसित ललित लरिकाई ।
मोहिं दूरि लखि भूरि कृपा प्रभु, पालिय पुतरि की नाई ॥
यों कहिं सौंपि लखन कहँ पियकर बिसम बिरह अकुलानी ।
सजल नयन पुलकित तन गदगद, नहि आवत मुख बानी ॥
राम चरन सरोज सादर धरि सिय हिय अनल समानी ।
"रामभद्र प्रभु की बिडम्बना लखि करुना अकुलानी ॥ ९ ॥

(१०)

राघवजू कनक हरिन हँसि हेर्‌यो ।
गह्यो चाप विसिष कर कमलनि, आनहु चरम प्रिया जब प्रेर्‌यो ॥
इत उत चितइ चकित चल्यो चहुँ दिसि, मख रखवारो चीन्ह्यो ।
लखनहिं सौंपि सीय रघुवर चले, मृग मारग बन दीन्ह्यो ॥
दंडक वन बीथिन पंगदंडिन, कपट कुरंग संग धाये ।
जिन जोगीश शंभु सनकादिक कबहुँक ध्यान न पाये ॥
कबहुँ प्रकट कबहुँक ढिंग आवत, छिपत करत छल भूरी ।
माया मृग मायापति कहँ गयो माया ते लै दूरी ॥
परब्रह्म तब कोपि ब्रह्म सर, खल मारीचहि मार्‌यो ।
अंतर प्रेम देखि "गिरिधर" प्रभु भव सागर से तार्‌यो ॥ १० ॥

(११)

राघवजू महिं खग पर्‌यो निहार्‌यो ।
मृग बधि आश्रम देखि हीन सिय, करुना अति उर धार्‌यो ॥
खोजत चले लता तरु कुञ्जन, रटनि अकनि निरधार्‌यो ।
धाइ उठाइ लिए करुनानिधि, सोक न आप संभार्‌यो ॥
धूरि भर्‌यो तन कटे पंख बन बहि चले रुधिर पनार्‌यो ।
आँसुन घाव धोइ कर कमलनि, दसमुख विशिष निकार्‌यो ॥
गोद लिए गत मोद गीध प्रभु, नलिन नयन जल ढार्‌यो ।

बारहिं बार जटायू की रज, जटनि सनेह सो झार्‌यो ॥
सीय हरनि सुनि गीध मरन सुनि, अनुज सहित उर मार्‌यो ।
पितु ज्यों दाह क्रिया करि निज कर, विपुल विपति दुःख दार्‌यो ॥
दई मुकुति चहुँ भुगुति भगति बर बिगरी सबइ सुधार्‌यो ।
"रामभद्र" दासहिं सोइ तारहिं जेहि हरि गीध उधार्‌यो ॥ ११ ॥

(१२)

राघवजू फिरि नीके दिन अइहैं ।
बिकल निरखि प्रभु कहत गीध पति रावरि विपति निमिषि में नसइहैं ॥
चौदह बरिस विपिन के पलमहँ, जात तनिक नहिं बार लगइहैं ।
प्रभु प्रताप रवि लोक सोक हरि, निसिचर तिमिर समूह मिटइहैं ॥
धीर समीर सुवन मिलि क्षन महँ संकट बादर सब बिबरइ हैं ।
चंचल बानर भालू सखा ह्वे, दस मुख सो संग्राम रचइहैं ॥
रिपु बनि मीत गरल बनि अमरति, अनहितहू हित सरित हितइहैं ।
बनि हैं कुसुम कृपान तुम्हहिं प्रभु, कालहु हँसि सतिभाय चितइहैं ॥
अभय बाँह दै करि निसिचर कहँ, मीत पुनीत के आय बसइहैं ।
रावरे बान हुताशन महँ गिरि दस मुख सलभ समान नसइहैं ॥
बाँधि हैं जलधि सेतु पाहन को, बानर लंक सकेलि ढहइहैं ।
जातुधान नारी विधवा बनि, नयनन ते जलधार बहइहैं ॥
बंदि छुड़ाये लोक पालन के चढ़ि पुष्पक पुर आप सिधइहैं ।
सीता सहित बिराज सिंहासन, राजाराम बिबुध जश गइहैं ॥
तजहु सोच सुत लेहु धनुष कर, सिय फिरि तुम्हहिं निहारि जुड़ैहैं ।
"रामभद्र" आचारज अचरज, निरखि-निरखि लोचन फल लइहैं ॥ १२ ॥

(१३)

राघव विलम्ब न लिइयो रमइया प्यारे आजइयो ।
गुरु के बचन प्रतीति उन आनी । जोहत-जोहत रयन सिरानी ॥
मन के मनोरथ पुरइयो, रमइया प्यारे आजइयो ।
बूढ़ि भई तुम्हरी महतारी, तब वियोग महँ अधिक दुखारी ॥
नैनों की प्यास बुझइयो, रमइया प्यारे आजइयो ।
बरिस सहस दस आस लगाये, पलकनि के पाँवडे बिछाये ॥
जीवन कृतारथ बनइयो । रमइया प्यारे आजइयो ।
शीतल जल भरि कलश सजाये, भरि भरि दोने मधुर फल लाए ॥
लखन सहित लाल खइयो, रमइया प्यारे आजइयो ।

मरन चहत अब तुम्हरी मइया। गहरू न लाओ कौशल्या जी के छैया ॥
आनन सरोरूह दिखइयो । रमइया प्यारे आजइयो ।
राजकुमार बिलम्ब करत कस, "रामभद्र" आचारज सरबस ॥
सबरी को मात सुख दइयो । रमइया प्यारे आजइयो ॥ १३ ॥

(१४)

राघव शबरी के मूल फल खात, मधुर आज झाँकी बनी ।
भरि भरि दोने सँवारे सुधा सम, लखि-लखि लखन ललात ।
मधुर आज झाँकी बनी ॥
स्वाद सराहत खात अनुज सँग, प्रेम पुलकि पुलकात ।
मधुर आज झाँकी बनी ॥
बहुरि बहुरि मातहिं प्रभु माँगत, सुर मुनि सिद्ध सिहात ।
मधुर आज झाँकी बनी ।
हँसि हँसि शबरी मातु ज्यों परोसत, स्रवत नयन जलजात ।
मधुर आज झाँकी बनी ।
पुनि पुनि माँगि माँगि प्रभु जेंबत, अति रुचि मन न अघात ।
मधुर आज झाँकी बनी ।
सुमन वरषि सुर भाग प्रशंसत, शबरी अधिक सकुचात ।
मधुर आज झाँकी बनी ।
ऐसी प्रीत कबहुँ नहि पाई, कहत भरत जू के भ्रात ।
मधुर आज झाँकी बनी ।
"रामभद्र" आचारज हुलसत, यही जूठन को ललचात ।
मधुर आज झाँकी बनी ॥ १४ ॥

(१५)

दोहा :- दुर्लभ जोग समाधि महँ सपनेहुँ नाहिं लखात ।
सो राघव शबरी ढिंग माँगि माँगि फल खात ॥

o—— o —— o

राघवजू माँगि माँगि फल खात ।
शबरी उर सरवर सरोज से ।
चुवत प्रेम रस पय पयोज से ।
हरषि बिबस दोऊ भ्रात ॥
विविध जतन करि सुफल सँवारी ।

दोने भरि भरि धरे बिचारी ।
मंगल मूरति नयन निहारी
पुलक प्रफुल्लित गात ॥
झुकि झुकि आनन इन्दु निहारति ।
अँसुवन चरन सरोज पखारति
प्रेम मगन कछु कहन न पारति
सहमि सहमि सकुचात ॥
आँचर ते मुख पुनि पुनि पोंछति ।
हृदय लगाइ सुभाय अँगोछति
अति अनन्द कौशिला ललन के
सजल नयन जल जात ॥
स्वारथ परमारथ फल खाये
राघव जननी भाव अघाये
या प्रसाद जूठन को सन्तत
"गिरिधर" हू ललचात ॥ १५ ॥

-----★-----

किष्किंधा
काण्ड

# किष्किन्धाकाण्ड

## (१)

राघवजू कपि कै पीठ विराजत ।
मनहुँ सुमेरु शिखर पर सुन्दर, नील जलद छवि छाजत ॥
अनुज सहित कर कमल कृपनिधि, हनुमत सिर पर परसत ।
मनहु पीत सरसीरुह लालत, नीलकमल मन करसत ॥
प्रभुहिं सुनाइ कपीस कथा कपि, विहँसि गमन तब कीन्हो ।
लोचन गोचर सकल सुकृत फल, पवन तनय संग लीन्हों ॥
हरिहि संभारि नियारि बारि धर फिरि फिरि चितवत पीछे ।
चपरि चल्यो सुग्रीव पास तब प्रभु मुख निरखि तिरीछे ॥
घाम जानि अभिराम राम पर करी पूँछि रचि छाया ।
इन्द्र धनुष जनु जलदाहिं ढाकत भूरि भाग कपिराया ॥
बेग भाग ते गरुड़ चकित करि कपि पति सनमुख आयो ।
'गिरिधर' प्रभुहिं उतारि नाथ ढिग सकुचि चरण सिर नायो ॥ १ ॥

## (२)

राघव विपति हमारी हरण करो ।
चाहत मरन मीच बिनु बानर,
बिकल-बिषम महामारी हरन करो ॥
बालि बली मोरि देत दुसह दुःख
दंडक बिपिन बिहारी हरण करो ॥
हरी नारि सरबस रघुनन्दन
दुसह दुरित दनुजारी हरण करो ॥
विषम विषाद वारि निधि बूड़त
मीत पुनीत खरारी हरन करो ॥
"रामभद्र" बँधि बालि निमिषि मँह
भूमि भार अति भारी हरन करो ।
राघव विपति हमारी हरन करो ॥ २ ॥

## (३)

राघव बिरह सिया के नीर नयन ढरे ।
पट भूषन बिलोके प्रीति रहति न रोके शोक सागर में खोके धीर चयन हरें।

प्रेम पुलके शरीर प्रभु ह्वै गये अधीर, परे मुरछित बीर लाल लखन धरे ।
बार-बार प्रभु सोचे बारी लोचन विमोचै, कछु कहत संकोचे भयहरन डरे ।
भाई देत है भरोसो रहे सोच न खरो सो, धरि धीर रघुवीर अब जतन करे ।
सुनि बचन कृपाल गहे धनुष बिसाल "गिरिधर" देखि यह हाल सुर सुमन झरे ।। ३ ।।

(४)

राघव जू को ह्वै आयो गहवर मन ।
सुनि सुग्रीव विपत्ति कृपानिधि भरे नयन राजीव सलिल कन ।।
निज दुःख भूलि सुमिरि सेवक दुःख सदय हृदय करुणा पुलक्यो तन ।
फरकि उठे भूजदंड चंड तब तून विसिख कसमसे तेहि छन ।।
विकटि भृकुटि मुख लाल भयो कछु बोले वचन भगत भय भंजन ।
सुनु सुग्रीव सोच दारुण तजु आज बधौं सर एक बालि रन ।।
कहउँ सुभाव दुराव करउँ नहिं जानत सब प्रकार मोहि लक्षिमन ।
राखि नि सकहिं सरन तेहि विधि हर असमंजस भो सठ को जीवन ।।
करि पन धनुष उठाइ मीत कह हृदय लगाइ भगत भय मोचन ।
'रामभद्र' लक्षिमन कपीस संग रिषि बस चले अरुन कछु लोचन ।। ४ ।।

(५)

राघव जू बालि एक सर मार्‌यो ।
करि टंकोर घोर कार्मुक को हरि निज तेज संभार्‌यो ।।
लरत समर सुग्रीव निबल लखि, प्रभु निज हृदय बिचार्‌यो ।
सनमुख आइ रिसाई बालि कहँ रन के हेतु पुकारयो ।।
रिपु के बिटप सिला परबत सब तिल सम काटि निवार्‌यो ।
बहुरि गर्व परवत पवि सरिसर उर विच ताकि प्रहार्‌यो ।।
लागत हृदय चण्ड सायक कपि पर्यो पुहुमि हिय हार्‌यो ।
मन बिकार कुविचार पाप सब मीचहिं मिसि तजि डार्‌यो ।।
सनमुख खरे सिलीमुख धनुधर मरतहुँ प्रभुहिं निहार्‌यो ।
'रामभद्र' ते दृढ़ भगतिहिं करि बानर मरन सवार्‌यो ।। ५ ।।

(६)

राघव जू को वदन विलोकत बाली
लग्यो हिय बान पर्यो भूतल भट, तजत न प्रान महा बलसाली ।
प्रभु अनुराग तडाग सलिल महँ, धोवत कलुष कलंक कुचाली ।
पुनि पुनि चितई सुकण्ठ मीत पद, प्रभु पहिचानि सो भयेउ सुचाली ।।

उमगि-उमगि दृग तृषा बुझावत गई सर पीर भई पुलकाली ।
निकट बुलाई छमाई दोष कपि, "गिरिधर" प्रभु रति लही निराली ॥ ६ ॥

(७)

राघव तुम्हें न भूलूँ जिस योनि में भी जाऊँ
तव प्रेम रंग में फूलूँ जीवन सफल बनाऊँ ।
कोमल चरण तुम्हारे, नव कंज से भी न्यारे-
मैं तो चूम-चूम छूलूँ हिय से इन्हें लगाऊँ ।
प्रभु भाव का जो झूला, उस पर भजन में फूला-
मैं तो झूम-झूम झूलूँ, मन की तपन बुझाऊँ ।
मैं तो जनम का हूँ पापी, घट घट के तुम हो व्यापी ।
मन भक्ति जल से धोलूँ, गुण आप के ही गाऊँ
हे रामभद्र प्यारे, अवगुण हरें हमारे
अब आपका ही होलूँ भव सिंधु पार पाऊँ ॥ ७ ॥

(८)

राघव जू करुणा तुम्हारी सबन की बिगरी सुधारी ।
साधन हीन अनाथ अहल्या परसि कमलपद तारी ॥
नीच निषाद पुनीत मीत करि भेट्यो बाँह पसारी ।
कोल किरात भिल्ल कियो बालक कहिं प्रिय वचन दुलारी ॥
मान्यो गीध पिता करि रघुवर निज कर श्राद्ध सवाँरी ।
कंद मूल शबरी घर खाए ताको कही महतारी ॥
रिष्यमूक हनुमानहिं भेटत स्रवत नयन वर वारी ॥
सखा कीन्ह सुग्रीव बालि दल दीन्हो राज्य खरारी ।
धूरि ते नीच मीच भये व्याकुल मेरु शिखर बैठारी ॥
अंगद को युवराज दियो प्रभु दूरि कियो भय भारी ।
कहँ लगि कहउ अनेकन तारे अब गिरधर की बारी ॥ ८ ॥

(९)

राघवजू अनुज संग सैल सिधाये, नभ घन निरखि नयन नीर छाये ।
पुलक शरीर भरे, कञ्ज बिलोचन, कहत अनुज सन शोच विमोचन ॥
कहु लक्षिमन कहूँ जीवति सीता, जल विनु मीन जिमि प्रीति पुनीता ।
दामिनी दमक घन गरजत घोरा एतेउ निरखि उर विहरे न मोरा ।
हरिनी हरिन संग विहरत वन में, लखि मोको होत दुःसह दुःख मन में ।

अनल के कन लागे मलय समीरा, पिव कहे पपीहा बढ़ावे उर पीरा ।
'गिरिधर' प्रभु दशा किमि कहि जाई सिय बिन हरिहि कछुक ना सोहाई ॥ ९ ॥

## (१०)

राघवजू राजति गिरि पर अनुज संग सिय जू वसति अकेलि ।
लंका निसाचरि बीच में तलफति अगिनि लपट बिच बेलि ।
पिया बिन काल बनी रजनी ।
बरखा के बूँद विशिष जैसे लागति जनु जल अनल सकेलि ।
ताते बयारि जो मलय मारूत लगे मीच करति अठखेलि ।
पिया बिन काल बनी रजनी ॥ .......................... ।
चन्दा रे कहु जाके कौशिला के चन्दा से, चन्दिनी गये पर हेलि ।
बिछुरलि हरिनी बधिक बस परि, जैसे बिलखति बिरहिन अकेलि ।
पिया बिन काल बनी रजनी ॥ .......................................... ।
पिय के निकट रहि बन की विपति बड़ी, हँसि हँसि सहि दुःख झेलि ।
बसि कै अशोक तर शोक उदधि बिच, सजनी दिये विधि ठेलि ।
पिया बिन काल बनी रजनी ...................................।
एक तो बिरह रघुबर को हृदय दहे, निशिचरि करे खरकेलि ।
'गिरिधर' स्वामिन प्रभु के दरश बिन मरे चहै फाँसि गरे मेलि ।
पिया बिन काल बनी रजनी । ........................................॥ १० ॥

## (११)

राघव जू सोच तजो निज मन को मिलहे जनक कमारि हे
लखन कहत दोउ कर जोरे पुनि-पुनि प्रभुहि निहोरे रामा ।
दीजै तनिक भरोसो जन को मिलि हैं जनककुमारी हे ।
प्रभु प्रताप दिनकर तम छीजै धीरज मन में कीजै रामा
घटि है सोच पोच त्रिभुवन को मिले हैं जनक कुमारी हे ।
वरषा विगत सरद ऋतु आई अइहैं कपि समुदाई रामा
करिहैं सोध-प्रबोध दुवन को मिलि हैं जनककुमारी हे ।
सुबस बसिहिं फिरि अवध प्रजा सब लखि के सिय रघुराई रामा
'गिरिधर' बिरह जाइ कानन को मिलिहै जनककुमारी हे ॥ ११ ॥

# (१२)

राघव जू नयनन्ह नीर भरे है ।
वरषा विगत शरद लखि रघुवर मन नहीं धीर धरे हैं ॥
कहत बोलाई अनुज कहँ सयनन्हिं आतुर तमकि खरे है ।
गयो मास चहु अजहु न लछिमन कछु मम काज सरेहैं ॥
राजकोष पुर नारि पाइ कपि पति मो कहुँ बिसरे हैं ।
हतौ कालि जेहि हत्यों बालि मैं तून ते सर निसरे हैं ॥
बानर जाति कुजाति विषय वस ताते मम बल निदरे हैं ।
जानत नहि मम बाहु पराक्रम जेहि ते कालहु डरे हैं ॥
क्रोधवन्त प्रभु देखि लखन कर सायक चाप धरे हैं ।
'गिरिधर' प्रभु समुझाई शांत कियो आपनि ढ़रनि ढ़रे हैं ॥ १२ ॥

# (१३)

राघवजू कहि अनुजहि समुझायें ।
सिर कर कमल परसि लियो धीरज लीन्हो धनुष छुड़ाये ।
तुमरो कोप अनवसर अनुचित तजहु लखन लरिकाई ।
है सुग्रीव सुमीत वन्धु सम प्रीति प्रतीति दृढ़ाई ।
सखि अगि निकरि तब सनमुख मैं कपि सों कीन्हि मिलाई ।
तामह बीच पर्‌यो मारुत सुत तेहि यही प्रीति कराई ।
जौ मारहु तुम निषित विशिख तै अपजस होइहि भाई ।
कीरति विमल विश्व अघ मोचनि काहे को देत नसाई ।
लै आवहु तुम जाई कपिपतिहिं भय अरु प्रीति दिखाई ।
आइ करिहैं सो जतन जथा सुख सिय सुधि हित सुखदाई ।
नारद शाप न काज सरैं मम जौ न कपि होहि सहाई ।
'गिरिधर' प्रभु परितोष लखन कह कपिपति भवन पठाई ॥ १३ ॥

# (१४)

राघव जू को कपि सुनियो सन्देशो ।
वरषा विगत शरद ऋतु आई, सिय सुधि लहि नाहि ताते अंदेशो ॥
चतुर मास रहे गिर पर रघुवर मील सुरति हिय करत हमेशो ।
तुमहु बिसारि दियो निज मीतहि, खीन हीन प्रिय बसत विदेशो ।
ज्यों लघु भाई राम कर त्यो तव, केहि विधि करहि लखन उपदेशो ॥
बालि मारि दियो राज तुमहि प्रभु, तुमहि, मानहु हरि को निदेशो ।

'रामभद्र' भामिनि अक खोजहु, चहुदिशि कपि करि मिटहि कलेशो ॥ १४ ॥

(१५)

राघव करुणा करके जन के भव बन्धन सारे दूर करो ।
रघुनाथ दया करके मन के दुःख द्वन्द हमारे दूर करो ।
जन्म-जन्म का पापी हूँ पांवर पशु कपि मल व्यापी हूँ ।
अघ हरि हरि विषया वन के कटु कंटक न्यारे चूर करो ।
अति विषम तुम्हारी है माया सबको भरमाती रघुराया ।
मायापति माया के अब तो छल छंद हमारे बेगि हरो ।
रघुबीर शरण में अब आया विषयों ने मुझे है भटकाया ।
प्रिय मीत अकारण सुख सागर मानस निज रस से पूर करो ।
सुग्रीव को अब तो अपना लो, करुणानिधि करुणा दिखला दो ।
हे 'राम भद्र' निज कर पंकज सीतावर मेरे शीश धरो ॥ १५ ॥

(१६)

राघव कपि पतिहिं कहेउ समुझाई ।
कहीं सुभाय कपीस मोहि प्रिय भरत सरिस तुम्ह भाई ।
जा कारन पठए लक्ष्मन ते तुम कहँ निकट बुलाई ।
सो सब हेतु सुनहु कपि नायक, विपति काल कठिनाई ।
लही न अजहु सिय सुधि वरषा गई शरद ऋतु आई ।
चारिमास तुम्हहू मो कह कपि तृन सम दियो भुलाई ।
सुनि सुग्रीव संकोच नमित मुख, उतरि कह्यो नहि जाई ।
आई गये तेहि छन चहु दिशि ते, बानर, भट समुदाई ।
नाना बरन वेश दिशि विदिसहु रहे गगन महँ छाई ।
आयसु पाई नाइ सिर चरनन, चले बल बुद्धि दृढ़ाई ।
मानहु 'रामभद्र' भामिनि हित, भवविधि मथे चित लाई ॥ १६ ॥

(१७)

राघव दिये हाथ में हनुमत् के मुदरिया,
खबरिया सीता रानी के लैहें ॥
बंदि चरण वानर भट जह-तह
सिय सुधि हेतु सिधारे ।
पाछे पवन तनय सिर नायो रघुपति निकट हंकारे ।
परसे पाँनि सरोरूह शीश ईस धनुधरिया ।

हे हनुमान सुजान शिरोमणि जनक सुता केहि जाओ ।
दरश पाइ मुद्रिका सौंपि के धीरज उन्हें धराओ ।
राखे प्रान कछुक दिन, व्याकुल बिरह गुजरिया ।
खबरिया सीता रानी के लैहे ।।
विविध भाँति समझाई सिया को कहियो मोर संदेशो ।
सुरति मोर करवाई जतन ते कीजो दूर अंदेशो ।
पावै बिरह पयोनिधि पार तोर महतिरिया ।
खबरिया सीता रानी के लैहे ।।
कह्यो जाय बाँरिध बधाय, अब आवत है रघुराई ।
बानर भालु काल समभीषण, संग में लक्ष्मण भाई ।
हरिहैं विपति निमिष मह दशमुख, सकल संघरिया ।
खबरिया सीता रानी के लैहें ।।
मेलि मुद्रिका नायं सिर पवन पुत्र धुकि धायो,
नाथ सिन्धु लंकेश विपिन मह, सिय विलोकि सुख पायो ।
जय-जय 'रामभद्र' रघुनन्दन जय असुररिया ।
खबरिया सीता रानी के लैंहे ।। १७ ।।

(१८)

राघव के काज हनुमान चले,
मानो प्रबल राम के बान चले ।।
संग अंगद द्विविद मयंद नील नल जामवंत गुन धर्मशील
लाँघै वन दुर्गम पर्वत सलिल,
खोजै गिरि कंदर सिय हिय गहील ।
लहे सगुन सुमंगल खान भले ।।
मिली स्वयंप्रभा फल मुलखाई ।
पठई सागर तर दृग मुदाई ।
हहरै विलोकि जल निधि अघाई ।
प्रायोपवेश हित मन लगाई ।
बल बुद्धि विवेक महान चले ।।
सम्पत्ति दरश लगि धरे धीर ।
सुनि सिय सुधि नासी दुःसह पीर ।
सागर लखि हहरै सकल वीर ।
कह्यो गीध होहु जनि भट अधीर ।

रघुनाथ कृपा दुःख ग्लानि टले ॥
कह जामवन्त सुनु पवनपूत, लाँघो जलनिधि हे राम दूत ।
करचण्ड पराक्रम बल विद्युत, सुर शोक हरो भूताधिभूत ।
तव तेज दनुज वलवान छले ॥
सुन भे प्रबुद्ध केसरी कुमार, तन भयो कनक भूधराकार ।
गजो त्रिलोक भय हरन हार, जय 'राम भद्र' कपि भटउदार ।
लखि तनय पुलक पवमान डुले ॥ १८ ॥

(१९)

राघव जू के काज कपिराज गाज्यो गाज जिमि ।
कालदण्ड सम चण्ड भुजदण्ड फरके ।
कटकटे दशज तरुण तल तरलित ।
तरणि तमके तनु बीर वन-चरके ।
किंधौ बाल तप तडित कैंधो तेज कैधों ।
कैंधो धरे वीर रस तनु वीर वर के ॥
कैंधो राम राख कैधो सियाको प्रतोष कैंधो
प्रबल त्रिदोष कैंधों नीच रातिचर के
विकट भ्रकुटि विकाराल मुख वज्र नख
कुंचित लंगुल बल मूल शूल हर के ॥
अट्टहास गरजत कोपि कोपि तरजत
बरजत बल मानो रिपु उर धर के ॥
उछले गिरिन्द महि धराधर धसकत
सुखत सलिल सब सिन्धु सरि सर के ।
उमगि उमंग अंग-अंग में तरंग भरे
पुलक शरीर दृग नीर विधि हर के ॥
केशरी कुमार खल कमल तुषार मानो
तनय दुलारे वारे सिया रघुवर के ।
जय हनुमान जय जय दनुज कृषानु जय जय
सुमिरु सो छन मन मोद 'गिरधर' के ॥ १९ ॥

राघव की शपथ करि कहत आज
सुन सावधान बानर समाज ।
पल माँझ करौ रघुवीर काज, खल दल्यो सज्यो रघुराज साज
कैंधोसकल सदल दशमुखहि मार आन्यो त्रिकुट पल महँ उपारि
भूधर मरदूयो मेदिनि विदारि, करौ जातुधानि बल धूरि धारि
धन निविड समोहन चारी फारी, सोख्यो वारिध जल बल पचारि ।
घट कर्ण नादघन सुभट मारि, आनो प्रभु पैं मिथिला कुमारि
हे जामवन्त आदेश देहु त्रिलोक्य धवल जसविशद लेहुँ
रघुनाथ भगति रघुवर सनेहु, मोकह न अगम कछु सोच ऐहु ।
तब कहूयो रीछपति सुनहु धीर संग्राम ते सुभट हे महावीर
अब चलहु वेगि पायोधितीर, लाँघो सनीर तोशित समीर
इतना तुम कीजौ तात जाई, सिय दरस पाइ आवउ बजाइ
रघुनाथहि सीता सुधि सुनाई, दुःख हरहु प्रवोधहु अवधराई ।
तब निज भुजबल सजि सेनसाज, लंका चारिदलिदशमुख समाज ।
सिय आनिहि श्री रघुवंश राज, कह 'गिरिधर' जय राजाधिराज ॥ २० ॥

------★------

सुन्दर काण्ड

# सुन्दरकाण्ड

(१)

राघव जू के चरण कमल सिरु नाई ।
गाल मेलि मुद्रिका पुलकि मन, मुदित चले सिरु नाई ॥
पैठि विवर सुधि पाइ गीध ते लखि सागर हुलसाई ।
सुमिरि राम सिरु नाइ तमकि चले, पवन पूत सुखदाई ॥
सुरसहिं नमि सिंहका दमन करि, सिन्धु पार कपि जाई ।
दलि लंकिनी विभीषण निरखत, मुदित न प्रेम समाई ॥
लखि अशोकतर विरह विकल सिय मुदरी दीन्हि गिराई ।
चरण वंदि कहिनाम धीर दै अंजनि सुत समुहाई ॥
पाइ असीस जानकी आयसु बैठि बाग हरसाई ।
मारि निशाचर निकर धीर फल खात बराइ बराई ॥
अक्ष मारि सुरपति रिपुबन्धन लीला प्रकटि जनाई ।
दसमुख कहँ उपदेशि पूँछि मिसि कंचन लंक जराई ॥
सिय प्रवोध अरु लाँघि उदधि, दियो चूड़ामणि कपि जाई ।
यह सुख सुमिर पाइ सुधि 'गिरिधर', भाव विवश रघुराई ॥ १ ॥

(२)

राघव की जिसे कुछ चाह नही,
सत्संग का रस वो क्या जानें ।
भवभय की जिसे परवाह नहीं,
विषयों का रहा जो सदा कीड़ा,
जिसे इष्ट सदा जग की पीड़ा
मिलती जिसे सुख की राह नहीं,
सत्संग का रस वो क्या जाने ।
जो पामर काम पुजारी है ।
भोगों का सदा जो पुजारी है ।
जिसके पापों की थाह नहीं,
सत्संग का रस वो क्या जाने ।
जिसकी न कभी आँखें भीगी
दोषों की नहीं गठरी छीजी
प्रभु विरह की जिसको आह नहीं ।

सत्संग का रस वो क्या जानें ।
मैं धन्य हुई तव दर्शन से,
बहुमान्य हुई कपिस्पर्शन से
जिसको प्रभु दरश उछाह नहीं
सत्संग का रस वो क्या जानें ।
हनुमान मुदित लंका जाओ ।
'गिरिधर प्रभु काज में यश पाओ ।
जिसमें प्रभु प्रेम प्रवाह नहीं,
सत्संग का रस वो क्या जाने ।। २ ।।

(३)

राघव आ जाइयो हमरी नगरियाँ
करुणा निधि राम सवरियाँ ।
जन्म-जन्म का मैं पापी
तुम हो घट-घट के व्यापी ।
मैं तो जोह रहा तुमरी डगरिया
करुणा निधि राम सवँरिया ।।
उपल केवट उधारे
गीध सबरी को तारे
अब कब लोगे हमरी खबरिया ।
करुणानिधि राम सवरियाँ ।।
पैठ अञ्जनि कुमार
कियो दूर भ्रम हमार
अब आवेगी सुख की अजोरिया
करुणानिधि राम सवँरिया ।।
तुम हो कौशला दुलारे,
दास 'गिरिधर' के प्यारे
अब भर दीजौ मन की गगरियाँ
करुणानिधि राम सवँरिया ।। ३ ।।

(४)

राघव जू जौं लैहैं कर धनुषर
तौ तोहिं राखिन सकहिं भुवन तिहुँ कोटि विरंचि विष्णु और शंकर ।
जानसि नाहिं ब्रह्म रघुवर तैं जो अखंड अज व्याप्त चराचर ।

तजि अभिमान शरण गहु ताकी मानु मोर सिख अजहुँ निशाचर ।
सठ सूनें आनसि मोहि हरके अधम निलज्ज नीच दशकंधर ।
वेगिहि परिहि राम सायक ते खंड खंड करि सिर भूतल पर ।
जा लंका ते देत प्रलोभन जरिहिं सो तृन सम राम अनल सर ।
"गिरिधर" प्रभुहिं मान तजि भजु रे दीनवन्धु राघव आरति हर ॥ ४ ॥

## (५)

राघव कपि तुरत मनहिं विचारि ।
विरह विकल विलोकि सिय कहँ दीन्हि मुदरी डारि ।
मनहुँ दियो अशोक पावक लै अँचर पसारि ।
राम नामांकित विलोकत सोच जनक कुमारि ।
पुलक तन लोचन सजल भयो देह दशा विसारि ।
विरह सरि बूढ़त लही जन नाव रघुकुलनारि ।
जीति को सक अजय रघुवर बान इति धनुधारि ।
असुर माया ते न संभव मुद्रिका अनुहारि ।
देखि हरष विषाद व्याकुल उचित समय निहारि ।
प्रगट हरि गुन गाई 'गिरिधर' कीस कियो सुखारि ॥ ५ ॥

## (६)

राघव का दूतबन आया जननि मुदरी मैं ही लाया ।
राम शपथ सति भाव कहत मैं राखौ कपट नहि माया ।
जननी ......................................................
दशरथ सुअन राम वन आये जिनकी सती तुम जाया । जननी -------
कपट हरिन मिस नीच दशानन लंका तुमहि हरि ल्याया । जननी ----
खोजत तुमहि सुकंठ मीत करि बालि बध्यो रघुराया । जननी ------
तव खोजनकहँ दिशि-दिशि कपिपति पठए कीस निकाथा ।
मोहि बोलि प्रभु दीन्हि मुद्रिका कहि संदेश समझाया ।
वारिधि नाघि तीनि माया दलि रिपु घर-घर भर माया ।
'गिरिधर' स्वामिनि दरश पाय अब धन्य भई मम काया
जननी मुदरी मै ही लाया ॥ ६ ॥

## (७)

राघव कबहिं दरश मोहि दैहैं, कौशिला के बारे सजनवाँ ना ।
कब दशवदन कदन सुनि बजिहैं सुर पुर विविध बजनवाँ ना ।
मंगल मूरति निरखि सुखी कब होइहैं मोर नयनवाँ ना ।
कब प्रभु चितै सखिन्ह समुझैहों खंजन नयन शयनवाँ ना ।
सेतु बधाइ आइ कपि दल संग करिहैं कबहिं मसनवाँ ना ।
कब धनु तानि प्रहरि चण्ड सर हरि हैं खल अभिमनवाँ ना ।
कब कराल सतकाल सरिस प्रभु तजिहिं भयंकर बनवाँ ना ।
कब रावन बधि बन्दि मोच सुर करि हैं विपति विहनवाँ ना ।
कब मोहिं लखन सहित कोशलपुर चलिहैं साज विमनवाँ ना ।
''गिरिधर'' मुदित विजय राघव के कब करिहैं गुन गनवाँ ना ॥ ७ ॥

## (८)

राघव कपि करतूति नियारी ।
निरभिमान दुर्गम रघुवर के विगरी सकल सवाँरी ।
दरश पाँय सिय आयसु सिर धर बैठहु बाग मँझारी ।
खाइ अघाइ वराइ मधुर फल विपिन अशोक उजारी ।
पंच सेनपति सात सचिव सुत अक्ष सुभट संघारी ।
मेघनाद के नाग पाश मँह आप वध्यो कपि भारी ।
दशमुख कहँ उपदेश सभा मँह विविध नीति अनुसारी ।
पूँछि दहन मिस तेल तूल लगि अनल लंक गढ़ जारी ।
हाहाकार भयो दशमुख पुर, रोवहिं निशिचर नारी ।
तिल भरि बची न लंक कनक की, छन मह सकल प्रजारी ।
पूँछि बुझाई रूप अति लघु धरि तोसेउ जनक कुमारी ।
चूड़ामणि लै सिन्धु लाँघि पुनि कीन्ह शब्द किलकारी ।
जामवंत अंगद आदिहिं मिल सीय कथा विस्तारी ।
चूड़ामणि दै रामभद्र कहँ किय हनुमान सुखारी ॥ ८ ॥

## (९)

राघव दूत अनुपम करनि ।
कोटि कलप लौं कोटि सारद सेष सकहि न बरनि ॥
जासु सिसु कौतुक सुमिरि नित डरत भोर के तरनि ।
सुमिरि विक्रम गर्भ अरभक स्रवहिं निशिचर घरनि ॥

लसी लाहसि कनक लंका लोम होली जरनि ।
सुरति करि हहरै हृदय मँह संभु बिधि अपडरनि ।।
राम भगति कृपालु मरकट राम रस मुख झरनि ।
ब्रह्मचर्य स्वरूप रघुवर चरन सादर ढरनि ।।
हनूमान सुजान राय सुशील गुन गन धरनि ।
राखिए 'गिरिधर' सरन अब चहैं मरन बिनु मरनि ।। ९ ।।

## (१०)

राघव को नाथ जानकी दीजै ।
रिषि पुलस्त्य जस विमल चन्द्र महि कति कलंक हठि लीजै ।।
जो निज बान वायुमह तृन सम तौ मातु नहि उड़ायौ ।
जो ताड़का सुबहु मारि रन कौशिक मख करवायो ।।
जेहि कर कमल भंजु शिव धनु तुम सहित भूप मद मोर्यो ।
जेहि भृगुपति वोहित निज भुज बल बारिधि बीचहिं बोर्यो ।।
जेहि फोरी सुर राज तनय दृग खल बिराध महि तोप्यो ।
श्वसाँ विरूप ब्याज जेहि तुम सन, समर भयंकर रोप्यो ।।
जेहि दुन्दुभी अस्थि औंठा ते, दशयोजन ही बहायो ।
एक बिसिख जेहि सात ताल तरु एकै लक्ष्य बनायो ।।
बालि बिदारि सुकण्ठ राजदै बानर कटक बटोरा ।
सिय सुधि हित बानर भट दारुण जेहि पठए चहुँ ओरा ।।
सुक सनकादि विरञ्चि आदि सुर जाकर गुन गन गायो ।
'गिरिधर' प्रभुतें विमुख दशानन क्यों चाहत सुख पायो ।। १० ।।

## (११)

राघव गुन कहे न विभीषण पार्यो ।
तमकि ताकि दशकंठ काल बश हुमकि लात उर मार्यो ।।
कहि दुर्बाद ईश अनुचर कह रावण निदरि निसार्यो ।
मनहुँ मूरि मोह बश, काँच लागि तजि डार्यो ।।
चलेउ विभीषण हुलसि राम पद, सरनद विरुद विचार्यो ।
'गिरिधर' प्रभुहिं निहारि वारि दृग तब बिनती अनुसार्यो ।। ११ ।।

## (१२)

राघव तुम्हरी दुअरिया आया मैं लंका को छोड़के ।
रावण का मैं अनुज बिभीषण, निशिचर वंश में जाया ।
चरण शरण आया मैं तेरी दशमुख ने ठुकराया ।
मैं तो राम की डगरिया आया सुखों से मुँह मोड़ के ।।
रावण की दुर्नीति देखकर उसे बहुत समझाकर ।
अपमानित हो राज सभा में लात वक्ष पे खाकर ।
मैं तो रावरी नगरिया आया जगत से नाता तोड़ के ।।
हे रघुनाथ उदार शिरोमणि अब न मुझे ठुकराओ ।
प्रणत पाल अशरण अनाथ को रामभद्र अपनाओ ।
मुझे छोड़ो न सँवरिया आया तुम्ही से मन जोड़ के ।। १२ ।।

## (१३)

राघव कृपानिधान राम राखिये शरन ।
दीनबन्धु कृपासिन्धु सत्यसन्ध शीलसिन्धु प्रणतपाल पाहि-पाहि पाहि आरति हरन ।।
राजीव लोचन विशाल देव कौशिला के लाल सजल नव तमाल श्याम बारिज बरन ।
शिला कोल केवट जटायु शबरी सुकण्ठ अधम उधारि किये नाथ तारन तरन ।।
दशरथ के दानि तू दयालु बान इति वीर बोल को अटल बाँह को पगार श्री धरन।
अबकी बार मेरी ओर ढ़ील काहे देत नाथ बारक विलोकि ढरो देव आपनी धरन ।।
वचन सुनि गंभीर धीर उठे बीर नयन नीर मिले भेंटि बाहु भरे लखन सहित भए हरन।
बोलि बाँह अपनाए, ताहि लंकपति बनाए तिलक कियो रामभद्र भुवन मंगलाचरन ।। १३ ।।

## (१४)

राघव कहत लषन सन रोषि ।
विनय न मानत नीच जलधि यह गए तीन दिन बीति सरोषि ।
व्यर्थ गवाँयो काल नीच को बिनवत कादर सरिस भरोसि ।
आनु-आनु सौमित्र चाप-सर अगिन बान लौं जलनिधि सोषि ।
क्षमाहीन लखि गनत मोहि यह पौरुषहीन ज्यों निबल खरोषि ।
सागर सोखि निमिष मह लछमन लेउँ कुटिल कर गर्वहिं मोषि ।
गिरिधर प्रभु दशकंठ मारि रन समर भूमि जोगिनि गन पोषि ।। १४ ।।

## (१५)

राघव जू जब कर कोदण्ड उठायो ।
प्रबल कराल तरल कालानल व्यापी बिसिष चढ़ायो ।

छिपेउ भानु डगमगी मेंदनी भूमि धरण भय छायो ।
हाहाकार मच्यो त्रिभुवन मँह शिव विरञ्चि अकुलायो ।
उबलेउ सलिल सिन्धु को छन मँह आरत नाद सुनायो ।
तेहि छन तृषित तीव्र तापहिं ते बड़वानल बिलखायो ।
लगे जरन जल जन्तु ज्वाल ते जलनिधि जरनि जनायो ।
धरि द्विज रूप थार भरि सागर गिरिधर प्रभु पहिं आयो ।। १५ ।।

## (१६)

राघव कृपालु राम क्षमा मोहि कीजिए ।
अशरण अनाथ नाथ लोकनाथ दीनानाथ सीतानाथ दोष मेरे चित नहीं लीजिए ।
गगन पवन अरु पावक समीर महि करनी समुझि जड़ पाप पुञ्ज छीजिए ।।
अवसि बँधाइ सेतु लंक जाहि मारि रिपु जानकी बिलोकि सुख बारि मन भीजिए।
'रामभद्र' भामिनी समेत करुणा निकेत हृदय निकेत बसि अभय बाँह दीजिए ।। १६ ।।

-----★-----

युद्ध काण्ड

# युद्धकाण्ड

## (१)

राघव जू सचिवन बोलि कह्यो ।
करहु सेतु अविलंब सिन्धु पर छनिक न समय रह्यो ।।
सुनत रीक्षपति भालु कपिन्ह कहँ छनि मह तहाँ बटोर्‌यो ।
आनहु गिरितरु जूथ सकल कहि रामकाज मह जोर्‌यो ।।
अति उतंग पर्वत पादप कपि कन्दुक ज्यों लै आवें ।
बिनु प्रयास नल नील हाथ लै जलमहिं तिनहिं तिरावें ।।
कह्यो वायुसुत राम-राम कहि गिरितरु सकल मिलावो ।
छुअत परस्पर जुरिहिं बज्र ज्यों एहि विधि सेतु बनावो ।।
सुनि उपाय अञ्जनी तनय को हृदय नील नल हरषें ।
साधु सराहिं सुमन सुर नभ ते हनूमान पर बरषें ।।
राम-राम कहि गिरि तरु जूथन करि संघटित परस्पर ।
बांध्यौ सेतु नील नल सागर निरखि हुलसि हिय 'गिरिधर' ।। १ ।।

## (२)

राघव जू जलनिधि सेतु बधायो ।
रामेश्वरहिं थापि बंदन करि महिमा सबै सुनायो ।
चली बजाय भालु कपि सेना धूरि धूम नभ छायो ।
आयसु पाय राम को मरकट भालु मुदित फल खायो ।
तब सुबेलि गिरि वास कियो हरि रिपु को त्रास बढ़ायो ।
छत्र मुकुट ताटंक भंग मिसि अरिहि प्रताप जनायो ।
सचिवन करि मंत्रणा लंकपुर अंगद दूत पठायो ।
भयो तुमुल संग्राम राम रावन सुभटन मन भायो ।
यातुधान पति सकुल सदल हति प्रभु सुर त्रास मिटायो ।
चढ़ि पुष्पक सीता लछिमन संग सगन अवधपुर आयो ।
राम भद्र आचारज सम्मत राजतिलक करवायो ।। २ ।।

## (३)

राघव कियो सर सन्धान ।
निरखि रिपु अभिमान दारुण प्रभु मनहिं मुसुकान ।
छत्र मुकुट तटंक कौतुक हतेउ एकहिं बान ।
सबके देखत खसे भूतल मर्म कोउ नहिं जान ।

देखि असमय पतित भूषन लोग सब अकुलान ।
भयो असगुन कहत व्याकुल परान मनहु परान ।।
काल वंश दशकंठ असगुन सगुन कछु न जान ।
आजु 'गिरिधर' ईश मिसि तेहि नीच सिर निआरान ।। ३ ।।

(४)

राघव दूत सभा महँ कोप्यो ।
सुमिरि खरारि पचारि लंकपति सभा माँझ पद रोप्यो ।
जो मम चरन टारि सक तिल भरि महिते सदल सुरारी ।
तौ फिर जाहिं राम सिय कोशल मैं मानूँ निज हारी ।।
सुनि कपि बचन पाई खल आयसु झपटै सुभट पचारी ।
विविध जतन करि तमकि तमकि करि चरन सकैं नहि टारी ।।
उठा आपु कपि के तरजे जब अंगद कह मुसकाई ।
गहसि न राम चरन खल पामर निलज लाज नहीं आई ।।
यों कहि रिपु बलि वारिधि मन्दर रावन मान मिटायो ।
पुलकि शरीर नयन जल 'गिरिधर' प्रभुपद शीश नवायो ।। ४ ।।

(५)

राघव के काज कपि रार रैं बाँकुरे बीर रण रंग अरैं ।
अति प्रबल काल सतनाहि गनैं गिर तरु आयुध खल कोटि हनैं ।
रन कर्कश तमकि प्रचार जुरैं रघुबीर हेतु नहिं मनहिं मुरैं ।
गरजैं तरजैं टारैं न टरैं रन रोर घोर करि शोर लरें ।
कटकटैं दशन किलकिला करैं जै राम राम कहि आरि अरैं ।
कहुँ विटप बृन्द भूधर बरषैं कहुँ मर्दि बाजि गज सौं करसैं ।
कहुँ भुज उखाड़ि मन में हरषै कहुँ चपट चोटि पग सों धरसैं ।
अति तरल तमक अंजनी लाल, नख मुख कराल रिषि अधर लाल ।
क्रुध्यो विरुद्ध रन काल काल, किय कोटि कोटि निशिचर बिहाल ।।
लखि रघुपति लखन भए निहाल बरषै सुर नभ ते कुसुम माल ।
रावन उर व्यापेउ भीति ज्वाल जै जै गिरिधर प्रभु कपि कृपाल ।। ५ ।।

(६)

राघव नयन जल गिरावैं लालन लखन के बिना ।
व्याकुल बैन यों सुनावैं लालन लखन के बिना ।।
भायप भगति धर्म की सीमा मेरे एक सहारे ।

समरसिन्धु दुस्तर अपार तजि अब सुरलोक सिधारे ॥
धीरज कौन मोहि धरावै लालन लखन के बिना ।
कौन देखि बिरहातुर मौको कहि प्रिय बचन बुझावैं ।
सीय काज बानर दल संघट सादर कौन सजावैं ।
ढ़ाढ़स कौन अब बधावै लालन लखन के बिना ॥
सब प्रकार असमय यह मो पर, दुःसह दशा यह आई ।
सीय हरी पितु मर्‌यो तुमहु अब, स्वर्गहिं चले बजाई ।
विपदा कौन अब नसावै लालन लखन के बिना ॥
कौन आजु दशमुखहिं पचारे, द्वन्द युद्ध के हेतू ।
'गिरिधर' प्रभु हित समर जलधि में को बनि हैं अब सेतू ।
धनुही कौन अब चढ़ावै लालन लखन के बिना ॥ ६ ॥

(७)

राघव जी के प्यारे संतों के सहारे अञ्जनि के छइया हो जन सुखदइया हो ।
देखो हनुमान प्रभु बिकल तुम्हारे हैं जलजि बिलोचन ते असुँवन ढारे हो।
धीरज बिसारे अति बल भारे अंजनि के छइया हो जन सुखदइया हो ॥
उठो-उठो हनुमान करो प्रभु काज आज गहरु न लाव अव वीर वर कपि राज ।
राम के दुआरे तम रखवारे अंजनि के छइया हो जन सुखदइया हो॥
वीर बजरंग तुम संकट के हारी हो भक्त कंज पुंज रवि कवि सुखकारी हो।
बिगरी संवारे असुर संहारे अंजनि के छइया हो, जन सुखदइया हो ॥
जाओ-जाओ हनुमान ले आओ संजीवनी, गिरिधर प्रभु दूत वीर वर अग्रणी।
अंजना के बारे सिया के दुलारे, अंजनि के छइया हो, जन सुखदइया हो ॥ ७ ॥

(८)

राघव जू के पद सरोज सिरु नाय ।
चले संजीवन लेन पवनसुत बेगि बरन नहि जाय ॥
कुञ्चित लाल लंगूल मूलि बल भृकुटी तनिक चढ़ाई ।
प्राणायाम कलित लाघव तन उड़े गगन महँ धाई ॥
कालनेमि दलि कंदुक ज्यों कपि लीन्हो सैल उठाई ।
मनहु तिबिक्रम रूप पराक्रम निरखि गरुड़ बिलखाई ॥
भरत कुशल कीस बर दीन्हि सजीवनि लाई ।
पाइ वैद्य उपचार लखन उठे निरुज शरीर जुड़ाई ॥
हनूमान बल बेगि सराहत कृपा सिन्धु रघुराई ।
राम दूत सेवा निष्ठा पर नित गिरिधर बलि जाई ॥ ८ ॥

(९)

राघवजू को जब घट करन बिलोक्यो ।
सजल नयन तन पुलक मोदमन बढ़त प्रेम भर रोक्यो ।
श्याम तमाल सजल वारिध बपु ललित तून दुई बाँधे ।
कलभ शुण्ड भुजदण्ड चण्ड कार्मुक करतल सर साँधे ॥
मुख मयंक राजिव दल लोचन श्रमकन भाल सुहाये ।
मनो मरकत गिरि शिखर ऊपर शशि कर बर बास बनाये ॥
इकटक रह्यो रूप अनुरागे जोहत ही मन मोह्यो ।
रघुकुल तिलक दरश निशिचर को भवनिधि त्रास बिछोह्यो ॥
बैर संभारि बहुरि रघुपति सन समर भयंकर कीन्हे ।
राम भद्र सर तीरथ तज तन मुनि दर्लभ पद लीन्हे ॥ ९ ॥

(१०)

राघव यह तुम्हारि रन लीला ।
अति विचित्र सुर मुनि सुखदायक दनुज विमोहन शीला ॥
जासु नाम सोखत भवनिधि सत श्रुति पुरान जस गावें ।
सो माँगत सागर सन मारग लखत आचरज आवें ॥
जाके डर सुर पाल लोकपति कालहु अधिक डराई ।
सो लछिमन मुर्छा महँ व्याकुल धरत न धीर धराई ॥
जो बाधेउ सुर-असुर चराचर करम पाँस रघुराया ।
सोई इन्द्रजित नागपाश बंध्यो देखत मन भरमाया ॥
जो संकल्प मात्र ते त्रिभुवन नाश सकै श्रम थोरे ।
मेघनाथ बध लागि लखन सों, सो बहुभाँति निहोरे ॥
जासु प्रताप प्रबल सुमिरत बल होत बलिन के छूँछे ।
रावन बध हित सोई विभीषण पास उपाइन पूछे ॥
रावणारि खल वन कृसानु हरि व्यापक अंतर्यामी ।
गिरिधर पतित शरण राखहुँ अब पाहि पाहि सुर स्वामी ॥ १० ॥

(११)

राघव रावन कहँ रन मार्‌यो ।
काटि काटि रिपु शीश बार बहु भुज प्रताप बिस्तार्‌यो ।
प्रबल प्रताप अनल मँह दशमुख, गर्व तुल सब जार्‌यो ।
करि संग्राम लोक तिहु के प्रभु, विपति कदंबन डारे ।

बरसत बिबुध विविध कुसुमावलि आरति मन्जु उतार्‌यो ।
अगिनि पाश ते सिय अंगीकृत पावन विरुद प्रचार्‌यो ।
लोकपाल किय अभय मुनिन्ह के संकट शोक निवार्‌यो ।
'गिरिधर' प्रभु पुष्पक चढ़ कपि संग कोशल नगर सिधार्‌यो ॥ ११ ॥

## (१२)

राघव चरण सरोज निरन्तर ।
जो मन मोर सदा मधुकर ज्यों रहेत एकरस प्रवाह भर ।
तौ मो कहँ श्री खंड सरिस तुम शिशिर होहु पूजित वैश्वानर ।
मिटहिं कलंकि कलुष सब लौकिक, रहहिं सदा अनुकूल राम बर ।
यों कहि कियो प्रवेश मैथिली प्रबल अनल मँह लखे सुर मुनि नर ।
जरेउ न एक सूत सारि को निरखि सुमन रहे बरष सकल सुर ।
चिता बुझाई सिय गोदी लै प्रकट भयो पावक बन भुसुर ।
प्रभुहिं प्रबोधि प्रशंसि सीय कहँ संशय गति कियौ अग्नि चराचर ।
गिरिधर मुदित कह जै जै जै जनकसुता जै जानकीबर ॥ १२ ॥

## (१३)

राघव मुदित निषादहिं भेंटत
श्रृंग बेर पुर बरिष पन्द्रहें आय बिरह ज्वाला जनमेटत ।
हृदय लगाई मीत कह भुज भरि प्रीति पुनीत सकेलि समेटत ।
करुणा सिन्धु बन्धु आरत के गुहहिं सप्रेम उछाह लपेटत ।
"गिरिधर" प्रभु मिलि गुह विभोरि भए सुरति न कह धनुषर सुधि मेटत ॥ १३ ॥

-----★-----
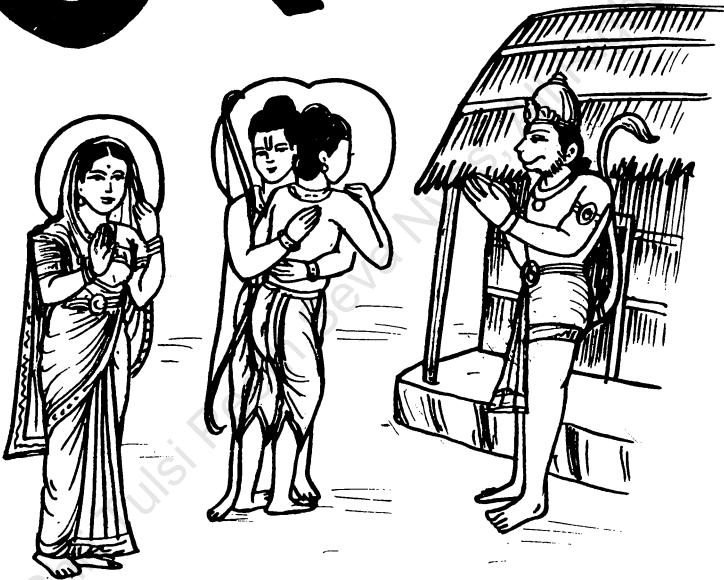
उत्तर
काण्ड

# उत्तरकाण्ड

## (१)

राघव सिय अनुज संग आवत ।
विप्र रूप मारुत सुत भरतहिं समाचार मन मुदित सुनावत ॥
रावन सकुल सदल सिरखंडन सुरगन सुमन हरिष बरसावत ।
लछिमन बानर भालु सीय संग, पुष्पक पर सुषमा सरसावत ॥
लोकपाल किय अभय असुर हति वन्दि छोर बर विरुद कहावत ।
चले अवधपुर मुदित अवध पति बन मग थल सब प्रियहिं देखावत ॥
करत प्रमोद विनोद कपिन्ह संग प्रिया सहित प्रभु हँसत-हँसावत ।
अवध निकट राजत पुष्पक चढ़ि हुलसि-हुलसि 'गिरिधर' गुन गावत ॥ १ ॥

## (२)

राघव पद पंकज भरत नए ।
पुलक गात जलभरे बिलोचन मन मधुकर मुखकंज दए ॥
सिसकि-सिसकि रोवत मुख धोवत आँसुन अधिक अधीर भए ।
करुणा सिन्धु बन्धु भुज भेंटत अति प्रिय हृदय लगाइ लए ॥
भंजि बिरह संभव दारुण दुःख उरथल हरष के बीज बए ।
रामभद्र भायप अवलोकत वरषत सुरगनसुमन चए ॥ २ ॥

## (३)

राघव को वशिष्ठ मुनि तिलक करत हैं ।
निरिखि निरखि रूप उमगत रोम कूप मुनि भूप भव्य भाव भगति भरत हैं ।
पुलक शरीर नीर नीरज नयन भरे धीर धार मिक धूरि धीरन धरत हैं ।
तिलक लगाई पहिराई रघुराई जू को पुरट मुकुट गुरु गौरव ढरत हैं ।
"राम भद्र" बैठि सोहें कनक सिंहासन पे जानकी समेत जग आरति हरत हैं ॥ ३ ॥

## (४)

राघव राजत कनक सिंहासन ।
सीता सहित अमित सोभा नख सिख सुन्दर कोटि
विषम सर निरखि-निरखि मुनि मन लोभा ।
श्याम गौर अभिराम युगल छवि जलधर दामिनि द्युतिहारी ।
रोम-रोम पर कोटि-कोटि शत कोटि काम रति बलिहारी ॥
जावक जूथपद कमल मनहरन मुखर मधुर नूपुर सोहे ।
मदन निसंग सरिस उर सुन्दर कटि किंकिनी सुमन मोहैं ॥

पीत नील बर बसन सुहावन नील पीत वपु छवि सरसे ।
नील पीत पाथोज उपर जनु घन दामिनि सुषमा सरसे ।।
करतल चाप धनुष कंकन कल कनक करीट शीश राजे ।
इन्द्र धनुष जलधर चपला रवि किरन बाल सुषमा भ्राजे ।।
भरत छत्र बर चवँर लखन रिपुदमन ब्यजन सादर लीन्हे ।
अंगद असि हनुमान चरम सुग्रीव शक्ति निज कर दीन्हे ।।
लंकापति धनुधरे खरे सुर नर मुनि निरत चरण सेवा ।
सीता नयन चकोर निशाकर विनती करत बिनत देवा ।।
सिंहासन आसीन कृपानिधि देत जाचकनि जो भावे
रामभद्र आजारज जाँचक भगति दान प्रभु सो पावे ।। ४ ।।

## (५)

राघव राजत राजभवन में ।
सुखी प्रजा सानन्द चराचर दिखत न लेश कलेश भुवन में ।
सीय समेत सदा सुख बिलसत महाराज उमगत सुख धन में ।
एक बार इच्छा अच्युत के भई सुत हेतु सुभाँय सुमन में ।
प्रभु रुख देखि जनक तनया तब प्रगटे युगल तनय एक छन में ।
लई प्रतिबिम्ब नाथ को बिरचौ रूप राशि उमगत मृदु तन में ।
"गिरिधर" स्वामिनि जनमि जुगल सुत भरेउ सुमंगल मोद सुजन में ।। ५ ।।

## (६) सोहर गीत

राघव पाए हैं जुगल कुमार बधाई अवध बजे ।
हरि प्रतिबिम्ब जानकी जाये, दोउ सुत रूप उदार
बधाई अवध बजे ।
नवमी तिथि आषाढ़ माष सित मंगल दिन अनुसार,
बधाई अवध बजे ।
मध्य दिवस रवि अवध महल में प्रगटे हैं राजकुमार,
बधाई अवध बजे ।
दासी दास मुदित सब नाचत गावत मंगलचार
बधाई अवध बजे ।
रामचन्द्र दीन्हे अनधन सुनवाँ, सीता दिये मोती हार
बधाई अवध बजें ।
लक्षिमन दीन्हे बाजि गण स्यन्दन,भरत भैया सहन भण्डार ।
बधाई अवध बजे ।

बेद पढ़न को विप्र बोलावें, शत्रुघन मोद अपार
बधाई अवध बजे ।
सासु कौशल्या पिसुवाँ बनाँवे, कैकयी करे नेग चार
बधाई अवध बजे ।
सासु सुमित्रा चौका पूरे सोहर गावें उदार
बधाई अवध बजे ।
रघुकुल चन्द्र पाये दुइ दुइ ठे चन्दा लखि लाजतशतमार,
बधाई अवध बजे ।
'गिरिधिर' मुदित जनम यश गावत, चिरजीवो लवकुश कुमार।
बधाई अवध बजे ॥ ६ ॥

(७)

राघव दुइ दुइ ठे चन्दा उदार पाए ।
निज प्रतिबिम्ब जानकी जाए, सुठि सुन्दर सुकुमार पाए ।
श्याम अंग कोमल मन मोहन, मनहुँ सुभग दोउ मार पाए ।
काक पक्षधर रूप मनोहर दिनकर बंश के आधार पाए ।
सीताराम के सुकृत के सरस फल मिथिला के सुख सार पाए ।
वरषे सुमन सुर बाजि नभ दुन्दिभि, कौशिलाभवन के भण्डार पाए ।
काका भरतलखन रिपु सूदन कोमल हृदय के हार पाये ।
'गिरिधर' मुदित साधु सब नाचत भूसुर भूमि के सिंगार पाए ॥ ७ ॥

(८)

राघव करि छठि ओबरहिया सुवेद पढ़ावत हो ललना
अवध सोहागिन संदर मंगल गावत हो ।
लवकुश नाम धर अनुपम वशिष्ठ सुख पावत हो, ललना
उमगि-उमगि दोउलालन रामजी खेलावत हो ।
सीता रानी ललित ललनवाँ पलनवाँ झुलावत हो ललना
श्रुति कीर्ति मांडवी उर्मिला जी मधुर मल्हावत हो ।
भरत लखन रिपु सूदन कनियाँ खेलावत हो ललना
दादी कौशिल्या सुमित्रा रानी चलन सिखावत हो ।
गुरुतिय माता अरुन्धती जू ललन बुलावति हो, ललना
कुलगुरु वशिष्ठ बहुभाँतिन वेद पढ़ावत हो ।
चुटकी बजाई रघुनन्दन ललन रिझावत हो ललना
लवकुश जनम के सोहर "गिरिधर" गावत हो ॥ ८ ॥

(९)

राघव झूलत सीता संग में झूला सरजू किनारे हे
आनंदि उमगि-उमगि अनुकूला झूला सरजू किनारे हे,
रिमझिम-रिमझिम सावन बरसै शीतल मधुर फुहरिया रामा
सेवत सुन्दर सुखद बयरिया दशरथ राजदुलारे हे ।
रेशम पाट की डोर सुहावन कनक जटित मन भावन रामा
भावत रुचिर कलपतरू डरिया दिनकर कुल उजियारे हे
चन्द्र कला हँसि हँसि के झुलावत सुभगा कजरी गावत रामा
भेंवत जनकिसुता की सरिया प्रियतम प्राण पियारे है ।
झुकि झुकि सीय राम मुख जोहति ललित हिडोला सोहत रामा
जोहति जुवति अटरिया "गिरिधर" प्राणअधारे हे ॥ ९ ॥

(१०)

**दोहा** :- ओसरिन्ह ओसरिन्ह झूली सुखमगन अवधपुर नारि ।
रघुवर कर गहि बिहसि कह, श्री मिथिलेश कुमारि ॥

o ----- o ----- o

राघव झूलिहौं झुलनवाँ तुम्हारि ओसरी
हो तुम्हारि ओसरी ॥
मधुर मधुर घन गरजत बरसत,
हरसत लखि कैं अवध नगरी ॥
परती फुहार अमिय सम सीकर,
भीजि गई पियाजू कुसुम चुनरी ॥
सरजू पुलिन पर परौं है हिडोलना,
छलकति उमगि आनंद गगरी ॥
तुम्हहि सहित मैं झूलन्ह पर लसिहौं,
बदरा के संग ज्यौं सोहति बिजुरी ।
सुनि सिय बचन रसिक मिलि झूलत,
चपरि झुलावत लखन रगरी ॥
उड़त बसन केश छूटत मचत हँसे,
बरसत सुमन बिबुध गुजरी ।
"गिरिधर" निरखि रामसिय जोरी,
भूलि गइ जगकी सुरति सिगरी ॥ १० ॥

## (११)

राघव झूले सियाजू के संग, सुहावन सावन में ॥
कनक हिंडोरा रतनमय डोरी,
शोभा देखि चकित मति मोरी,
मानो निजकर रच्यो है अनंग ॥ सुहावन -----. ॥
रिमझिम रिमझिम परत फुहारी,
भीजत कछु कछु सियाजू की सारी,
लखे हँसे प्रभु सरस उमंग ॥ सुहावन ----- ॥
लखन चपरि हँसि पैंग चलावत,
सिय प्रभु कर गहि कछु सकुचावत,
हँसे सखी संग मोद प्रसंग ॥ सुहावन ----- ॥
आलिंगन गावत अति मनभावन,
बाजे सरस मँजीरे मृदंग ॥ सुहावन ----- ॥
सो छबि सुमिरि सुमिरि हिय हुलसत,
देव वधूटि सुमन नभ बरसत,
जय जय गिरिधर प्रभु श्री रंग ॥ सुहावन ---- ॥ ११ ॥

## (१२)

राघव दीपमालिका निरखत ॥
जनकसुता संग कनक अटारी
चढ़ि छबि निरखि जुगल मन हरषत ॥
चहुँ दिसि कंचन दीप बिराजत,
झाँकी झाँकि सरस मन सरसत ॥
भगिनी हित जनु बिपुल वेश धरि,
मंगल आइ दीप मिस हुलसत ॥
गावत मंगलचार नारिनर,
सुरतरु सुमन बिबुध गन बरसत ॥
दीपावलि उत्सव रघुवर को,
सुमिरि सुमिरि गिरिधर हिय तरसत ॥ १२ ॥

# होली

## (१३)

राघव करो न मोते आरि सजन दे दो मोरी पिचकारी ।
फागुन मन भावन अति पावन त्रिविध वसन्त बयारि
कलरव कूजत मधुकर गुंजत पूजत मुनि सुखकारी रसिकबर अवध बिहारी ।
तकि तकि गाल ढरत पिचकारिन हँसत जुहार जुहारिन, मानत नांहि
निहोरे साजन मलत अबीर निहारी ।
अतिशय रंग पवाँरत छिन-छिन भीजि गई मोरी सारी ।
होरी को रसिया कोशलपति काँपति देह हमारी, अवध पति मैं बलिहारी ।
जनक सुता के सरस बचन सुनि हँसे प्रभु अनुज मझाँरि,
हा हा खवाई दई पिचकारी सखिगन मंगलकारी ॥ १३ ॥

## (१४)

## होरी गीत

## (राग-काफी)

राघव करो न बरजोरी, सजन दे दो पिचकन मोरी ॥
अवचक चितइ तिरीछे नयनन्हि करि मोहि भाव विभोरी
मल्यो गुलाल अबीर कपोलन्हि लइ पिचकारी छोरी
रसिक पिय करी ठकठोरी ॥ राघव ---------- ॥
तुम रघुवंशी छैल रसीले, केलि कुशल रस होरी
हौं नहि रसिक रीति कछु जानति श्री मिथिलेश किशोरी
सखी संग बय अति थोरी ॥ राघव ------- ॥
पकरि कलाइ आरि करहु अति बइयाँ दइहै मरोरी
अँग अँग बोरि दइ रंगन में, भाव सरस झकझोरी
सजन तुम डारी झकझोरी ॥ राघव ---------- ॥
तुमहि दुहाइ शान्ता ननद की, दे दो पिचकारी मोरी
खेलिय जुगल रसिक मिलि फागुन कनक भवन इकठोरी
लसो "गिरिधर" हिय जोरी ॥ राघव ---- ॥ १४ ॥

## (१५)

राघव लसत हैं साकेत ॥
कोटि काम समान सुन्दर बदन सुछबि निकेत ।

बाम दिसि सोमित सुलोचनि जनक सुता समेत ॥
सरजू तरल तरंग ललित रुचिर गृह सुख लेत ।
संत जन दरशन करत नित ठाढ़ सरिता रेत ॥
दिव्य पट भूषन जड़ाऊ लखि लजत झषकेत ।
"रामभद्र सुदास" दस दिसि चितव गुन सुख देत ॥ १५ ॥

(१६)

राघव बन्यो आज ब्रजचन्द ।
सरजू जल जमुना महँ परिणत अटवी भई अलिन्द ॥
धनुष वाण मुरली ज्यों सोहत,
शान्त वेश चंचल मन मोहत ।
मुख छवि चपल सुजन जिय जोहत ।
भई आजु कौशिला जसोमति, पुर पशु गोकुल वृन्द ॥
लसत आज साकेत मनोहर ।
वृन्दावन तृण तरुवर सुन्दर ।
सीता भइ राधिका सरिस वर ।
राजभवन नव लता कुंज सम, विलसतअति सुख कंद ॥
कनक मुकुट सिख पिच्छ सुहावन ।
गज मुक्ता गुंजामन भावन ।
सखा ग्वाल मुनि चित्त लुभावन ।
बिहरत अवध रूप वृन्दावन, "गिरिधर" हृदय अनन्द ॥ १६ ॥

(१७)

राघव मुझे कब विधु बदन दिखाओगे ।
तुम्हरे दरस हित तलफति अखियाँ,
कब तक इन्हें तलफाओगे ॥
जल बिन मीन ज्यौं बिकल, दिवसनिशि,
कब तक मुछे तरसाओगे ।
करुणा के घन, मेरे सूखे मरु मानस में,
कब प्रेम सुधा बरसाओगे ॥
दृष्टि से विहीन अति दुर्गम भवाटवी में,
कब तक मुछे भटकाओगे ॥
भवकूप पतित निकालेबे को करुणा से,
कब कर कंज लटकाओगे ॥

सीता लखन संग दरसन देके निज,
कब मन्द मन्द मुसुकाओगे ।
परसोगे कब चारु कर मेरे सिर पर,
मुझे कृत कृत्य कब बनाओगे ॥
हुए क्यों निठुर यों निहारो नाथ मेरी ओर,
कब भव फंद से छुड़ाओगे ।
अधम अनाथ "गिरिधर" को कृपा निधान,
कब पद रज से मिलाओगे ॥ १७ ॥

(१८)

राघवलाला के पंकज चरन मन निज नयन निहार ।
ये हैं तेरे जीवन आभरन मनकर बर सुभग सिंगार ॥
विषम विषय जड जाल भयंकर ।
सुख हित भ्रमवश फँस मृग मत मर ।
तुझे खोना नहीं एक छन, कर मन मुढ़ विचार ॥
पंथ अपार नहीं कुछ सम्बल ।
केवट नाव नहीं तन निर्बल ।
ये हैं भवनिधि के तारन तरन । मन कर ले तू सागर पार ॥
सदियों से वन में भटक रहा तू ।
निबिड़ निगड़ में अटक रहा तू ।
ये हैं निरुपाधि अशरन शरन । जोड़ इनसे तू अपना तार ॥
ना कर विलम्ब जान शुभ अवसर ।
प्रभु पद कंज मञ्जु बन मधुकर ।
ये हैं "गिरिधर" के भव भय हरन, मन कर दिन रैन बिहार ॥ १८ ॥

(१९)

राघव आओ ललन राम पंकज नयन ।
मैं तो पलकों के पटमें बिठालूँ तुझे ॥
दूर जाओ नहीं मुस्कराओं यहीं,
देख दृग भरके दिल में छिपालूँ तुझे ॥
तेरी यादों के सरगम से मृदु रागिनी ।
छेड़ संगीत सुन्दर सुनाऊँ तुझे ॥
तेरी तलफन में बेचैन दिन रैन मैं,
गीत गा गा के निशदिन रिझाऊँ तुझे ॥

मैं तो नैनों के भीतर चुरालूँ तुझे ॥
धूल धूसर सरीर नीर नीरद गंभीर ।
देख झाँकी मैं तन मन वारा करूँ ॥
चारू पंकज चरन भक्त भव भय हरन ।
प्रेम के आँसुओं से पखारा करूँ ॥
मैं तो मन पालने में झुला लूँ तुझे ॥
कौशिला के किशोर लोक लोचन के चोर ।
मेरे जी की जलन को मिटाओ प्रभो ॥
आके "गिरिधर" की मन वाटिका में ललन
तोतरेवैन रस मय सुनाओ विभो ॥
मैं तो उर के अजिर मैं खिलालूँ तुझे ॥ १६ ॥

(२०)

राघव नेकु बिहंसि मोहि हेरो ।
राजकुमार ललन दशरथ के, अब मत करो अबेरो ॥
काल कर्म गुण बिबस चकित अति, व्याकुल है मन मेरो ।
कृपा दृष्टि से हरो सपदि प्रभु, बालक कौतुक तेरो ॥
जाऊँ कहाँ सूझत कछु नाहिंन, चहुँ दिसि दिखै अँधेरो ।
बदन चन्द्र की चारु चाँदनी, आनिय नाथ सबेरो ॥
हम हारे बहु देर मनावत, सपनेहु बहु विधि टेरो ।
कीजे कृपा मिटै "गिरिधर" को जनम जनम को फेरो ॥ २० ॥

(२१)

राघव केहि विधि धीर धरौं ।
बिनु देखि तब चरन सरोरुह, मैं जिय जरनि जरौं ॥
करम बबस चौरासि लाख जग, जनमत मरत फिरौं ।
प्रभुपद बिमुख श्वान सूकर ज्यों, विषयन उरहि भरौं ॥
जल बिनु मीन हीन मणि फणि ज्यों, केहि विधि बोध करौं ।
निशि नहीं नीन्द भूख नहीं बासर, नयनन्ह नीर ढ़रौं ॥
निज अघ घोर बिचारि कृपानिधि, दुःसह गलानि गरौं ।
छमहुँ दोष अवधेश कुँवर मेरे, हौं शिशु अरनि अरौं ॥
यह कलि काल कृतान्त देखि मैं, मन महँ अधिक डरौं ।
रामचन्द्र मुखचन्द्र सुधा बिनु, किधौं विष खाय मरौं ॥
जनि तरसाउ आउ मोरे सनमुख, तोहि लखिदुःख बिसरौं ।

अब अपनावुँ दास "गिरिधर" कहँ, तव पद पदुम परौं ॥ २१ ॥

(२२)

राघव क्यों न हमहिं अपनावत ।
बनि कठोर कोशल किशोर मेरे, काहे अधिक तरसावत ॥
नाना जोनि जनम निज अघ बस, हँहरि मर्यो जग धावत ।
लोलुप खर बराह गृह पशु ज्यों, कतहुँ शान्ति नहीं पावत ॥
उत अति नीच छहों रिपु मोकहँ, अनुदिन नाथ सतावत ।
तव जन जानि इतै कपटी कलि, क्यों यह विपत्ति सहावत ।
राजकुमार अंध "गिरिधर" के क्यों नहीं सन्मुख आवत ॥ २२ ॥

(२३)

राघव तनिक मोहि हँसि हेरो ।
कृपा यतन उदार चूडामणि, एक भरोसो तेरो ॥
नहिं तन बल, बुधि समदम सम्बल, नहिं धन सम्पत्ति खेरो ।
एक सहाय राय दशरथ के, सुत सब लायक मेरो ॥
नीच अजामिल तनय व्याज करि, सकृत नाम तब टेरो ।
कृपानिधान ताहि तुम तार्यो, जबहि काल अबड़ेरो ॥
अति कराल कलि काल ब्याल सम, चहुँ दिसि ते मोहिं घेरो ।
अशरण शरण शरण राखिये अब, अति अनाथ निज चेरो ॥
दीन दयाल कहाइ दीन हित, मोहि छाँडहु जनि नेरो ।
सीता रमण दास "गिरिधर" सिर पंकज कर निज फेरो ॥ २३ ॥

(२४)

राघव अब मोहि तोर भरोस ।
सज्ञन सुखद सरल सुठि सन्दर, दीन जनहिं प्रभु पोष ॥
यद्यपि हों अनाथ कालिमलरत, दीन हीन मल कोष ।
तदपि नाथ तैं पतित उधारन, कस न हरसि मम दोष ॥
अधम भोग वासना सिंहिका, करति सदा मन शोष ।
राम नाम मारुति प्रताप अति, कस न दलत धृत रोष ॥
निज अध समुझि अपार उदधि सम, होत न हिय संतोष ।
बेगि कृपालु दास "गिरिधर" को करिय प्रेम परितोष ॥ २४ ॥

(२५)

जय दशरथ चितचोर शिशु, जय कौशलकुमार ।
जय "गिरिधर"के प्राण धन, जय राघव सरकार ॥

राघव जू सामने तो आओ, ललन मत देरी लगाओ ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल तिलक अलक झलकाओ ॥
खञ्जन दृग अञ्जन मन रञ्जन, चितवन की जादू चलाओ ॥
दुइ दुइ दशन अधर मृदु पल्लव, तोतरि बचन सुनाओ ॥
ठुमिकठुमुकि शिशु सन्मुख डोटलत प्रेम पियास जगाओ ॥
"गिरिधर" मरन चहत दरशन बिनु रूप पियूष पिलाओ ॥ २५ ॥

## (२६)

राघव तुम साँचे हम झूठे ।
प्रणतपाल सर्वज्ञ शिरोमणि साहिब सबल अनूठे ।
कौन के लाज गरीब निवाजेकी को खायो फल जूँठे ।
एक कलिकाल काटि सुरतरु हठि भजत करीर को ठूठे ।
तेहि परनाथ दास "गिरिधर" पर फेरि विलोचन रूठे ॥ २६ ॥

## (२७)

राघव अब ना हमहिं तरसाओ ।
अब न लाल बिसराइ दास कहँ विरह अगिनि सरसाओ ॥
श्याम स्वरूप अनुप मनोहर, हम कहँ बेगि दिखाओ ।
बेगि कृपानिधि मुख मयंक की, मंजुल सुधा पियाओ ॥
साधनहीन अनाथ दीन जन, जानि न मोहि तलफाओ ।
कृपा डोरि तें बांधि राम शिशु, सादर मोहि अपनाओ ॥
दीन दयालु सुनाइ बचन मृदु, उर आनन्द बरसाओ ।
ठुमुकि आइ "गिरिधर" मन मन्दिर, राम भद्र हरषाओ ॥ २७ ॥

## (२८)

राघव असि तुम्हारि यह माया ।
अति दुस्तर सागर ज्यों लागति बस कृत जीव निकाया ॥
काम क्रोध लोभादि जन्तु मय दारुण भय उपजाया ।
मोह्यो सकल चराचर जीवन जेहि न मोह को जाया ॥
तव पद कमल दूरि कृत छन महँ मुधा विश्व निरमाया ।
सपनेहुँ नहिं हौं भजत नाथ तोहि सेवत विषय निकाया ॥
अब दीनहु उद्धरहु कृपानिधि बहु जन मन भरमाया ।

कलि मल ग्रसित अधम "गिरिधर" पर बेगि करउ निज दाया ॥ २८ ॥

(२९)

राघव तुमको रिझाऊँ कवन गुन से ॥
संयम जप तप कछु नही मेरे ।
आस घटी इन्द्रिय गन से ॥
पूजा विधि श्रंगार आरती ।
होइ कछु नहि या तन से ॥
ज्ञान विराग प्रेम को बल नहि
कैसे लुभाऊँ भगति धन से ॥
कबहुँक चरन सरोज न सुमिरत
पार न पाऊँ मैं निज मन से ॥
शुक सनकादिक ध्यान नहीं आवत
ताको क्यों पाऊँ मैं साधन से ॥
"गिरिधर" मन कपि संग हँसि खेलहुँ
दूर करहुँ भव बन्धन से ॥ २९ ॥

(३०)

खेलत सरजू तीर प्रभु, अनुज सखन्ह संग चंग ।
"गिरधर" रूप निहारि यह, उमगत हृदय उमंग ॥

० —— ० —— ०

राघव प्यारे हमारे दुरति दहिये ।
मोको खिलौना बनाइ के कृपानिधि निशि दिन खेलत ही रहिये ॥
मन करि चंग उड़ाइ रहस बस कृपा ड़ोर निज कर गहिये ।
ढ़ील न दीजे खैंच प्रभु लीजै केलि कुशल शिशु जस लहिये ॥
तुम कहँ लाज गरीब निवाज की, दीन दयाल बिरद बहिये ।
जनि कोउ लेइ चुराय अपर शिशु ताते तुमहि सकुचि कहिये ॥
बाजी तुम्हरे हाथ "गिरिधर" की आपनि ओर ते निरबहिये ॥ ३० ॥

(३१)

राघव की मधुर झाँकी, नख सिख छबि बाँकी ।
झाँकी झाँकि मनवा हरषाय हे, रघुनन्दन लाला ॥
निशि नहिं नींद आवे, भोजन न भोग भावे ।
बिरह अगिनि सरसाय हे, रघुनन्दन लाला ॥

चन्दा को चकोर जैसे, धन हित मोर जैसे ।
रउरे हित मनवा अकुलाय हे, रघुनन्दन लाला ॥
जल बिन मीन जैसे, फनि मनि हीन जैसे ।
ललकि ललकि ललचाय हे, रघुनन्दन लाला ॥
कुटिल अलकें कारी, मुखवा की शोभा न्यारी ।
आँखि भर देखौं सुख पाय हे, रघुनन्दन लाला ॥
"गिरिधर" के दुःख छीजै, चरण शरण में लीजै ।
पद कंज भवँर बनाय हे, रघुनन्दन लाला ॥ ३१ ॥

## (३२)

राघव ! लखि तुम्हारि निठुराई ।
हौं निराश भव जाल अमित अति मरन चहत अरगाई ॥
क्षणिक कबहुँ थिर रोकि वृत्ति मैं भजन करत मन लाई ।
तबहिं मार मद मोह अलस रिपु करहिं उपद्रव धाई ॥
अब निरूपाय सहाय हीन हौं कौन करे ठकुराई ।
नामप्रताप रविहिं किधौं गयो कलि काल राहु खल खाई ॥
हतहु बेगि अति प्रबल मोरि रिपु कर शर चाप चढ़ाई ।
बूडत जलधि पकरि कर "गिरिधर" राखु राम रघुराई ॥ ३२ ॥

## (३३)

राघव ! तुम सम हित जग माँहीं ।
अधम उधार गरीब के ठाकुर, हेतु रहित कोउ नाहीं ॥
स्वारथ मय जग जननि जनक गुरु, जद्यपि विपुल लखाई ।
तव करुणाम्बुधि कन अरबहु ते अंशहु सकल समाहीं ॥
अपर ईश के पाँव पलोटत कोटिक कलप सिराहीं ।
तुमहिं अरपि जन नयन अम्बु कण अभिमत अमिय अघाहीं ॥
झूठि न कहहुँ पुरान वेद इतिहास सुसंत कहाहीं ।
केवट कोल किरात कीश अरु कौनप साखि भराहीं ॥
यह अनुमानि त्यागि आशा सब हौं आयो तव पाहीं ।
कर अवलम्ब देहु "गिरिधर" कहँ अभय आँखि जेहिं नाहीं ॥ ३३ ॥

## (३४)

राघव तनिक मधुर मुसुकावो ।
जनम जनम ते तृषित चपल चख, मुखशशि सुधा पिआवो ।
तोतर वचन सुनाइ मधुर कल प्राणनि नेकु जिआवो ॥
दशन इन्दु कल कान्ति विभातें उर भ्रम तिमिर मिटावो ।
कुटिल केश लटकनि पर लालन, चंचल मन अरुझाओ ॥
रज रूषित पट पीत श्याम तनु, झाँकी सरस दिखाओ ।
नूपुर कल रून झुन धुनि अति प्रिय बारक मोहि सुनाओ ॥
मैं बलि जाऊँ गहरू जनि लावहु, ठुमुकि ठुमुकि चलि आवो ।
दर्शन आर्त दास "गिरिधर" के जिय की जरनि जुड़ाओ ॥ ३४ ॥

## (३५)

राघव किमि मुख तुम्हहिं दिखाऊँ ॥
श्रुति विरुद्ध कोटिक करि कुकरम नहीं निशि दिवस अघाऊँ ।
दिवा रैन दुख अयन मयन मल, कृमि मानसहि बनाऊँ ॥
वाद विवाद विनोद अनख महँ, हौं शुभ समय गवाऊँ ॥
तब गुनगान करत निमिषहुँ महँ अधिक अधिक अलसाऊँ ।
देखत हूँ दुःख रूप जगत यह तदपि तहाँ लिपटाऊँ ।
कबहुँ न हिय भरि राम नाम जपि, नयनन्हि, नीर बहाऊँ ॥
तुम सर्वज्ञ शिरोमणि सियवर, क्यों बहु तुम्हहिं जनाऊँ ।
दीजै बाँह अंध "गिरिधर" कहँ तबहिं थाह भव पाऊँ ॥ ३५ ॥

## (३६)

राघवजू हौं कितनो दुःख सहिहौं ।
कब लगि नाथ विपति कराह महँ तिल जिमि निशि दिन दहिहौं ।
कब लगि विपति भार अति दारुण पामर खर ज्यों बहिहौं ॥
कब लगि कलि मल मय तडाग महँ हौं बिटकृमि ह्वै रहिहौं ।
तुम सर्वज्ञ विदित सब की गाति ताते कछु नहिं कहि हौं ॥
राम दुवार टूक रोटी को कहहुँ कबहुँ किन लहिहौं ।
तजि सब आस दास "गिरिधर" प्रभु चरण कमल अब गहिहौं ॥ ३६ ॥

## (३७)

राघव मो समान को पापी ।
निशि दिन फिरहुँ बिसारि चरण तब, खर इव विषय कलापी ।

जानत हौं संसार कुटिल अति, स्वारथ रत परितापी ॥
तदपि न तजत ताहि पामर मन कूकर ज्यों मल व्यापी ॥
जनम अनेक गयो करुणानिधि, नाथ तुम्हहिं बिसरायो ।
देखत बध्यो जाल महँ खग ज्यों, तबहुँ न नेकु छोडायो ॥
अब सिर धुनि पछिताऊँ देह बल, सकल दिनहिं दिन छीजै ।
अधम उधार दास "गिरिधर" की बेगि बाँह गहि लीजै ॥ ३७ ॥

(३८)

राघवजू अब कस धीर धरौं ।
देखत रहउ तोरि निठुराइ, मन क्यों तोष करौं ॥
कलप कोटिलौं घोर नरक महँ, पुनि पुनि पचत परौं ।
किन्तु तुम्हारि बदन शोभा लखि तहँ हिय हरष भरौं ॥
अंग पीर भर भीर दुसह अति सहि-सहि ढरनि ढरौं,
"गिरिधर" सहत विपति अति दारुण, वेदन चहत मरौं ॥ ३८ ॥

(३९)

राघव जनम को फल देहु ।
द्वार रिरकत ठाढ़ हौं पुरवहु मनोरथ एहु ॥
मीन ज्यों जल लागि चातक रटत जिमि हित मेहु ।
तिमि बढ़े प्रभु पद कमल महँ मोर अनुछन नेहु ।
छीन अंग अधीन अनभल प्रकृति पापी देहु ।
तुमहु जनि छाड़हु विमुख है अपन छोह करेहु ॥
पतित पावन प्रणत सुरु तरु साँच जस करि लेहु ।
आन्हरो "गिरिधर" हि निज पद भगति मांगन देहु ॥ ३९ ॥

(४०)

राघव जू क्यों अब दूरि परात ॥
काहे न लाल निकट रहि खेलत, संग सखा सब भ्रात ।
काहे न तनिक दिखाइ बदन विधु, मधुर मधुर मुसुकात ॥
तज्यो संग संसार सुहृद सब, छीन भयो अब गात ।
तुमहुँ दूर होत रघुनन्दन, कैसे धों विपति सिरात ॥
जोगि वृन्द जेहि ध्यान न पावत, मुनि सुमिरत सकुचात ।
सादर हीन दीन या करतें कैसे गह्यो तुम जात ॥
तेरी सौं करि कहौं लालजू, कछु न बनावौं बात ।

बेगहि गहहु हाथ "गिरिधर" को, मम दिग खेलहुँ तात ॥ ४० ॥

(४१)

राघव जू तुम्ह सन कछु न कहौंगो ।
जानत हूँ निज अघ करुणामय, मन महँ चुपहि रहौंगो ॥
कलप कोटि लगि रौरव महँ, प्रभु साँसति घोर सहौंगो ।
तदपि कर्म मन बचन एक रस, तव पद पदुम गहौंगो ॥
प्रबल पाप त्रय ताप दवानल, हौं निशि दिवस दहौंगो ।
कबहुँक राउर कृपा वारि के, सींकर सुखहिं लहौंगो ।
भुकुति मुकुति रिधि सिद्धि सियावर सपनेहुँ कछु न चहौंगो ।
"गिरिधर" है आन्हरो रामजू के, द्वारेहिं परो रहौंगो ॥ ४१ ॥

(४२)

राघवजू तुम जीते हम हारे ।
कोटि जनम करि पाप कुटिलता हौं हरि तुमहि बिसारे ।
एतेहु पै रघुवंश शिरोमणि ममता मो पर डारे ॥
सनमुख रहौं मकर केतन को सोने के देह बिगारे ।
तबहुँ न दयी पीठ करुणानिधि निदरि मोर अघ दारे ॥
तव माया बस भूलि भरम जग सदगुन सब महि डारे ।
कबहुँ कृपाल हेरि निज ओरेहि मोहि भव सिन्धु उबारे ॥
हौं नहि तज्यो सुभाव आपनो तुम तजि गेह सिधारे ।
"गिरिधर" जनम कनौड़ो भरिहैं रहि नित द्वार तुम्हारे ॥ ४२ ॥

(४३)

राघवजू तेरी मेरी प्रीति पुरानी इसे पामर क्या जाने
नाते सब संसार के मैने डाले तोड़,
एक भरोसा आपका लिया तुम्ही से जोड़,
इसे पामर क्या जाने ॥
मैं अनाथ तुम्ह दीन हित मैं पतित सभीत,
तुम्ह पावन भव भञ्जन ग्यान गिरा गोतीत
इसे पामर क्या जाने ॥
जनम जनम की बेलड़ी उर में फैली आय,
शीतल छाया अमी फल खात सिहात अघाय ।
इसे पामर क्या जाने ॥

केवट मीत कृपानिधि हे मैथिली निवास,
आयो शरण बिलोकिये रामभद्र तव दास,
इसे पामर क्या जाने ॥ ४३ ॥

## (४४)

राघवजू क्यों अति निठुर भये हो ।
निज करतूति बिसारि दीन हित क्यों हरि मौन लये हो ॥
इक कलिकाल कराल काल यह जोग वियोग ढये हो ।
तुमहु लाल विहाइ तिनक ज्यों पाप त्रिताप दये हो ॥
गणिका व्याध गीध गज के तुम्ह पातक पुञ्ज हये हो ।
मेरी दिशि केहि कारण रघुवर निज करुणा अथये हो ॥
अब लौं आप मरम के घाव ज्यौं मोहि निज करि जो गये हो ।
लोचनहीन दीन "गिरिधर" पर क्यों अब ढ़ील दये हो ॥ ४४ ॥

## (४५)

राघव जू ! सपदि कृपा अबकीजै ।
जनम जनम को पाप ताप अति, बेगि कृपानिधि छीजै ॥
पाहन हृदय सुजसु सुनि राउर, कबहहुँ न नाथ पसीजै ।
काम कथा तुषार कण ते नित, मानस नीरव भीजै ॥
दीन दयालु सम्भारि बिरद निज, अभय बाँह मोहि दीजै ।
कलिमल राहु ग्रसितजनु विधु कहँ, विधु मुख शरणहि लीजै ॥
हौं बलि जाउँ नाम लै तेरो, जब लगि या जग जीजै ।
करुणासिन्धु दास "गिरिधर" सिर, चरण सरोज धरीजै ॥ ४५ ॥

## (४६)

राघव को कृपालु जग तोसों ।
तुम सम बिनु स्वारथ को जनहित, को स्वारथ रत मोसों ॥
कोटि जनम को अधी मलीन हौं, अवगुन पातक कोसों ।
जगत असार तज्यो परिवारहु, नाहिन आन भरोसो ॥
महाराज दशरथि दानि मणि, जिय न धरहु मम दोषों ।
तव गुन गाई आजु लगि "गिरिधर" पेट पाँवरहि पोसों ॥ ४६ ॥

## (४७)

राघव ! कबहुँ न मोहि बिसारो ।
समुझि मोर अघ अमित मेरु सम बेगि हरो जो पारो ॥
पाप पयोधि लीन बिनु लोचन लखि हिय दया बिचारो ।
अधम उधारन सुजस निरखि निज बारन तारन तारो ॥
यह कलिकाल कुटिल अति निर्दय हहरि हेरि मैं हारो ।
तापर तुमहुँ तजहु मोहि तृन ज्यों चलहिं कहा प्रभु चारो ॥
बहुत भई अब द्रवहु कृपानिधि राजिव नयन निहारो ।
बूड़त सिन्धु अँध "गिरिधर" कहँ निज कर टेकि सँभारो ॥ ४७ ॥

## (४८)

राघव ! हौं नित गरत गलानि ।
सत्य कहहुँ पन रोपि कृपानिधि सुनिये जानकी जानि ॥
जाके ठाकुर आप अवधपति जनक लली ठकुरानी ।
ताहू काल तेली तिल ज्यों हठि पेरत साँसति घानी ॥
येही लाज नित जरत चित्त मम जस न तुम्हारो छीजै ।
बूड़त सिन्धु दास "गिरिधर" कहँ टेक बाँह को दीजै ॥ ४८ ॥

## (४९)

राघव जू एक मनोरथ मोर ।
परवहु पुरहर पूज्य पुरुजवर, पुनि पुनि करहुँ निहोर ॥
ज्यों जिय धरहु नाथ मम अवगुन, रौरब परहुँ कठोर ।
भ्रमि भ्रमि मरहुँ लाख चौरासिन सहहुँ बिपति अति घोर ॥
अब आयेहुँ हरि हारे शरण तब, मन निराश नहिं थोर ।
क्षमि अपराध अगाध सिन्धु तें उबरौं करहु किशोर ॥
बाँह बोलि अपनाउ दीन कहँ, भलो जानि, निज ओर ।
करुणा करि "गिरिधर हिं निहारहु तनिक नयन के कोर ॥ ४९. ॥

## (५०)

राघवजू ! मोपर होउ दयाल ॥
व्है नर सिंह निमिष महँ बेधहु कनक कशिपु कलिकाल ।
विगत विषाद करहु प्रहलादहि भंजहु भव भय जाल ॥
बरन धरम आश्रम विहीन जन संतत चलत कुचाल ।
जव के घुन ज्यों सतत मोहिये पीसत कुटिल कराल ॥

कहा कहौं कछु चलत न चारो रोवत सिर धुनि बाल ।
गोमर मारि बिबुध गन सुरभिहि निदरि निसारत छाल ॥
किये सचिव कपि भालु कृपा करि शबरिहिं कीन्ह निहाल ।
तेहि करुणा तें राखहुँ "गिरिधर" हिं चरण कौशिला लाल ॥ ५० ॥

## (५१)

राघव तुम्हारी शोभा भरे नैन मैं निहारूँ ।
तुम्हें देख देख जी भर, दिन रैन मैं बिसारूँ ॥
शारद शशांक सुन्दर, आनन अधर मनोहर ।
अवलोक बाँकि अलके, तन मन तुम्हीं पे वारूँ ॥
कुण्डल कपोल लोचन, जन भूरि भीति मोचन ।
मुसुकान मञ्जु लख के, हियकी व्यथा निवारूँ ॥
मति को बना के तन्त्री, मन तार को चढ़ा के ।
तेरी याद के स्वरों में, नव रागिनी सवाँरू ॥
लालन न दूर जावो, मेरे समीप आवो ।
दृग आँसुओं के जल से, तेरे पाँव मैं पखारूँ ॥
बस बात मान मेरी, बलि जावुँ तात तेरी ।
"गिरिधर" हृदय सदन में, नित आरती उतारूँ ॥ ५१ ॥

## (५२)

राघवजू हौं हारे तुम जीते ।
चौपट कियो खेलि चौपट सुख, अजहूँ रहे अति रीते ॥
अजित कहाइ जनन सन हारत बिरद भूलि निज जीते ।
हौं परन्तु जस तोर संभार्यो, जदपि खोट हौं ही ते ॥
दूरि परात ललात देखि मोहि, जो उर ही हित मीते ।
राखहु भवन द्वार "गिरिधर" कहँ, जानि चरन चित चीते ॥ ५२ ॥

## (५३)

राघव मोहि चितवहु एक बार ।
कल्याण सदन करुणा अपार ॥
रघुवंश विभूषण अति उदार ।
दूषण दूषण दशरथ कुमार ॥
तनु छबि जित नीरद नव तमाल ।
शत काम मनोहर शिशु मराल ॥

पट पीत लसित कोशिला लाल ।
किलकत चितवत सुनि धुनि रसाल ॥
अति मोहन छबि जित कोटि काम ।
पुण्य प्रणाम भुवनाभिराम ॥
शिर कनक मुकुट कुण्डल सुलोल ।
खञ्जन दृग मञ्जुल शुचि कपोल ॥
नासिका सुभग मुख शरदचन्द्र ।
शोभा समुद्र श्री रामचन्द्र ॥
नृप आँगन खेलत रूप सिन्धु ।
भक्तानुकूल प्रभु दीन बन्धु ॥
संसार सिन्धु गत बाल त्राहि ।
"गिरिधर" कहँ रघुवर पाहि पाहि ॥ ५३ ॥

(५४)

राघवजू ! अब जनि गहरू करो ॥
भववारिधि दुर्गम अवगाहत,
कलि कराल व्रत कछु न निबाहत,
नाथ बाँह अवलम्बन चाहत,
पद पंकज जहाज करि, हरि निज जानि विपत्ति हरो ॥
जग में तनिक भरोसो नाहिन,
अति कुभाग नहिं विधि हूँ दाहिन,
तुम तजि और निहोरन नाहिन,
दीन दयालु हमहु अघ अवगुन, अपनी ढ़रनि ढ़रो ॥
गीध उधारन बिरद सम्हारहु,
निज करि टेक कृपालु उबारहु,
पहिले अघ सब मोर बिसारहु,
हहरि मरत अनाथ व्है "गिरिधर" सिर कंज धरो ॥ ५४ ॥

(५५)

राघवजू को हिय की आँखिन हेर ।
कोटि मनोज लुभावन सुन्दर, नख सिख रूप सुबेर ॥
जित चितवत तित होत चित्त बस, रहत न कछु अनेर ।
पागल प्रेम न रूप रसिक भयो, जागहु देखि सबेर ॥
अरून अधर मुसुकानि मनोहर, निरखत मिटत कुफेर ॥

भूषन अँग अँग लसित जड़ाऊ, मानहु छबि के सुमेर ॥
तजि कुसंग रंग रूप रंग रस, मूढ़ न करसि अबेर ॥
पलक पावड़ानि राम सुबाबहु उर वर गिरिधर केर ॥ ५५ ॥

(५६)

राघव देरी न तनिक लगाओ मधुर मुसुकाओ जरा ।
निशि बासर तुम बिन दृग तरसे बिरह अनल उर अन्तर सरसे ।
राघव मन की व्यथा को मिटाओ --------- मधुर मुसुकाओ ॥
जुग जुग से भव भीम गहन में,
भटक रहा व्याकुल अति मन में,
झुलस रहा नित विषय दहन में,
राघव पावक प्रबल बुझाओ ----------- मधुर मुसुकाओ ॥
नयन बिहीन निशान अंधियारी
सम्बल को नहिं सुनहु खरारी
राघव कर गहि राह दिखाओ ----------- मधुर मुसुकाओ ॥
बाँह गहे की लाज तुम्हहीं को ।
बिरद गरीब निवाज तुम्हही को
राघव "गिरिधर" को अपनाओ ----------- मधुर मुसुकाओ ॥ ५६ ॥

(५७)

राघवजू ! अब ना मुझे ठुकराओ ।
अमित पाप अवलोक दास के, अब नाथ न मन घबराओ ॥
जन्म जन्म से भटक रहा हूँ, अब न अधिक बहलाओ ।
करूणा सिन्धु कृपा धारा में पातक पुञ्ज बहाओ ॥
तवा सदृश जलता उर अन्तर, दारूण ताप बुझाओ ।
प्रणतपाल राजीव विलोचन, लोचन तृषा मिटाओ ॥
तेरी शपथ विनय सुन लालन, नेकु हृदय पतियाओ ।
गिरिधर मरण आज दर्शन बिनु सपदि पियूष पिलाओ ॥ ५७ ॥

(५८)

राघव ! हमरी ओरिया ऐब तू कवनि बेरिया ।
जनम जनम से तलफत बाटी, तोहरे आस लगाये ।
पलक पाँवडा ऊपर रघुवर, सुरति के दीप जलाये ।
राघव मन की आस पुरैब, तू कवनि बेरिया ॥

तोहरे चरन कमल के परसत, तरी अहल्या नारी ।
राम नाम निज सुगा पढ़ावत, गनिका तरी बेचारी ।
राघव भव के फाँस छोड़ैब तू कवनि बेरिया ॥
धूलि विधूसर सुभग श्याम तनु, कुंचित केश सँवारे ।
ठुमुकि ठुमुकि आगे कब ऐब, कोशल राज दुलारे ।
राघव हमरी प्यास बुझैब, तू कवनि बेरिया ॥
दीन दयाल उदार शिरोमणि, काहे निठुरता धारी ।
बड़े बड़े पतितन के तारे, अब "गिरिधर" की बारी ।
राघव जनम के त्रास नसैब, तू कवनि बेरिया ॥ ५८ ॥

(५६)

राघव तनिक मन्द मुसुकाओ ।
नीरस हिय मरूथल में रस की मन्दाकिनी बहाओ ॥
कुटिल अलक की झलक मनोहर नयनन्हि महँ झलकाओ ।
मञ्जु सुधा माधुरी बदन की मानस में छलकाओ ॥
निन्दित चारू चपल चपला छबि दसन ललित ललकाओ
मोहन रूप अनूप सुधा रस नयन चकोरहिं प्याओ ॥
लावहु जनि विलम्ब नृप लालन हिय की जरनि जुड़ाओ ।
अधम अनाथ अन्ध "गिरिधर" कहँ करूणाकर अपनाओ ॥ ५६ ॥

(६०)

राघव कृपा की कोर मेरी ओर हेरिये ॥
दीन बन्धु दीनानाथ शील सिन्धु गहो हाथ ।
जनके नहिं अनाथ नाथ मोहि अवड़ेरिये ॥
नील जलद सरिस श्याम लोक लोचनाभिराम ।
दाम काम क्रोध लोभ देखु पाँव बेरिये ॥
सुनहु कौशिलाकुमार रूप शील गुन उदार ।
घोर भव अपार हेरि हृदय हहरि मेरिये ॥
तुम तजि मैं कहाँ जाउँ कौन देय मोहि छाउँ ।
अभय पाउँ कहँ जुड़ाउँ ठाँव काह केरिये ॥
सुनहु बिनय श्री निवास कहत "रामभद्रदास" ।
काल पाश त्रास दास एक आश तेरिये ॥
भव मग अगम निगम अति, त्रसित मूरि मति घोर ।
"गिरिधर" कहँ बारक लखहुँ, नलिन नयन की कोर ॥ ६० ॥

## (६१)

राघव तुम जीते हम हारे ॥
क्रूर करम बस जनम जनम तें मैं तोहि नाथ बिसारे ।
तदपि न तज्यो संग मेरो रघुवर सहज कृपा उर धारे ॥
काम क्रोध मद मोह घोर रिपु जब जब मोहि पचारे ।
तब तब तुम गहि बाण शरासन निदरि निशाचर मारे ॥
जब जब पर्‌यो नरक अति पाँवर तब तब तुमहि उधारे ।
सहस बार बूड़त भव वारिधि निज करि टेकि उबारे ॥
अबकी बार प्रभु लाज राखिये तुम सर्वस्व हमारे ।
आन्हर अधम नीच शत "गिरिधर" राम अर्‌यो तब द्वारे ॥ ६१ ॥

## (६२)

राघव केहि बिधि तुम्हहिं निहारौं ।
ज्ञान बिराग नयन नहिं रघुवर केहि विधि दरसन पारौ ॥
पुण्य न कछु कियो छनक एकहू, जेहि बल धीरज धारौं ।
मुकुर मलिन विषयन काई तें, ब्याकुल सकुचि बिचारौं ॥
निज करतूति बिलोकि हहरि हिय, दीन बन्धु मन हारौं ।
समुझि पतित- पावन तुम्हार जस, ये खोटे दिन गारौं ॥
बेगि दिखाउ कमल पद नृप शिशु, न तु यह जीवन डारौं ।
"गिरिधर" प्रभु अवलोकि नयन भरि, तुम पर तन मन वारौं ॥ ६२ ॥

## (६३)

राघवजू नाहिं अपर बिश्वास ।
तव दरसन की अवधि लागि तनु अछत प्रान विश्वास ॥
स्वर्ग और अपवर्ग वर्ग छहुँ खाये कुमति कुपास ।
भव बासना दसत अहि भामिनि नाहिं करम की आश ॥
तव मन्दिर हठि घेरि रहे रिपु दारून बिरचि मवास ।
जनम जनम तें इन्द्रिन्ह कीन्हे आपन मोहि खवास ॥
थक्यो देह अरू गहयो गेह धन परम अकिंचन दास ।
हहरि हारि आयो तव शरनहि अब जनि करहु निराश ॥
कहँ लगि करउँ निहोर स्वामि तें हे मैथिली निवास ।

दीजै बोलि अधम "गिरिधर" कहँ सदन द्वार पर बास ॥ ६३ ॥

(६४)

राघव कब मुख कमल दिखैहौ ॥
कब करिहौ मेरो जनम सुफल प्रभु, उर अन्तर कब ऐहौ ।
कब इन नयन चकोरन्ह शिशु विधु, रूप पियूष पियै हौ ॥
कब दिखराइ नील नीरद तनु, बिरह की आग बुझैहौ ।
तोतरे बचन सुनाइ तात कब, जिय कीं जरनि जुड़ैहौ ॥
गोद बैठि सहुलास लाल कब, मम कर मोदक खैहौ ।
कब रघुनाथ हेरि मम दृग ढ़िग, मोहि सनाथ बनैहौ ॥
ठुमुकि ठुमुकि कल किलकि घुटुरूअन, उर आँगन कब धैहौ ।
धूलि विधूसर मृदुल गात छबि, छटा कबहि सरसैहौ ॥
कब मरू भूमि सरिस मम मन महँ कृपा बारि बरसैहौ ।
"रामभद्र" पाँवर "गिरिधर" कहँ, कब लगियों तरसैहौ ॥ ६४ ॥

(६५)

राघव तनिक मोहि हँसि हेरो ।
एक निमिष महँ बिगरी बने मेरी, सुजस दुहूँ दिसि तेरो ॥
प्रबल काल कलिकाल दुरित दुःख, विपत्ति दवानल घेरो ॥
कृपा सुधा ते बरषि बुझावहु, करहुँ निहोरो तेरो ॥
जीवन धन्य जनमहु सदगुन, होइहि सुकृत बड़ेरो ।
जनम जनम की भूख मिटे मेरी, होहुँ सदा तव चेरो ॥
तू दयाल दशरथ को नन्दन, हौं अनाथ व्है टेरो ।
बूड़त सिन्धु अन्ध "गिरिधर" यह देहु बाहु को बेरो ॥ ६५ ॥

(६६)

राघव ! केहि बिधि तुम्हहि रिझाऊँ ।
सो सद्गुन एकहुँ न मोहि पहँ, जाते तुम्ह कहँ भाऊँ ॥
विषय बारि निधि, मीन मन्द मन, सदा चलत मग बाऊँ ।
सुमिरौं सदा मलिन मनसिज कहँ, तोहि सुमिरत अलसाऊँ ॥
ज्ञान बिराग भगति बल नहि, प्रभु, हहरि हहरि डरपाऊँ ।
पाप पंक पंकिल निज. आनन, केहि विधि तुम्हहिं देखाऊँ ॥
निज अघ ओघ अमित पर्वत सम, समुझि मनहिं सकुचाऊँ ।
बहुरि पतित पावन तुम्हार जस, सुमिरत कछुक जुड़ाऊँ ॥

निज करतूति बिचारि कृपानिधि, सिर धुनि धुनि पछिताऊँ ।
राखहु शरण अंध "गिरिधर" कहँ, पद सरोज बलि जाऊँ ॥ ६६ ॥

(६७)

राघव ! तुम्हहिं देखि जौं पावूँ ।
तो जग के नाते सनेह सब, तृन सम तुरत बहावूँ ॥
नील पयोद बरन श्यामल तनु, उर अन्तर नित ध्यावूँ ।
कुण्डल कलित कपोल चिबुक सुख, अयन नयन मन लावूँ ॥
मधुर मधुर मुसुकान बदन शशि, दृग चकोरहि पियावूं ।
रज भूषण खरदूषण दूषण, निरखि निरखि सुख पावूँ ॥
पेखि स्वार्थमय भव जल निधि यह, जी महँ अधिक इरावूं ।
कीजै कृपा पतित "गिरिधर" पर, बार बार बलि जावूं ॥ ६७ ॥

(६८)

राघव ! मोहि संग किन लीजै ।
छीजै विषम बियोग जनित दुःख, मोहि कृतारथ कीजै ॥
छनिक जियहुँ नहिं तब दरसन बिनु, सोचो कहँ पतीजै ।
सेवा करहुँ स्वभाव प्रेम जुत, भाव सुधा रस पीजै ॥
पल पल तब अवलोकि बदन विधु, सुख जीवन जग जीजे ।
अधम अनाथ पतित "गिरिधर" कहँ, बेगि दरस प्रभु दीजे ॥ ६८ ॥

(६९)

राघव हित नैना तरसे रे ॥
छन छन नव अनुराग ललन के, निशि दिन लोचन बरसे रे ॥
करि करि सुरति मधुर मूरति की, नित नव मानव सरसे रे ॥
भोजन शयन कछू नहीं भावै, बिरह अगिनि हिय हुलसे रे ॥
"गिरिधर" कब अवलोकि नयन भरि, तव मुख पंकज हरसे रे ॥ ६९ ॥

(७०)

राघव दीन दयाल रे -------------- सुधि लेना हमारी ।
राघव परम कृपालरे -------------- सुधि लेना हमारी ॥
यह कलिकाल कठिन दुःख दायक ।
एक भरोसो तव रघुनायक ।
रखियो सतत संभाल रे ---------------- सुधि लेना हमारी ॥
तव संतत मुख पंकज देखूँ ।

गिरि सम दुःख रज करि मैं लेखूँ ।
कौशल्या के लाल रे ------------------ सुधि लेना हमारी ॥
हे सर्वज्ञ चराचर नायक
दीन बंधु सुखप्रद रघुनायक ।
मुनि मन मञ्जु मराल रे ----------- सुधि लेना हमारी ॥
मो कहँ और भरोसो नाहीं ।
बिरति न ज्ञान भगति मन माँहीं ।
करिये मोहि निहाल रे ----------- सुधि लेना हमारी ॥
रघुवर बेगि कृपा अब कीजै ।
"गिरिधर" कहँ निज दर्शन दीजै ।
दशरथ नृप के लाल रे ----------- सुधि लेना हमारी ॥ ७० ॥

(७१)

राघव दानि शिरोमणि एक ।
तुम उदार सुरतरू जग जाचक इच्छित लहत अनेक ॥
तुम दरिद्र दावानल नीरद वेद पुराननि गाये ।
मोर अभाग तहहुँ अति दारून अब लौं नीर न पाये ॥
मुनि तिय गति, शबरी रति, कपिपति राज, लह्यों तुम पाहीं ।
केहि कारन हौं दीन कृपा कर कौड़िहु पावत नाहीं ॥
ज्ञान बिराग भगति साधन नहिं विधिहुँ भाल गति छेकी ।
जनम जनम ते भटकि रहयों प्रभु नाथ कमल पद टेकी ॥
राजकुमार कहहु काहे नहि सुरतरू तरै सुपास ।
"रामभद्रदास" हुँ अब जान्यो भवन कुबेर उपास ॥ ७१ ॥

(७२)

राघव ! अब जनि करहु निराश ।
नतरू मीन जल हीन विकल तन चाहत तजत उदास ॥
नेंकहिं निरखि कराल व्याल प्रभु, करन चहत अब ग्रास ।
विपुल शोक संकुल नकुलहि अहि देत दिवस निशि त्रास ॥
कंठीरवी कण्ठ पर गरजत, दर्पित कुंजर पाश ।
गरूड पुत्र कहँ चहत बाँधिबो, शिखी प्रबल निज फाँस ॥
अब केहि हेतु विलम्ब लगावहु, आवहु रमा निवास ।
विषम बिपति बारिधि महँ "गिरिधर" जियत दरश की आश ॥ ७२ ॥

## (७३)

राघव ! कबहि मोहि अपनैहो ।
जनम जनम ते दर दर भटकत, कब थिर मोहि बनैइहौ ॥
हौं निरगुन निलज्ञ पाँवर अति कब गुन गनहि गनैहौ ।
निरखि दोष मम अगणित रघुपति शतयुग पार न पैहौं ॥
कब मुकुन्द शारद शशांक मुख नयनन मुदित दिखैहौ ।
तारे हौ तबहि पतित "गिरिधर" कहँ जब सुभाव उर लैहौ ॥ ७३ ॥

## (७४)

राघव ! तुम्हहि छोड़ केहि गाऊँ ।
को दूजो समरथ प्रभु तुम्ह बिनु, जेहि निज विपति सुनाऊँ ॥
अशरन शरन राम को तुम्ह बिनु, अभय दान जहँ पाऊँ ।
काको नाम भगत चिन्तामणि, जेहि जपि जरनि जुड़ाऊँ ॥
खग पितु मानि मातु करि सबरी, कौन देव अस पाऊँ ।
कौन अभय दायक कृपालु प्रभु, कलप वृक्ष ज्यों छाऊँ ॥
समुझि मेरू सम पाप आपनों, मन में अधिक डराऊँ ।
सुमरि पतित पावन कीरति तव, मन को धीर बँधाऊ ॥
अगम अगाध बारिनिधि देखत, मन में अति डरपाऊँ ।
राखहु शरन दास "गिरिधर" कहँ, पद सरोज बलि जाऊँ ॥ ७४ ॥

## (७५)

राघव ! तुम समान नहीं कोइ ।
को छबि सिन्धु अनाथ बन्धु जग तोहि पटतरिये जोइ ॥
तुम तजि केहि अघ मलिन नीच तिय शिला चरण ते तारी ।
तुम तजि कौन कोल भिल्लन कहँ कानन जाय उधारी ॥
तुम बिन कौन अधम खग की प्रभु निज कर क्रिया सँवारी ।
तुम बिन कौन पतित पावन भव मुकुति कीन्ह कहुँ नारी ॥
तुम बिन को तिय चोर रोर रन रावन कहँ गति दीन्ही ।
तुम बिन कौन सनाथ निषादहि मीत सुकण्ठहि कीन्ही ॥
सब प्रकार समरथ कृपालु तुम हौं निज मन ठहरायो ।
ताते तजि भरोस "गिरिधर" शिशु चरण शरण मैं आयो ॥ ७५ ॥

## (७६)

राघव तुम्हहि देखि जौ पाऊँ ।
ज्यों फणि मणि ज्यौं रंक कनक गृह, उर अन्तर हि छिपाऊँ ॥
नील तमाल बरन श्यामल तन निरखि निरखि हरषाऊँ ।
तव मुख चन्द्र चकोर नयन करि हरष हरष हुलसाऊँ ॥
गोद बिठाय चूमि मुख पंकज मोदक मधुर खवाऊँ ।
हरषि तुमहि पौढ़ाय पालने आनंद उमंग झुलाऊँ ॥
तव सनेह सुर सरित धार महँ नाता नेह बहाऊँ ॥
"गिरिधर" गाइ बाल लीला नित बानी सुफल बनाऊँ ॥ ७६ ॥

## (७७)

राघव सुनिये बिनय हमारी ।
आरति हरन हरहु जन आरति हौं बलि जाऊँ तुम्हारी ॥
गणिका ब्याध किरात अहल्या कीश कोल तुम तारी ।
काहे अब प्रभु निठुर भये अब आई मेरी बारी ॥
इक कलिकाल अधम दल बल जुत त्रास देत नित भारी ।
तेहि पर कोशलनाथ कृपानिधि तुमहूँ सुरत बिसारी ॥
आवहु बेगि उदार शिरोमणि "राम भद्र" असुरारी ।
"गिरिधर" द्वार ठाढ़ तव रिरकत आन्हर अधम भिखारी ॥ ७७ ॥

## (७८)

राघव विशद चरित मोहि भाये ।
बिरद गरीब नेवाज सुकोमल सरल सुभाव सुहाये ॥
जेहि जननी निज रंक रतन ज्यों अञ्चल ओट छिपाये ।
सोइ प्रमुदित कठोर कानन महँ बिनु पद त्राण सिधाये ॥
जो दशरथ के गोद मोद युत शिशु विनोद सरसाये ।
निज जन कुमुद मयंक अंक लै खगहि आँसु अन्हवाये ॥
जेहि गन्धर्व साम श्रुति कबहूँ गाइ रिझाई न पाये ।
सोइ प्रभु अरथ हीन भिल्लन के बचन सुनत मन लाये ॥
जाकी चरण रेणु सरिता में मुनि तिय दुरित बहाये ।
चित्रकूट मुनि गण पदरज सोइ धरत शीश ललचाये ॥
रामभद्र अगणित पतितन कहँ करूणाकरि अपनाये ।
अधम अनाथ दास "गिरिधर" कहँ केहि कारण बिसराये ॥ ७८ ॥

## (७९)

राघव ! क्यों बड़ी देर लगावत ।
छनिक दिखाइ बदन विधु शोभा क्यों मोहि तरसावत ॥
दीन मलीन मीन कहँ लालन क्यों जल बिनु तलफावत ।
क्यों भुअंग गत अंग रंग निज बिनु मणि अति ललचावत ॥
बिनु सुनाय कल बचन सुधा सम क्यों अब मोहि जिआवत ।
क्यों न कृपालु सुधाकर मुख छबि नयन न सपदि पियावत ॥
तेरी सौंह सत्य सुन मेरी हौं करि टेर बतावत ।
तव दर्शन हित प्राण पाँवरनि "गिरिधर" धीर धरावत ॥ ७९ ॥

## (८०)

राघव जियहु लाख बरीस ।
सतत गोद प्रमोद भरि हिय, लखहि अवध महीस ॥
सदा अरिकृत कूकर मन ते तुम्हहि राखहु ईस ।
हँसनि बोलनि चपल चितवनि निरखि तव जगदीस ॥
मुदित गुरूतिय उमगि निज हिय देत बिमल असीस ।
जुग पलक गत पूतरिन्ह ज्यों धरहु तुमहि गिरीस ॥
सपदि निज खर सर निकट ते रन दलहु दससीस ।
प्रणत जन सुर तरू लसहु नित, सदय हृदय अधीस ।
पेखि तव जस इन्दु "गिरिधर" उमग चित्त नदीस ॥ ८० ॥

## (८१)

राघव तेरे चरणों की मुझे धूल जो मिल जाये ।
मैं सच कहता उस क्षण मेरा भाग्य बदल जाये ॥
मैं जन्म का हूँ पापी तुम नाथ पतित पावन,
मत देर करो हे भगवन् हे मुनि जनमन भावन,
अपनालो मुझे कृपया मेरा जन्म सुधर जाये, ॥
किस भाँति करुँ साधन कुछ शक्ति नहीं तनमें,
मैं अकिंचन जन निर्धन दृढ़ भक्ति नहीं मन में,
लख दोष अमित अपने मेरा जी अति घबराये ॥
शबरी खग के सर्वस नृप दशरथ के बारे,
बानर के कनौडे तुम दिनकर कुल उजियारे,
करूणाकर की करूणा मुझे नित नित तरसाये ॥

जिस रज में अहल्या ने निज पातक को खोया,
जिस रज को कठौते में भर केवट ने धोया,
उस रज के लिये पल पल गिरिधर मन ललचाये ॥ ८१ ॥

## (८२)

राघव मम अभिलाष पुराओ ।
बाल मराल मोर जीवन लगि, गुरू- शिष नात निभाओ ॥
नित नव भाव उराओ उमग भरी उर अनुराग बढ़ाओ ।
कोटि सुधा सम बचन तोतरे "गुलुजी" कहके सुनाओ ॥
नाहिन और आस मन भीतर लालन मन पतियाओ ।
बारक बैठि गोदमहँ शिशुवर रामभद्र कछु खाओ ॥
तुम्हरी आन जियत तुम्हरेहि लगि अब न अधिक तरसाओ ।
निज गुरू जोग जानि "गिरिधर" को भव निधि पार लगाओ ॥ ८२ ॥

-----★-----

तुलसी पीठाधीश्वर जगत् गुरु श्री रामानंदाचार्य आचार्य श्री रामभद्रदास जी महाराज
प्रणीत

# श्री राघव गीत गुंजन
## संपूर्ण